सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 191, नई दिल्ली, गुरुवार 18 सितंबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता.

03 'स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार' अभियान का दिल्ली में शुभारंभ
06 महिला निदेशक और विश्व सिनेमा का पुनर्लेखन
08 अनुसूचित जनजाति आयोग ने कहा सूर्या हांसदा की हत्या हुई :दीपक प्रकाश

दिल्ली परिवहन विभाग का झोलझाला, ऑनलाइन आवेदन करो और फिर चक्कर काटो, माल रोड कार्यालय का बड़ा नाम

अभिषेक राजपूत

नई दिल्ली। आरटीओ (परिवहन विभाग) की ऑनलाइन सेवाओं में लंबित आवेदनों की समस्या आज भी बनी हुई है। करोड़ों लोग लर्निंग लाइसेंस, ड्राइविंग लाइसेंस, वाहन पंजीकरण और अन्य सुविधाओं के लिए ऑनलाइन आवेदन कर रहे हैं, लेकिन एक बड़ी संख्या में आवेदन अभी भी सिस्टम में पेंडिंग पड़ी हैं—इनमें से कई आवेदनों का निस्तारण महीनों तक नहीं हो पाता है।

लर्निंग लाइसेंस में लंबित आवेदनों की स्थिति : डिजिटल सेवा पोर्टल 'सारथी' और राज्य आरटीओ साइट्स पर लर्निंग लाइसेंस के लिए ऑनलाइन आवेदन की सुविधा उपलब्ध है। आवेदक फॉर्म भरकर, दस्तावेज अपलोड करके और शुल्क ऑनलाइन जमा कर सीधे स्लॉट बुक कर सकते हैं। लेकिन इसके बाद डॉक्युमेंट वेरिफिकेशन, बायोमेट्रिक्स या ऑनलाइन टेस्ट के प्रोसेस में अक्सर देरी होती है, जिससे आवेदन लंबित रह जाते हैं।

आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, देश भर में लाखों ऑनलाइन आवेदन मंजूरी का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन अभी तक किसी हालिया केंद्रीय या राज्यवार रिपोर्ट में पेंडिंग आवेदनों की नवीनतम सटीक संख्या सार्वजनिक नहीं की गई है। सिर्फ दिल्ली आरटीओ के उदाहरण से देखें तो प्रत्येक जिले में 'कंप्लीट योर पेंडिंग एप्लीकेशन' जैसे विकल्प व्यवस्था की मजबूरी को दर्शाते हैं।

बिना आपत्ति के निस्तारित होने वाले ऑनलाइन आवेदन

ऑनलाइन रास्ते से कई लर्निंग और परमानेंट लाइसेंस एवं अन्य ट्रांसपोर्ट सेवाओं के आवेदन पूरी तरह से बिना किसी आपत्ति (No Objection/Remark) के भी निस्तारित किए जा रहे हैं। लेकिन बड़ी संख्या में आवेदन छानबीन, दस्तावेज में त्रुटि, स्लॉट न मिलने, या आवेदक की ओर से प्रक्रिया में ढिलाई की वजह से 'स्क्रूटनी' में ही रह जाते हैं। कई राज्यों में 50–70% तक ऑनलाइन आवेदन बिना आपत्ति के पास हो जाते हैं, लेकिन यह आंकड़ा जगह-जगह अलग है और हर जिले या राज्य का ट्रैकिंग डैशबोर्ड अलग-अलग अपडेट होता है।

जनता सवाल कर रही है

परिवहन विभाग को सार्वजनिक रूप से बताना चाहिए कि:

कुल कितने ऑनलाइन आवेदन अभी लंबित हैं—खासतौर पर लर्निंग लाइसेंस को लेकर,

कितने आवेदनों की वैधता अवधि खत्म हो रही है या वे सिस्टम में अटके हैं,

प्रत्येक जिले/राज्य में कितने आवेदन बिना आपत्ति के स्वीकृत हुए हैं,

यह निर्भरता मैन्युअल वेरिफिकेशन, स्टाफ की कमी या तकनीकी धीमापन जैसी किस समस्या पर है?

निष्कर्ष ऑनलाइन सेवाओं ने आरटीओ के कई काम सुविधाजनक किए हैं, परंतु लंबित आवेदनों की बढ़ती संख्या और पारदर्शी आंकड़ों की कमी से आवेदकों को अभी भी जमीनी समस्याएं गिरफ्त में ले रही हैं। पारदर्शिता, त्वरित निस्तारण और सार्वजनिक डेटा डिस्क्लोजर ही इसका संपूर्ण समाधान है—पर नई व्यवस्था भी जवाबदेही की मांग पर खरी उतरे, यह देखना और सवाल करना जरूरी है।

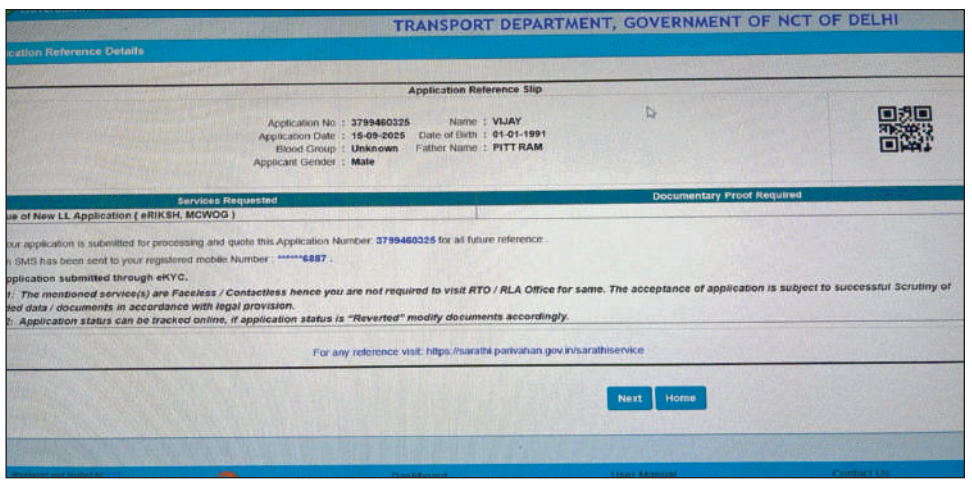

भव्य रूप से मनाई गई विश्वकर्मा जयंती, ट्रांसपोर्ट नगर बना उत्सव स्थल

परिवहन विशेष न्यूज

बिलासपुर। ट्रांसपोर्ट नगर स्थित जीत मोटर गैरेज बड़ी पार्किंग में उसलापुर गुडस शेड वेलफेयर ट्रक ओनर एसोसिएशन के तत्वावधान में भव्य रूप से विश्वकर्मा जयंती का आयोजन किया गया। यह पर्व खास तौर पर ट्रक मालिक, वाहन चालक और परिवहन क्षेत्र से जुड़े अन्य सदस्यों के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस अवसर पर सभी एकत्रित हुए और भगवान विश्वकर्मा की विधिपूर्वक पूजा-अर्चना कर अपने वाहन और कार्य क्षेत्र की सुरक्षा तथा समृद्धि की कामना की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन और आरती से हुआ। इसके पश्चात प्रमुख अतिथियों ने भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति के समक्ष पूजा अर्चना कर विशेष मंत्रोच्चारण किया। इस दौरान सभी उपस्थित सदस्य श्रद्धापूर्वक पूजा में भाग लिया। भगवान विश्वकर्मा को वाहन उद्योग का संरक्षक माना जाता है, इसलिए इस दिन विशेष रूप से सभी ने अपने वाहन को सजाया और उनका पूजन कर उनकी दीर्घायु व सुरक्षित संचालन की प्रार्थना की।

पूजा-अर्चना के उपरांत भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें सभी उपस्थित लोगों को प्रसाद और भोजन वितरित किया गया। यह आयोजन न केवल धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण था, बल्कि यह एकता, भाईचारे और सहयोग की भावना को भी मजबूत करने का माध्यम बना। कार्यक्रम के दौरान ईश्वर सिंह चंदेल, जीत सिंह, राजू नाज़, महावीर सिंह, बलजीत डोमिर, दिलदार सिंह, धीरज यादव, डॉक्टर राजीव अवस्थी, अंकुश तिवारी, श्रेयस अवस्थी, संतोषी धुरी, निर्मला साहू, शंकर यादव, प्रमोद मिश्रा, सुरुचि गोस्वामी, अमन सिंह, मुकेश सूर्यवंशी, जयप्रकाश भोई, मानसी गुप्ता और हिमांशु पाण्डेय समेत कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

इस आयोजन ने कार्य क्षेत्र में सुख-समृद्धि के साथ-साथ सामूहिक भावना को भी मजबूत किया। सभी ने मिलकर एक-दूसरे के कल्याण और सुरक्षित भविष्य के लिए प्रार्थना की। यह पर्व हर वर्ष ऐसे उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है ताकि सभी वाहन चालक व मालिक एकजुट होकर अपने क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव ला सकें।

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा–डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में माता रानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
● दशहरे के दूसरे दिन
● दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
● स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड
स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के सदस्य बनने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म पर क्लिक करें और भरकर जमा करे, पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट (पंजीकृत अंडर सेक्शन 60), नीति आयोग भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त, एमएसएमई में पंजीकृत
https://forms.gle/VEThcFgMcknGFc1u9

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND SOCIAL WELFARE ALLIED TRUST REGT.
MEMBERSHIP FORM FOR TOLWA TRUST
transportvisheshcontent@gmail.com Switch account
The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form
* Indicates required question
How you got aware about TOLWA trust *
Social Media
News Paper
Personal connection
Youtube
Social Function/ RTO/friends/family

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से

गरबा महोत्सव में विशेष अपील
हमारी रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है–
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें:
● पुराने कपड़े
● पुराने कंबल
● पुराने जूते-चप्पल
● बच्चों के लिए बैग
● किताबें
आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है
स्थान : रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
इंदु राजपूत – 9210210071,
अभिषेक राजपूत 83928 02013,
पिंकी कुंडू 7053533169

स्यमंतक मणि की कथा (गणेश चतुर्थी पर चन्द्र-दर्शन करने पर अभिशापित हुए मनुष्य को दोष-मुक्त करने वाली कथा

श्रीमद्‌भागवत पुराण के दसवें स्कंध के अध्याय 56 और 57 में श्री शुकदेव जी महाराज कहते हैं," परीक्षित ! सत्राजित ने श्री कृष्ण पर मणि चोरी का झूठा कलंक लगाया था और फिर अपने उस अपराध का मार्जन करने के लिए उसने स्वयं स्यमंतक मणि सहित अपनी कन्या सत्यभामा भगवान श्री कृष्ण को सौंप दी।"

राजा परीक्षित ने पूछा," भगवन् ! सत्राजित ने भगवान श्री कृष्ण का क्या अपराध किया था ? उसे स्यमंतक मणि कहाँ से मिली ? और उसने अपनी कन्या श्री कृष्ण को क्यों सौंप दी ?"

श्री शुकदेव जी कहते है- परीक्षित ! सत्राजित ने श्रीकृष्ण को झूठा कलंक लगाया था। फिर उस अपराध का मार्जन करने के लिए उसने स्वयं स्यमन्तक मणि सहित अपनी कन्या सत्याभामा भगवान श्रीकृष्ण को सौंप दी।

राजा परीक्षित ने पूछा: भगवन् ! सत्राजित ने भगवान श्रीकृष्ण का क्या अपराध किया था ? उसे स्यमंतक मणि कहाँ से मिली ? और उसने अपनी कन्या उन्हें क्यों दी ?

श्रीशुकदेव जी ने कहा: परीक्षित ! सत्राजित भगवान सूर्य का बहुत बड़ा भक्त था। वे उसकी भक्ती से प्रसन्न होकर उसके बहुत बड़े मित्र बन गये थे। सूर्य भगवान ने ही प्रसन्न होकर बड़े प्रेम से उसे स्यमंतक मणि दी थी। सत्राजित उस मणि को गले में धारण कर ऐसा चमकने लगा, मानो स्वयं सूर्य ही हो। परीक्षित !जब सत्राजित द्वारका आया, तब अत्यन्त तेजस्विता के कारण लोग उसे पहचान न सके। दूर से ही उसे देखकर लोगों की आँखें उसके तेज से चौंधिया गईं। लोगों ने समझा कि कदाचित स्वयं भगवान सूर्य आ रहे हैं। उन लोगों ने भगवान के पास आकर उन्हें इस बात की सूचना दी। उस समय भगवान चौसर खेल रहे थे।

लोगों ने कहा: 'शंख-चक्र-गदाधारी नारायण! कमलनयन दामोदर! यदुवंशशिरोमणि गोविन्द! आपको नमस्कार है। जगदीश्वर देखिये, अपनी चमकीली किरणों से लोगों के नेत्रों को चौंधियाते हुए प्रचण्डरश्मि भगवान सूर्य आपका दर्शन करने आ रहे हैं। प्रभो ! सभी श्रेष्ठ देवता त्रिलोकी में आपकी प्राप्ति का मार्ग ढूँढते रहते हैं, किन्तु उसे पाते नहीं। आज आपको यदुवंश में छिपा हुआ जानकर स्वयं सूर्यनारायण आपका दर्शन करने आ रहे हैं।

श्रीशुकदेव जी कहते हैं- परीक्षित! अनजान पुरूषों की यह बात सुनकर कमलनयन भगवान श्रीकृष्ण हँसने लगे। उन्होंने कहा- 'अरे, ये सूर्यदेव नहीं है। यह तो सत्राजित है, जो मणि के कारण इतना चमक रहा है। इसके बाद सत्राजित अपने समृद्ध घर में चला आया। घर पर उसके शुभागमन के उपलक्ष्य में मंगल-उत्सव मनाया जा रहा था। उसने ब्राह्मणों द्वारा स्यमंतक मणि को एक देवमन्दिर में स्थापित करा दिया। परीक्षित ! वह मणि प्रतिदिन आठ भार सोना दिया करती थी। और जहाँ वह पूजित होकर रहती थी, वहाँ दुर्भिक्ष, महामारी, ग्रहपीड़ा, सर्पभय, मानसिक और शारीरिक व्यथा तथा मायावियों का उपद्रव आदि कोई भी अशुभ नहीं होता था। एक बार भगवान श्रीकृष्ण ने प्रसंगवश कहा-'सत्राजित ! तुम अपनी मणि राजा उग्रसेन को दे दो।'परन्तु वह इतना अर्थलोलुप-लोभी था कि भगवान की आज्ञा का उल्लंघन होगा, इसका कुछ भी विचार न करके उसे अस्वीकार कर दिया। एक दिन सत्राजित के भाई प्रसेन ने उस परम प्रकाशमयी मणि को अपने गले में धारण कर लिया और फिर वह घोड़े पर सवार होकर शिकार खेलने वन में चला गया। वहाँ एक सिंह ने घोड़े सहित प्रसेन को मार डाला और उस मणि को छीन लिया। वह अभी पर्वत की गुफा में प्रवेश कर ही रहा था कि मणि के लिए ऋक्षराज जाम्बवान् ने उसे मार डाला। उन्होंने वह मणि अपनी गुफा में ले जाकर बच्चे को खेलने के लिए दे दी। अपने भाई प्रसेन के न लौटने से उसके भाई सत्राजित को बड़ा दु:ख हुआ। वह कहने लगा, 'बहुत सम्भव है श्रीकृष्ण ने ही मेरे भाई को मार डाला हो, क्योंकि वह मणि गले में डालकर वन में गया था।' सत्राजित की यह बात सुनकर लोग आपस में काना-फूँसी करने लगे। जब भगवान श्रीकृष्ण ने सुना कि यह कलंक का टीका मेरे सिर लगाया गया है, तब वे उसे धो-बहाने के उद्देश्य से नगर के कुछ सभ्य पुरूषों को साथ लेकर प्रसेन को ढूँढने के लिए वन में गये। वहाँ खोजते-खोजते लोगों ने देखा कि घोर जंगल में सिंह ने प्रसेन और उसके घोड़े को मार डाला है। जब वे लोग सिंह के पैरों का चिन्ह देखते हुए आगे बढ़े, तब उन लोगों ने यह भी देखा कि पर्वत पर रीछ ने सिंह को भी मार डाला है।

भगवान श्रीकृष्ण ने सब लोगों को बाहर ही बिठा दिया और अकेले ही घोर अन्धकार से भरी हुई ऋक्षराज की भयंकर गुफा में प्रवेश किया। भगवान ने वहाँ जाकर देखा कि श्रेष्ठ मणि स्यमन्तक को बच्चों का खिलौना बना दिया गया है। वे उसे हर लेने की इच्छा से बच्चे के पास जा खड़े हुए। उस गुफा में एक अपरिचित मनुष्य को देखकर बच्चे की धाय भयभीत की भाँति चिल्ला उठी। उसकी चिल्लाहट सुनकर परम बली ऋक्षराज जाम्बवान क्रोधित होकर वहाँ दौड़ आये। परीक्षित !जाम्बवान उस समय कुपित हो रहे थे। उन्हें भगवान की महिमा, उनके प्रभाव का पता न चला। उन्होंने एक साधारण मनुष्य समझ लिया और वे अपने स्वामी भगवान श्रीकृष्ण से युद्ध करने लगे। जिस प्रकार मांस के लिये दो बाज आपस में लड़ते हैं, वैसे ही विजयाभिलाषी भगवान श्रीकृष्ण और जाम्बवान आपस में घमासान युद्ध करने लगे। पहले तो उन्होंने अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार किया, फिर शिलाओं का तत्पश्चात वे वृक्ष उखाड़कर एक दूसरे पर फेंकने लगे। अन्त में उनमें बाहुयुद्ध होने लगा। परीक्षित ! वज्र-प्रहार के समान कठोर घूँसों की चोट से जाम्बवान के शरीर की एक एक गाँठ टूट गयी। उत्साह जाता रहा। शरीर पसीने से लथपथ हो गया। तब उन्होंने अत्यंत विस्मित-चकित होकर भगवान श्रीकृष्ण से कहा- 'प्रभो ! मैं जान गया। आप ही समस्त प्राणियों के स्वामी, रक्षक, पुराणपुरुष भगवान विष्णु हैं। आप ही सबके प्राण, इन्द्रियबल, मनोबल और शरीर बल हैं। आप विश्व के रचयिता ब्रह्मा आदि को भी बनाने वाले हैं। बनाये हुए पदार्थों में भी सत्तारूप से आप ही विराजमान हैं। काल के कितने भी अवयव है, उनके नियामक परम काल आप ही हैं और शरीर भेद से भिन्न-भिन्न प्रतीयमान अन्तरात्माओं के परम आत्मा भी आप ही हैं। प्रभो ! मुझे स्मरण है, आपने अपने नेत्रों में तनिक सा क्रोध का भाव लेकर तिरछी दृष्टि से समुद्र की ओर देखा था। उस समय समुद्र के अंदर रहने वाल बड़े-बड़े नाक (घड़ियाल) और मगरमच्छ क्षुब्ध हो गये थे और समुद्र ने आपको मार्ग दे दिया था। तब आपने उस पर सेतु बाँधकर सुन्दर यश की स्थापना की तथा लंका का विध्वंस किया। आपके बाणों से कट-कटकर राक्षसों के सिर पृथ्वी पर लोट रहे थे। (अवश्य ही आप मेरे वे ही राम जी श्रीकृष्ण के रूप में आये हैं।) परीक्षित ! जब ऋक्षराज जाम्बवान ने भगवान को पहचान लिया, तब कमलनयन श्रीकृष्ण ने अपने परम कल्याणकारी शीतल करकमल को उनके शरीर पर फेर दिया और फिर अहैतुकी कृपा से भरकर प्रेम गम्भीर वाणी से अपने भक्त जाम्बवान जी से कहा- ऋक्षराज ! हम मणि के लिए ही तुम्हारी इस गुफा में आये हैं। इस मणि के द्वारा मैं अपने पर लगे झूठे कलंक को मिटाना चाहता हूँ। भगवान के ऐसा कहने पर जाम्बवान बड़े आनन्द से उनकी पूजा करने के लिए अपनी कन्या कुमारी जाम्बवती को मणि के साथ उनके चरणों में समर्पित कर दिया।

भगवान श्रीकृष्ण जिन लोगों को गुफा के बाहर छोड़ गये थे, उन्होंने बारह दिन तक उनकी प्रतीक्षा की। परन्तु जब उन्होंने देखा कि अब तक वे गुफा से नहीं निकले, तब वे अत्यंत दु:खी होकर द्वारका लौट गये। वहाँ जब माता देवकी, रुक्मणि, वसुदेव जी तथा अन्य सम्बन्धियों और कुटुम्बियों को यह मालूम हुआ कि श्रीकृष्ण गुफा से नहीं निकले, तब उन्हें बड़ा शोक हुआ। सभी द्वारकावासी अत्यंत दु:खित होकर सत्राजित को भला बुरा कहने लगे और भगवान श्रीकृष्ण की प्राप्ति के लिए महामाया दुर्गादेवी की शरण गये, उनकी उपासना करने लगे। उनकी उपासना से दुर्गादेवी प्रसन्न हुई और उन्होंने आशीर्वाद दिया। उसी समय उनके बीच में मणि और अपनी नववधू जाम्बवती के साथ सफलमनोरथ होकर श्रीकृष्ण होकर श्रीकृष्ण सबको प्रसन्न करते हुए प्रकट हो गये। सभी द्वारकावासी भगवान श्रीकृष्ण को पत्नी के साथ और गले में मणि धारण किये हुए देखकर परमानन्द में मग्न हो गये, मानो कोई मरकर लौट आया हो।

तदनन्तर भगवान ने सत्राजित को राजसभा में महाराज उग्रसेन के पास बुलवाया और जिस प्रकार मणि प्राप्त हुई थी, वह सब कथा सुनाकर उन्होंने वह मणि सत्राजित को सौंप दी।

सत्राजित अत्यंत लज्जित हो गया। मणि तो उसने ले ली, परन्तु उसका मुँह नीचे की ओर लटक गया। अपने अपराध पर उसे बड़ा पश्चाताप हो रहा था, किसी प्रकार वह अपने घर पहुँचा। उसके मन की आँखों के सामने निरन्तर अपना अपराध नाचता रहता। बलवान के साथ विरोध करने के कारण वह भयभीत भी हो गया था। अब वह यही सोचता रहता कि "मैं अपने अपराध का मार्जन कैसे करूँ ? मुझ पर भगवान श्रीकृष्ण कैसे प्रसन्न हों ? मैं ऐसा कौन सा काम करूँ, जिससे मेरा कल्याण हो और लोग मुझे कोसे नहीं। सचमुच मैं अदूरदर्शी, क्षुद्र हूँ। धन के लोभ से मैं बड़ी मूढ़ता का काम कर बैठा। अब मैं रमणियों में रत्न के समान अपनी कन्या सत्याभामा और वह स्यमंतक मणि दोनों ही श्रीकृष्ण को दे दूँ। यह उपाय बहुत अच्छा है। इसी से मेरे अपराध का मार्जन हो सकता है, और कोई उपाय नहीं है। सत्राजित ने अपनी विवेक बुद्धि से ऐसा निश्चय करके स्वयं ही इसके लिए उद्योग किया और अपनी कन्या तथा स्यमन्तक मणि दोनों ही ले जाकर श्रीकृष्ण को अर्पण कर दीं। सत्यभामा शील स्वभाव, सुन्दरता, उदारता आदि सदगुणों से सम्पन्न थी। बहुत से लोग चाहते थे कि सत्यभामा हमें मिले और उन लोगों ने उन्हें माँगा भी था। परन्तु अब भगवान श्रीकृष्ण ने विधिपूर्वक उनका पाणिग्रहण किया। परीक्षित !भगवान श्रीकृष्ण ने सत्राजित से कहा- 'हम स्यमन्तक मणि न लेंगे। आप सूर्य भगवान के भक्त हैं,

इसलिए वह आपके ही पास रहे। हम तो केवल उसके फल के अर्थात उससे निकले हुए सोने के अधिकारी हैं। वही आप हमें दे दिया करें।

परीक्षित ! यद्यपि भगवान श्रीकृष्ण को इस बात का पता था कि लाक्षागृह की आग से पाण्डवों का बाल भी बाँका न हुआ है, तथापि जब उन्होंने सुना कि कुन्ती और पाण्डव जल मरे, तब उस समय का कुल परम्परोचित व्यवहार करने के लिए वे बलराम जी के साथ हस्तिनापुर गये। वहाँ जाकर भीष्मपितामह, कृपाचार्य, विदुर, गान्धारी और द्रोणाचार्य से मिलकर उनके साथ समवेदना-सहानुभूति प्रकट की और उन लोगों से कहने लगे- 'हाय-हाय ! यह तो बड़े दु:ख की बात हुई।'

भगवान श्रीकृष्ण के हस्तिनापुर चले जाने से द्वारका में अक्रूर और कृतवर्मा को अवसर मिल गया। उन लोगों ने शतधन्वा से आकर कहा – 'तुम सत्राजित से मणि क्यों नहीं छीन लेते ? सत्राजित ने अपनी श्रेष्ठ कन्या का विवाह हमसे करने का वचन दिया था और अब उसने हमलोगों का तिरस्कार करके उसे श्रीकृष्ण के साथ ब्याह दिया है। अब सत्राजित भी अपने भाई प्रसेन की तरह क्यों न यमपुरी में जाय ?' शतधन्वा पापी था और अब तो उसकी मृत्यु भी उसके सिर पर नाच रही थी। अक्रूर और कृतवर्मा इस प्रकार बहकाने पर शतधन्वा उनकी बातों में आ गया और उस महादुष्ट ने लोभवश सोये हुए सत्राजित को मार डाला। इस समय स्त्रियाँ अनाथ के समान रोने चिल्लाने लगीं, परन्तु शतधन्वा ने उनकी ओर तनिक भी ध्यान न दिया, जैसे कसाई पशुओं की हत्या कर डालता है, वैसे ही वह सत्राजित को मारकर और मणि लेकर वहाँ से चम्पत हो गया।

सत्यभामा जी को यह देखकर कि मेरे पिता मार डाले गये हैं, बड़ा शोक हुआ और वे हाय पिता जी ! हाय पिता जी ! मैं मारी गयी – इस प्रकार पुकार पुकार कर विलाप करने लगीं। बीच बीच में बेहोश हो जातीं और होश में आने पर फिर विलाप करने लगतीं। इसके बाद उन्होंने अपने पिता के शव को तेल के कड़ाहे में रखवा दिया और आप हस्तिनापुर गयीं। उन्होंने बड़े दु:ख से भगवान श्रीकृष्ण को अपने पिता की हत्या का वृतान्त सुनाया – यद्यपि इन बातों को भगवान श्रीकृष्ण पहले से ही जानते थे। परीक्षित ! सर्वशक्तिमान भगवान श्रीकृष्ण और बलराम जी ने सब सुनकर मनुष्यों की सी लीला करते हुए अपनी आँखों में आँसू भर लिये और विलाप करने लगे कि 'अहो ! हम लोगों पर तो बहुत बड़ी विपती आ पड़ी !' इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण सत्यभामाजी और बलरामजी के साथ हस्तिनापुर से द्वारका लौट आये और शतधन्वा मारने तथा उससे मणि छीनने का उद्योग करने लगे।

जब शतधन्वा को यह मालूम हुआ कि भगवान श्रीकृष्ण मुझे मारने का उद्योग कर रहे हैं, तब वह बहुत डर गया और अपने प्राण बचाने के लिए उसने कृतवर्मा से सहायता माँगी। तब कृतवर्मा ने कहा - 'भगवान श्रीकृष्ण और बलराम जी सर्वशक्तिमान ईश्वर हैं। मैं उनका सामना नहीं कर सकता। भला, ऐसा कौन है, जो उनके साथ वैर बाँधकर इस लोक और परलोक में सकुशल रह सके ? तुम जानते हो कि कंस उन्हीं से द्वेष करने के कारण राज्यलक्ष्मी को खो बैठा और अपने अनुयायियों के साथ मारा गया। जरासन्ध जैसे शूरवीर को भी उनके सामने सत्रह बार मैदान में हारकर बिना रथ के ही अपनी राजधानी लौट जाना पड़ा था।' जब कृतवर्मा ने उसे इस प्रकार टका सा जवाब दे दिया, तब शतधन्वा ने सहायता के लिए अक्रूर जी से प्रार्थना की। उन्होंने कहा - 'भाई ! ऐसा कौन है, जो सर्वशक्तिमान भगवान का बल पौरुष जानकर भी उनसे वैर विरोध ठाने। जो भगवान खेल-खेल में ही इस विश्व की रचना, रक्षा और संहार करते हैं तथा जो कब क्या करना चाहते है – इस बात को माया से मोहित ब्रह्मा आदि विश्व विधाता भी नहीं समझ पाते, जिन्होंने सात वर्ष की अवस्था में – जब वे निरे बालक थे, एक हाथ से ही गिरिराज गोवर्द्धन को उखाड़ लिया और जैसे नन्हें-नन्हें बच्चे बरसाती छत्ते को उखाड़ हाथ में रख लेते हैं, वैसे ही खेल-खेल में सात दिनों तक उसे उठाय रखा, मैं तो उन भगवान श्रीकृष्ण को नमस्कार करता हूँ। उनके कर्म अद्भुत हैं। वे अनन्त अनादि, एकरस और आत्मस्वरुप हैं। मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ। जब इस प्रकार अक्रूर जी ने भी उसे कोरा जवाब दे दिया, तब शतधन्वा ने स्यमन्तक मणि उन्हीं के पास रख दी और आप चार सौ कोस लगातार चलने वाले घोड़े पर सवार होकर वहाँ से बड़ी फुर्ती से भागा।

परीक्षित! भगवान श्रीकृष्ण और बलराम दोनों भाई अपने उस रथ पर सवार हुए, जिस पर गरुड़चिन्ह से चिन्हित ध्वजा फहरा रही थी और बड़े वेगवाले घोड़े जुते हुए थे। अब उन्होंने अपने श्वसुर सत्राजित को मारने वाले शतधन्वा का पीछा किया। मिथिलापुरी के निकट एक उपवन में शतधन्वा का घोड़ा गिर पड़ा, अब वह उसे छोड़कर पैदल ही भागा। वह अत्यन्त भयभीत हो गया था। भगवान श्रीकृष्ण भी क्रोध करके उसके पीछे दौड़े। शतधन्वा पैदल ही भाग रहा था, इसलिए भगवान ने पैदल ही दौड़कर अपने तीक्ष्ण धार वाले चक्र से उसका सिर उतार लिया और उसके वस्त्रों में स्यमंतक मणि को ढूँढा।

परन्तु जब मणि नहीं मिली तब

भगवान श्रीकृष्ण ने बड़े भाई बलराम जी के पास आकर कहा - 'हमने शतधन्वा को व्यर्थ ही मारा। क्योंकि उसके पास स्यमंतक मणि तो है ही नहीं। बलराम जी ने कहा - 'इसमे सन्देह नहीं कि शतधन्वा ने स्यमंतक मणि को किसी न किसी के पास रख दिया है। अब तुम द्वारका जाओ और उसका पता लगाओ। मैं विदेहराज से मिलना चाहता हूँ, क्योंकि वे मेरे बहुत ही प्रिय मित्र हैं।'परीक्षित ! यह कहकर यदुवंश शिरोमणि बलराम जी मिथिला नगरी में चले गये। जब मिथिला नरेश ने देखा कि पूजनीय बलरामजी महाराज पधारे हैं, तब उनका हृदय आनन्द से भर गया। उन्होंने झटपट अपने आसन से उठकर अनेक सामग्रियों से उनकी पूजा की। इसके बाद भगवान बलराम जी कई वर्षों तक मिथिला पुरी में ही रहे। महात्मा जनक ने बड़े प्रेम और सम्मान से उन्हें रखा। इसके बाद समय पर धृतराष्ट के पुत्र दुर्योधन ने बलराम जी से गदायुद्ध की शिक्षा ग्रहण की। अपनी प्रिय सत्यभामा का प्रिय कार्य करके भगवानश्रीकृष्ण द्वारका लौट आये और उनको यह समाचार सुना दिया कि शतधन्वा को मार डाला गया, परन्तु स्यमंतकमणि उसके पास न मिली। इसके बाद उन्होंने भाई बन्धुओं के साथ अपने श्वसुर सत्राजित की वे सब और्ध्वदेहिक क्रियाएँ करवायीं, जिनसे मृतक प्राणी का परलोक सुधरता है।

अक्रूर और कृतवर्मा ने शतधन्वा को सत्राजित के वध के लिए उत्तेजित किया था। इसलिए जब उन्होंने सुना कि भगवान श्रीकृष्ण ने शतधन्वा को मार डाला है, तब वे अत्यंत भयभीत होकर द्वारका से भाग खड़े हुए।

परिक्षित! कुछ लोग ऐसा मानते है कि अक्रूर के द्वारका से चले जाने पर द्वारकावासियों को बहुत प्रकार के अनिष्टों और अरिष्टों का सामना करना पड़ा। परन्तु जो लोग ऐसा कहते हैं, वे पहले कही हुई बातों को भूल जाते हैं। भला, यह भी कभी सम्भव है कि जिन भगवान श्रीकृष्ण में समस्त ऋषि-मुनि निवास करते हैं, उनके निवासस्थान द्वारका में उनके रहते कोई उपद्रव खड़ा हो जाय। उस समय नगर के बड़े-बूढ़े लोगों ने कहा - 'एक बार काशी नरेश के राज्य में वर्षा नहीं हो रही थी, सूखा पड़ गया था। तब उन्होंने अपने राज्य में आये हुए अक्रूर के पिता श्वफल्क को अपनी पुत्री गान्दिनी ब्याह दी। तब उस प्रदेश में वर्षा हुई। अक्रूर भी श्वफल्क के ही पुत्र हैं और इनका प्रभाव भी वैसा ही है। इसलिए जहाँ-जहाँ अक्रूर रहते हैं, वहाँ-वहाँ खूब वर्षा होती है तथा किसी प्रकार का कष्ट और महामारी आदि उपद्रव नहीं होते।

परीक्षित! उन लोगों की बात सुनकर भगवान ने सोचा कि 'इस उपद्रव का यही कारण नहीं है' यह जानकर भी भगवान ने दूत भेजकर अक्रूर को ढुँढवाया और आने पर उनसे बातचीत की। भगवान ने उनका खूब स्वागत सत्कार किया और मीठी-मीठी प्रेम की बातें कहकर उनसे सम्भाषण किया। परीक्षित ! भगवान सबके चित का एक-एक संकल्प देखते रहते हैं। इसलिए उन्होंने मुस्कराते हुए अक्रूर से कहा - 'चाचा जी ! आप दान धर्म के पालक हैं। हमें यह बात पहले से ही मालूम है कि शतधन्वा आपके पास वह स्यमन्तक मणि छोड़ गया है, जो बड़ी ही प्रकाशमान और धन देने वाली है। आप जानते ही हैं कि सत्राजित के कोई पुत्र नहीं है। इसलिए उनकी लड़की के लड़के – उनके नाती ही उन्हें तिलाँजली और पिण्डदान करेंगे, उनका ऋण चुकायेंगे और जो कुछ बच रहेगा उसके उत्तराधिकारी होंगे। इस प्रकार शास्त्रीय दृष्टि से यद्यपि स्यमन्तक मणि हमारे पुत्रों को ही मिलनी चाहिए, तथापि वह मणि आपके ही पास रहे। क्योंकि आप बड़े व्रतनिष्ठ और पवित्रात्मा हैं तथा दूसरों के लिए उस मणि को रखना अत्यन्त कठिन भी है। परन्तु हमारे सामने एक बहुत बड़ी कठिनाई यह आ गयी है कि हमारे बड़े भाई बलराम जी मणि के सम्बन्ध में मेरी बात का पूरा विश्वास नहीं करते। इसलिए महाभाग्यवान अक्रूर जी ! आप वह मणि दिखाकर हमारे इष्टमित्र – बलराम जी, सत्यभामा और जाम्बती का सन्देह दूर कर दीजिए और उनके हृदय में शान्ति का संचार कीजिए। हमें पता है कि उसी मणि के प्रताप से आजकल आप लगातार ही ऐसे यज्ञ करते रहते हैं, जिसमें सोने की वेदियाँ बनती हैं। परीक्षित ! जब भगवान श्रीकृष्ण ने इस प्रकार सान्तवना देकर उन्हें समझाया-बुझाया, तब अक्रूर जी ने वस्त्र में लपेटी हुई सूर्य के समान प्रकाशमान वह मणि निकाली और भगवान श्रीकृष्ण को दे दी। भगवान श्रीकृष्ण ने वह स्यमंतक मणि अपने जाति-भाईयों को दिखाकर अपना कलंक दूर कर दिया और उसे अपने पास रखने में समर्थ होने पर भी पुन: अक्रूर जी को लौटा दिया।

स्कंद पुराण में भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं कहा है कि भादव के शुक्ल पक्ष के चन्द्र दर्शन मैंने गोखुर के जल में किए, जिसके फलस्वरूप मुझ पर मणि की चोरी का झूठा कलंक लगा।

" मया भाद्रपदे शुक्लचतुर्थ्यां चंद्रदर्शनं गोष्पदाम्बुनि वै राजन् कृतं दिवमपश्यता "

देवर्षि नारदजी ने भी श्री कृष्ण को भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को चन्द्र दर्शन करने के फलस्वरूप व्यर्थ कलंक लगने की बात कही है-

खिलजी तुर्कों के पूज्य गणेश

960 ई.

वह समय रेखा जिससे पूर्व भारत ही नहीं वंक्षु नदी और उससे परे तक हिंदू देवताओं व बुद्ध की धूम मची हुई थी।

अफगानिस्तान वस्तुतः हिंदुत्व की वैतरणी थी जिसमें मध्य एशिया से आने वाली बर्बर जातियां उसमें प्रवेश करतीं, सुसंस्कृत होतीं और फिर स्वर्ग के समान सुंदर भारत में प्रवेश करतीं।

यूनानी, शक, पह्लव, कुषाण और हूण आये, खून खराबा किया और फिर हिंदुत्व में विलीन हो गये।

अफगानिस्तान में भी भारत की बहुदेव पूजक संस्कृति व्याप्त थी लेकिन पश्चिम में स्थित बर्बर एकेश्वरवादी मुस्लिमों से उलट सभी कबीले एक दूसरे के देवताओं का आदर करते थे।

-सबसे प्राचीन थे पठान अर्थात पक्थ जो पूजा करते थे -अश्विनी कुमारों की।

-कच्चा माँस खाने वाले और कश्मीर से आये पिशाच पूजते थे शिव को 'लिंग रूप' में। आज वे रहते हैं अफगानिस्तान के लघमन में और कहलाते हैं 'पिशाई कश्मिर' जिन्हें अभी डेढ़ सौ साल पहले मुस्लिम बनाया गया।

-नूरिस्तान के पठान वे प्राचीनतम आर्य पठान थे जिन्होंने मुस्लिमों से अपना संघर्ष स्याहपोशों के रुप में चलाया 1896 तक और वे पूजते थे यमराज को।

-फिर आये सीथियन या शक जिनके घोड़े पहुंचे पश्चिम में सौराष्ट्र व पूरब में मगध तक जिनकी सूर्यपूजा ने हिंदुओं को दिया महापर्व -छठ

-कुषाणों ने पूजा शिव, बुद्ध और ईरानी नाना देवी को जो भारत में प्रसिद्ध हुईं 'नैना देवी' के नाम से।

-जंजुआ कबीले के हिंदूशाही पूजक थे शिव पार्वती व दुर्गा के।

सबके अंत में आये खलजी तुर्क जिनकी निष्ठा यों तो भगवान जूर (सूर्य) के प्रति थी लेकिन उन्हें गणेश भी परम प्रिय थे। इन्हीं खलजों की एक शाखा हैं आज के 'कलश' लोग।

अफगानिस्तान के गरदेज प्रांत से प्राप्त संग ए मर्मर की यह अद्भुत मूर्ति उस हिंदू तुर्क राजा की भगवान गणेश के प्रति निष्ठा की गवाही देते हैं जिसे मुस्लिम बन चुके अफगानों ने ही नहीं हमने भी भुला दिया।

यह हिंदू तुर्क राजा थे - महाराज खिंजिल

सन 653. से लेकर 960 ई. तक अरबी मुस्लिम अफगानिस्तान के इन हिंदू पठानों व हिंदू तुर्कों को जीत न सके थे।

फिर अचानक ऐसा क्या हुआ कि मुस्लिम अफगानिस्तान को पार कर सोमनाथ तक आ पहुँचे।

जानिए इतिहास के छिपे रहस्यों को जो कभी बताये ही नहीं गये।

पढ़िए अनसंग हीरोज को और जानिए सूर्यपूजक व गणेशपूजक पठानों के संघर्षों की महागाथा को।

'अनसंग हीरोज-#इंदु_से_सिंधु_तक'

अफगानिस्तान में गरदेज से प्राप्त संग ए मरमर की भगवान गणेश की प्रतिमा।

शुद्ध भक्ति कैसे प्राप्त की जाए

शुद्ध भक्ति कैसे प्राप्त की जाये इसके लिये हमें सर्वप्रथम श्रीकृष्ण भक्ति की प्रामाणिक परम्परा में किसी प्रामाणिक गुरु के पास जाकर विनम्र भाव से जिज्ञासा करनी चाहिये। प्रामाणिक गुरू की व्याख्या श्री चैतन्य महाप्रभु ने जो कि साक्षात भगवान श्री कृष्ण है। इस प्रकार की है, जो गुरू कृष्ण तत्व ज्ञान से परिपूर्ण है उन्हें ही प्रमाणिक गुरू स्वीकार करना चाहिये। चाहे वह किसी भी देश जाति समुदाय एवं आयु के हो। क्योंकि गुरू ही ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होनें भगवान के असीम प्रेम का रस पान किया है उन्होनें ही भक्ति की वास्तविक परिभाषा को समझा है। गुरू का ज्ञान एक अग्नि की तरह है जो हमेशा प्रज्वलित रहता है। इसको इस प्रकार समझा जा सकता है। जिस प्रकार लोहे को अग्नि में तपाने से लोहा भी अग्नि की तरह प्रज्जवलित होने लगता है ठीक उसी प्रकार गुरु कृष्ण रूपी विरह अग्नि में हमेशा तपते रहते हैं और उनकी शरणागति में जाने से हमारे अन्दर भी कालान्तर में उस अग्नि की लौ फूट जाती है। यानि कोई जीव गुरू के माध्यम से यह लौ प्रज्जवलित कर लेता है तब शनैः- शनैः ज्ञान एवं भक्ति की लता बढ़ती चली जाती है एवं जीव अपने जीवन में आनन्द का अनुभव करने लगता है जो कि जीव का एक मात्र वैधानिक अस्तित्व है। यमराज ने अपने दूतों से कहा

स्वयम्भूर्नारदः शम्भुः कुमारः कपिलो मनुः। प्रह्मदो जनको भीष्मो बलिर्वैयासकिर्वयम्।। द्वादशैते विजानीमो धर्म भागवतं भटाः।

गुहां विशुब्दं दुर्बोधं यं ज्ञात्वामृतमश्नुते।। (६. .२०/२१) श्रीमद्भागवतम्

ब्रहमा जी, नारद जी, शिव जी, चारों कुमार, देव हुति के पुत्र कुपिल और स्वयंभू मनु, प्रहलाद महाराज, महाराजा जनक, भीष्म पितामह, बलि महाराज, महर्षि वेदव्यास और स्वयं मैं धर्म के वास्तविक सिद्धांतों को जानते हैं। मेरे दूतों दिव्य धर्म सिद्धान्त जो भागवत धर्म के नाम से प्रख्यात हैं। जो कि परम ईश्वर के प्रति आत्म समर्पण करने और उनसे प्रेम करने से सम्बन्धित है, यह दिव्य धर्म त्रिगुणात्मक प्रकृति (सतो, रजो एवं तमोंगुणों) से संदूषित नहीं होता। यह अत्यन्त गोपनीय है और साधारण मनुष्य के लिये इसको समझना अत्यन्त कठिन है। किन्तु यदि सौभाग्य से कोई इसे एक बार समझ लेता है तो उसका तत्काल उद्धार हो जाता है और अपने घर भगवद्धाम को वापस चला जाता है।

"सनातन वैदिक धर्म' बना, 'नाच धर्म "

ये गणेश विसर्जन मैँ नाचते हैं। इनकी
खासियत
है कि ये रामनवमीँ में भी
नाचते हैं। जन्माष्टमीँ में भी
नाचते हैं। शिव बारात में
भी नाचते हैं। तीज में भी
नाचते हैं। नवरात्र में नाचते
हैं। दुर्गा मूर्ति विसर्जन में भी नाचते हैं।
कांवड़ यात्रा में भी नाचते हैं।
इसके अलावा ये उपर्युक्त
महापुरुषो व योगियों को भी नचाते हैं।
यानि कुल मिलाकर इनके
लिए धर्म, भक्ति का अर्थ है ₹नाचना₹.....
लेकिन ये इनका दोष नहीं है,
दोष है धर्म के उन पाखण्डी
ठेकेदारों का जिन्होंने हमारे
पवित्र 'सनातन वैदिक धर्म' को
'नाच' धर्म बना दिया है। फिर ये
चिल्लायेंगे देखो 'धर्मांतरण' एवं लव जिहाद'
हो रहा है। ये लोग और इनकी बहन, बेटियाँ
धार्मिक ग्रंथो को देखकर नाक
सिकोड़ते है, पर उसी ग्रंथ
के आधार पर डीजे का गाना
बजते ही नाचने लगते हैं
और ये समझ लेते है बल्कि
इनका पूरा परिवार ही समझ
लेता है कि बस मूर्ति खरीदी
भोग लगाया, आरती कर दी
और पानी मैँ डुबोया एवं
हर दशा में नाच लिया। बस
धर्म कमाकर मोक्षगामी हो
गये। तब ऐसे लोगों का
धर्म परिवर्तन न होगा तो
किनका होगा ???

सन्यासियों का श्राद्ध आज

हिंदू धर्म में सन्यासी पितरों का श्राद्ध बेहद महत्व रखता है। जिन परिवारों के सदस्य माता-पिता, दादा-दादी, चाचा-चाची या अन्य पितृ पूर्वज जीवित रहते हुए सन्यासी बन गए थे, उनके श्राद्ध की तिथि शास्त्रों में विशेष रूप से निर्धारित की गई है। भाद्रपद की पूर्णिमा से आश्विन मास की अमावस्या तक कुल 16 श्राद्ध होते हैं। इन श्राद्धों में अपने पितरों और पूर्वजों का पिंडदान, तर्पण और अन्य विधियां करना आवश्यक माना गया है।

शास्त्रों के अनुसार, पितृपक्ष की कुछ तिथियां निश्चित की गई हैं। जैसे सौभाग्यवती माता स्त्रियों का श्राद्ध एक निर्धारित तिथि को किया जाता है, वैसे ही सन्यासी पितरों का श्राद्ध भी निश्चित तिथि को करने का विधान है।

श्राद्ध पक्ष की सभी तिथियां विशेष महत्व रखती हैं। गरुड़ पुराण और शकुन शास्त्र में भी इसे स्पष्ट किया गया है। जो व्यक्ति अपने पितृ पूर्वज का विधिपूर्वक श्राद्ध नहीं करता, उसके जीवन में दुख, आर्थिक हानि, पारिवारिक कलह और अन्य संकट बने रहते हैं।

सन्यासी पितरों का श्राद्ध

सन्यासी पितरों का श्राद्ध केवल अश्विन कृष्ण पक्ष की द्वादशी तिथि को करना चाहिए। साल २०२५ में यह तिथि 18 सितंबर, बृहस्पतिवार है। इस दिन 11:00 बजे से पहले विधिपूर्वक पिंडदान और तर्पण करने से सन्यासी पितरों को मोक्ष प्राप्त होता है और वे वंशजों पर सदैव आशीर्वाद बनाए रखते हैं।

विशेष जानकारी के अनुसार, जिन पितृ पूर्वजों ने जीवन रहते सन्यास लिया और पिंडदान कर दिया, उनका श्राद्ध नहीं करने पर दोष नहीं माना गया है। लेकिन यदि विधिपूर्वक द्वादशी तिथि को श्राद्ध किया जाता है, तो यह उनके मोक्ष और वंशजों के कल्याण के लिए अत्यंत लाभकारी होता है।

श्राद्ध की विधि और महत्वपूर्ण जानकारी

श्राद्ध की तिथि : अश्विन कृष्ण पक्ष की द्वादशी।

साल २०२५ में तिथि : 18 सितंबर, बृहस्पतिवार।

समय : 11:00 बजे से पहले।

विधि : पिंडदान, तर्पण और अन्य शास्त्रानुसार अनुष्ठान।

लाभ : सन्यासी पितरों को मोक्ष प्राप्त होता है और वंशजों पर आशीर्वाद बना रहता है।

।। भगवान विश्वकर्मा ।।

भगवान विश्वकर्मा का त्यागमय जीवन

।। भगवान विश्वकर्मा ।।

भगवान विश्वकर्मा का त्यागमय जीवन

आदि शिल्पाचार्य विश्वकर्मा जी का विवाह भक्त प्रहलाद की सुपुत्री रचना के साथ हुआ था।। उनके पुत्र का नाम विश्वरूप था , जो अत्यंत बुद्धिमान और बलशाली था। जब देवगुरु बृहस्पति ने देवताओं के गुरुपद का त्याग कर दिया था , तब देवों ने श्री विश्वकर्मा जी के सुपुत्र विश्वरूप को , उसकी विद्वता के कारण , गुरुपद पर विराजित किया था यद्यपि विश्वरूप इंद्र के शत्रु-कन्या का पुत्र था।

विश्वरूप की माता असुरकुल की थीं , इसलिए मातृस्नेह के वशीभूत होकर विश्वरूप अप्रत्यक्ष रूप से असुरों की भी सहायता करते थे। यह जानने के बाद इन्द्र ने विश्वरूप का सिर काट दिया। इंद्र से प्रतिशोध लेने के लिए विश्वकर्मा जी अन्य पुत्र के लिए कठोर तपस्या करने लगे। इसके फलस्वरूप विश्वकर्मा जी को वृत्र नामक एक अत्यंत बलशाली महायोद्धा पुत्र प्राप्त हुआ। अपनी आसुरी वृत्ति , तामस स्वभाव एवं क्रूर कर्मों के कारण वृत्त ₹ वृत्रासुर ₹ के नाम से जगत विख्यात हुआ।

समय बीतने के साथ विश्वकर्मा जी अपने पुत्र के दुष्कर्मों के कारण चिंतित रहने लगे। दुःख और अहंकार के उन्माद में आकर राष्ट्रनायक इंद्र और अन्य देवताओं का नाश करने की अभिलाषा उन्हें लज्जास्पद लगने लगी। अपने ही हाथों अपने राष्ट्र जीवन को नष्ट-ध्वस्त करने की कृति

उन्हें तिरस्करणीय और असह्य प्रतीत होने लगी। उनका विवेकशील मन सदा चिंतित रहने लगा।

श्रीमद् भागवत महापुराण के अनुसार वृत्रासुर के वध के लिए देवताओं ने नारायण की स्तुति की। जब वे प्रकट हुए , तो देवताओं ने इसका उपाय पूछा। नारायण भगवान ने कहा कि ऋषि दधीचि की अस्थि से निर्मित वज्र से वृत्रासुर का वध संभव है। लेकिन ऐसा वज्र तो विश्वकर्मा ही बना सकते हैं।

ततस्तैः आयुद्धश्रेष्ठो विश्वकर्मविनिर्मितः।

येन वृत्रशिरो हर्ता मत्तेज उपबृंहितः।।

अर्थ - इसके बाद विश्वकर्मा जी के द्वारा उन (दधीचि के द्वारा दिए) अंगों से एक श्रेष्ठ आयुध तैयार करा लेना। देवराज ! मेरी शक्ति से युक्त होकर तुम इसी शस्त्र के द्वारा वृत्रासुर का सिर काट लोगे।

क्या विश्वकर्मा जी अपने पुत्र के वध हेतु ऐसा वज्र बनाएंगे ? जब देवगण विश्वकर्मा जी के पास पहुंचे और अपनी बात कही , तो विश्वकर्मा जी ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस प्रकार देवराज इन्द्र ने वृत्रासुर का वध विश्वकर्मा जी द्वारा बनाए गए वज्र से किया था।

पिता होकर भी अपने पुत्र (दुराचारी) के वध के लिए विश्वकर्मा जी ने वज्र बनाया था। एक ओर पुत्र प्रेम और दूसरी ओर राष्ट्रहित - ऐसी दुविधा में फंसे थे विश्वकर्मा जी। किंतु उनका विवेक और कर्तव्यनिष्ठा जागृत था। कैसा असीम त्याग है इस विभूति का ! अपनी कठोर तपस्या की सारी उपलब्धि , जो उनका एकमात्र प्रिय पुत्र वृत्र था , उसको ही राष्ट्रवेदी पर बलि चढ़ाने की उन्होंने सम्मति दे दी।

यह जानने के बाद शिल्पाचार्य भगवान विश्वकर्मा जी के चरणों में शीश स्वतः झुक जाता है।

महापुरुषों के जीवन की यही विशेषता होती है कि वे व्यापक जनहित में निजी स्वार्थ की तिलांजलि दे देते हैं। राजनीतिक क्षेत्र में नेतृत्व करने वाले लोगों को विश्वकर्मा जी का आदर्श ग्रहण करना चाहिए। आज के वर्तमान समय में , जहां अयोग्य एवं अपरिपक्व पुत्र को बलात नेतृत्व सौंपने के लिए धीमाकशी चल रही है , वहां हमें भगवान विश्वकर्मा जी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

भगवान विश्वकर्मा जी के जीवन का यह पक्ष सभी सनातन हिंदुओं का आदर्श रहना चाहिए।

मिथिलेश ओझा की ओर से ₹ श्री विश्वकर्मा जयंती ₹ पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

।। आदि शिल्पाचार्य भगवान विश्वकर्मा की जय ।।

'स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार' अभियान का दिल्ली में शुभारंभ

-महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण को मिलेगी नई दिशा, -केंद्रीय राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल रहीं मौजूद

सुषमा रानी

नई दिल्ली । बुधवार को 'स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार' अभियान की औपचारिक शुरुआत की गई। यह कार्यक्रम दिल्ली सचिवालय में आयोजित हुआ, जहां केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल ने विशेष रूप से शिरकत की।

कार्यक्रम के दौरान राज्य मंत्री ने कहा कि यह अभियान परिवार, समाज और राष्ट्र की मजबूती का आधार बनेगा। महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण को प्राथमिकता देकर ही एक मजबूत और जागरूक समाज की नींव रखी जा सकती है।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमेशा नारी शक्ति को राष्ट्र-निर्माण की धुरी माना है। चाहे

उज्ज्वला योजना हो या स्वच्छ भारत अभियान, नल से जल योजना हो या प्रधानमंत्री आवास योजना इन सभी पहलों ने महिलाओं के जीवन में सम्मान, सुविधा और आत्मनिर्भरता को एक नई ऊंचाई दी है।

'स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार' अभियान के तहत महिलाओं के लिए स्वास्थ्य जांच, पोषण संबंधी जागरूकता, स्वच्छता और जीवनशैली से जुड़ी आवश्यक सेवाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। यह कार्यक्रम ग्रामीण और शहरी दोनों इलाकों की महिलाओं को लाभ पहुंचाने की दिशा में एक मील का पत्थर माना जा रहा है।

राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल ने कहा₹प्रधानमंत्री मोदी में माँ जैसा अपनापन और पिता जैसी मजबूती है। उन्होंने हमेशा ऐसे फैसले लिए हैं, जो ज़मीन से जुड़े हैं और जनजीवन को सीधे प्रभावित करते हैं।₹

इस मौके पर दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज सिंह, विभिन्न जनप्रतिनिधि, स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारी और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

यह पहल सरकार की उस सोच को दर्शाती है, जिसमें ₹स्वस्थ महिला ही परिवार की नींव और राष्ट्र की शक्ति है।₹ अब यह देखना दिलचस्प होगा कि यह अभियान जमीनी स्तर पर कितनी व्यापक सफलता हासिल करता है।

भागवत, एक तेरा ही सहारा! : राजेंद्र शर्मा

मोदी जी जैसा विपक्ष रामजी किसी दुश्मन को भी नहीं दें। बताइए, मोदी जी की फोटो देखते ही, इनके पेट में दर्द होने लगता है। अब मोदी जी ने देश को जीएसटी वाला गिफ्ट दिया है या नहीं? गिफ्ट भी सुनते हैं कि डबल-डबल है। और सबसे बड़ी बात यह कि मोदी जी ने गिफ्ट त्योहार के बड़े वाले सीजन में दिया है, जो दशहरा-दीवाली तक जाता है। अब क्या इस गिफ्ट के बदले में, गिफ्टार्थी लोग मोदी जी को एक थैंक यू भी नहीं दे सकते हैं।

बेशक, थैंक यू जरा बड़ा-सा रखना पड़ेगा, आखिरकार मोदी जी का गिफ्ट भी तो खासा बड़ा है। दीवाली गिफ्ट और रिटर्न गिफ्ट में, थोड़ा अनुपात तो होना ही चाहिए। और भैया आम पब्लिक के हिस्से की हम नहीं कहते, पर उद्योग-धंधे वालों को तो मोदी जी ने बड़ा वाला ही गिफ्ट दिया है। जितना बड़ा धंधे वाला, उतना ही बड़ा गिफ्ट।

पर बड़े धंधे वालों ने थैंक यू मोदी जी, धन्यवाद मोदी जी, कमाल मोदी जी वगैरह के विज्ञापन तरह-तरह के मीडिया में जरा से छपवा क्या दिए, विपक्ष वालों ने ऐसे शोर मचाना शुरू कर दिया जैसे इन विज्ञापनों में उनकी गांठ से पैसे जा रहे हों। यानी पैसा किसी का लग रहा है, फोटो किसी की छप रही है और हाय-हाय कोई और कर रहा है। इसी को कहते हैं, तेली का तेल जले, मशालची की छाती फटे! पर यह मुहावरा सुनने के बाद भी, मजाल है, जो इन विपक्षियों को रत्तीभर शर्म आयी हो। उल्टे पलटकर कहते फिर रहे हैं कि गिफ्ट देने और बदले में गिफ्ट लेने तक तो फिर भी गनीमत थी, पर मोदी जी तो थैंक यू भी गला दबाकर कहलवा रहे हैं।

मंत्रालय में मोदी जी के खास अफसर, मीडिया में जाने से पहले थैंक यू के एक-एक विज्ञापन को देखकर क्लीयरेंस दे रहे हैं। उद्योगपतियों को अपने चरणों में कितना झुकाओगे, मोदी जी! पर क्या यह भी संपदा निर्माताओं के बीच मोदी जी की लोकप्रियता से खिसियाए विपक्ष की खिसियानी दलील ही नहीं है? वर्ना चरणों में झुकाने में कितना-कितना क्या होता है? अधिकतम तो दंडवत है। और दंडवत तो वे बेचारे पहले ही खुशी-खुशी हुए पड़े हैं। मोदी जी किसी का गला क्यों दबाने लगे!

जीएसटी वाले थैंक यू मोदी जी को उद्योगपतियों का गला दबाने का मामला बताकर बदनाम करने से पेट नहीं भरा, तो मोदी जी के मणिपुर के दौरे के पीछे पड़ गए। और कुछ नहीं मिला, तो यही कि मणिपुर तो 2023 की मई से जल रहा था, अब सवा दो साल के बाद क्यों जा रहे हैं मोदी जी? बताइए, ये क्या सिर्फ विरोध करने के लिए हैं। अब तक मोदी जी मणिपुर नहीं गए थे, तो विपक्षी इसकी शिकायत करते थे कि मोदी जी मणिपुर क्यों नहीं जाते। और तो और, कुछ विरोधी तो बाकायदा दिनों की गिनती करने में लगे हुए थे कि कितने दिन हो गए, मोदी जी को मणिपुर गए बिना। और अब मोदी जी जा रहे थे, तो भाई लोगों ने पलटकर यह कहना शुरू कर दिया कि अब सवा दो साल बाद क्यों जा रहे हैं? मोदी जी सवा दो साल बाद भी उसी लिए जा रहे थे, जिस लिए इन सवा दो सालों में पहले कभी भी जा सकते थे। फैंसी ड्रैस में फोटो खिंचवाने, रोड शो में मोदी-मोदी कराने, मणिपुर से अपना पुराना रिश्ता बताने, साथ खड़े रहने का दावा करने और हजार-पंद्रह सौ करोड़ रुपये की परियोजनाओं के तोहफे का एलान करने। पर पहले नहीं गए, अब जा रहे थे, क्योंकि नागपुर की पाठशाला में पढ़ाया गया था, सब्र का फल मीठा होता है। तब गए, जब लड़-भिड़ के सब थक कर निढाल हो गए। गो बैक के नारे लगाने वालों के भी गले में जोर नहीं बचा।

पर विपक्ष वालों ने फिर भी हाय-हाय कर के मोदी जी के सगुन को बिगाड़ ही दिया। तीन घंटे के कार्यक्रम में से मोदी जी को जो आधा घंटा नाच-गाने का आनंद लेते हुए गुजारना था, उसमें भाई लोगों ने भांजी मार दी। स्वागत में नाच का विरोधियों ने इतना शोर मचाया, इतना शोर मचाया, कि मणिपुर वालों भी ने कहना शुरू कर दिया कि अभी तो चिताएं ठंडी भी नहीं हुई हैं, शोक के बीच में हम नाचकर कैसे दिखाएं? हमारी आंखों के आंसू अभी सूखे भी नहीं हैं, बरसती आंखों से स्वागत के गीत कैसे गाएं? नतीजा यह कि इतनी प्रतीक्षा के बाद मोदी जी गए भी, पर स्वागत में नाच-गाना नहीं हुआ। फैंसी ड्रैस और कलगी वाले फैंसी हैट का प्रदर्शन, सिर्फ मोदी जी के भरोसे रह गया। और तो और, विपक्षियों की कांय-कांय से इंद्र देव भी चिढ़ गए और उन्होंने गुस्से से बारिश करा दी, जिससे मोदी जी का हैलीकॉप्टर यात्रा का प्रोग्राम खटाई में पड़ गया। कारों के काफिले में सफर करना पड़ा, पर रोड शो कैंसल हो गया। वो तो सड़क के किनारे स्कूली बच्चों को खड़ा करा के शासन ने दौरे की शान रख ली, वर्ना विरोधियों ने सवा दो साल के इंतजार पर पानी ही फिरवा दिया था।

और इतने पर भी विरोधियों ने बस थोड़े ही कर दी। उल्टे भगवा कुनबे में ही झगड़ा लगाने पर तुले हुए हैं और वह भी बेबात। मोदी जी ने भागवत जी को एक प्रशस्ति लेख लिखकर जरा लंबा हैप्पी बर्थ डे क्या कर दिया, भाई लोग लग गए बाल की खाल निकालने में। कह रहे हैं कि भागवत जी का बर्थ डे तो हर साल ही आता है, पर ग्यारह साल में इससे पहले तो कभी मोदी जी ने ऐसा धमाकेदार हैप्पी बर्थ डे नहीं किया था। पचहत्तरवें बर्थ डे पर ही यह खास मेहरबानी क्यों? लगता है कि पचहत्तर की संख्या ही कुछ खास है। मोदी जी का भी पचहत्तरवां बर्थ डे बस आया ही समझिए। तो क्या मोदी जी, भागवत जी को यह संदेश दे रहे हैं कि दिल करे तो मेरे बर्थडे पर आप भी ऐसे ही मेरी प्रशस्ति कर देना, बस। पर रिटायरमेंट का लफ्ज कोई अपनी जुबान पर नहीं लाएगा और कलम पर लाने का तो खैर सवाल ही नहीं उठता है। जाहिर है कि यह सारी कयासबाजी भी झूठी है। भागवत जी तो पहले ही कह चुके हैं कि संघ का स्वयंसेवक कभी रिटायर्ड नहीं होता है। पर उसमें भी एक डंक है। साथ में जोड़ा है कि जब तक संघ सेवा कराए। यानी जब तक भागवत जी रिटायरमेंट की घंटी नहीं बजाएं। पर पड़ोसियों की तरह, जेन ज़ी वाले यहां भी घंटी बजाने पर उतर आए तो? भागवत, एक तेरा ही सहारा है!

(व्यंग्यकार वरिष्ठ पत्रकार और 'लोक लहर' के संपादक हैं।)

****

2. ऊटपटांगवाद के प्रवर्तक : विष्णु नागर

देश आजकल ऊटपटांगवाद में फंसा हुआ है। नरेंद्र मोदी को जब भी इतिहास याद करेगा, इस वाद के प्रवर्तक के रूप में याद करेगा। इस तरह उनका नाम हमेशा इतिहास में दर्ज रहेगा। दुनिया की कोई ताकत उनका नाम इस रूप में मिटा नहीं पाएगी! उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद भाजपा और संघ में य4ह वाद लोकप्रियता के नये से नये शिखर हर दिन छू रहा है। मोदी जी की ऊटपटांग अभिव्यक्तियों का डंका सारी दुनिया में बज रहा है और हम भारतीय उनके कारण हंसी का पात्र बने हुए हैं। आजकल वे राग स्वदेशी गा रहे हैं। उधर अमेरिका से संबंध बेहतर करने के लिए भी लालायित हैं। रिश्ते मान लो, ठीक हो गए तो राग स्वदेशी भी गायब हो जाएगा। वह किसी भी नारे को प्रकट करने और उसे गायब करने के मास्टर माइंड हैं। तो अभी स्वदेशी पर काफी ज्ञान बघार रहे हैं और जब वे ज्ञान बघारना शुरू करते हैं, तो फिर उसकी कोई हद नहीं होती! उन्होंने यहां तक कहा कि मेरी स्वदेशी की परिभाषा इतनी सिंपल है कि पैसा किसका लगता है, इससे मुझे कोई लेना-देना नहीं। पैसा काला है या गोरा, इससे भी मुझे कोई लेना-देना नहीं। देश का प्रधानमंत्री इतना बेशर्म हो जाए और किसी को इस पर गुस्सा तक न आए ऐसा भारत में ही हो सकता है। इसका कारण शायद यह है कि इनके ऊटपटांगवाद से लोग अब इतना ऊब चुके हैं कि लोग क्रोध करना और हंसना तक भूल चुके हैं। इतनी बेहूदगियों का वितरण ऊपर से नीचे तक प्रतिदिन होता रहता है कि लोगों ने इन पर ध्यान देना ही बंद कर दिया है! लोग मान चुके हैं कि ये हैं तो बेहूदगी है यहां। बेहूदगी और इनका चोली-दामन का साथ है।

हाल ही में जीवन के 75 वर्ष पूरे कर चुके संघ प्रमुख मोहन भागवत भी मोदी जी से पीछे नहीं हैं, बल्कि मूर्ख बनाने में दो कदम आगे हैं। उन्होंने फरमाया है कि भारत नंबर वन देश बनने जा रहा है। इससे अमेरिका, रूस और चीन चिंतित हैं। यह पढ़कर मेरा तो सिर फोड़ने का मन हुआ। अगर फोड़ लेता तो अस्पताल में होता और आपसे मन की यह बात कह नहीं पाता!

इन दोनों बड़े ज्ञानियों के अनुसरण में हर मंत्री ऊटपटांगवाद को मजबूत करने में व्यस्त है। जितना ऊटपटांग बोलोगे, जितनी बेहूदगियां करोगे, मोदी जी के उतने ही निकट पहुंचते जाओगे। उनके प्रति अपनी लायल्टी सिद्ध करने की सबसे उत्तम विधि यह है। जिनकी लायल्टी पुरानी होने के कारण सिद्ध और प्रसिद्ध है, उन्हें भी यह काम करना पड़ता है, वरना साहेब का मूड बिगड़ जाता है। सुबह का शिड्यूल बिगड़ जाता है। पेट में मरोड़ें उठने लगती हैं।

मोदी जी के सबसे विश्वस्त या तो अमित शाह हैं या गौतम अडानी! शाह साहब को भी अपने साहेब की स्तुति में ऊटपटांगवाद चलाना पड़ता है। उन्होंने कुछ समय पहले कहा था -- 'आज दुनिया में कोई भी समस्या हो, जब तक नरेंद्र मोदी जी का बयान नहीं आ जाता, दुनिया समस्या पर विचार तय नहीं करती'! हद है न! इस कोटि की चमचागीरी और बेहूदगी मोदी युग की विशेषता है। इस बीच स्टैंड अप कॉमेडियन कुणाल कामरा का मुंह बंद कर दिया गया है, वरना वह ऐसी उत्तम कोटि की चमचागीरी पर हंसता और हंसाता! हंसता तो वह अब भी होगा, मगर हंसा नहीं पाता!

एक हैं, जिन्हें कुछ लोग योगी जी और कुछ लोग बुलडोजर बाबा कहते हैं। उनकी बौद्धिकता का उत्कर्ष देखना हो, तो उनके इस बयान में देखिए। उन्हें कंगना रनौत में मीरा बाई जैसी भक्ति, पद्मिनी जैसा तेज, रानी लक्ष्मीबाई जैसा शौर्य और वीरांगना भाव दिखता है। इस बात की संभावना शून्य से भी कम है कि योगी जी उन पर व्यंग्य कर रहे हों!

भाजपाइयों की ट्रेजेडी यह है कि उन्हें व्यंग्य करना तक नहीं आता! जब भी कोई नायाब सी बात कहना चाहते हैं, इनके फूहड़पन का उगालदान खुल जाता है। इन्हें अपने सामने चुनौती बन कर खड़े राहुल गांधी पर भी ढंग का व्यंग्य करना नहीं आता! इनकी पार्टी के महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री देवेन्द्र फडनवीस कहते हैं कि राहुल गांधी को अपना दिमाग चैक करवाना चाहिए। उनका दिमाग चोरी हो गया है या उनके दिमाग की चिप चोरी चली गई है। महाराज कुछ नहीं, तो आपने मराठी के शीर्षहास्यकार पु. ल. देशपांडे को पढ़कर ही कुछ हास्यबोध सीखा होता! वैसे सीखना चाहते, आप तो नागपुर के हैं, आपको इतनी हिंदी तो आती होगी कि परसाई जी या शरद जोशी से भी सीख सकते थे। मगर इन तीनों से थोड़ा-थोड़ा भी सीखा होता, तो नुकसान हो जाता! वे फिर चड्डी धारण नहीं कर पाते और चड्डी नहीं पहन पाते, तो मुख्यमंत्री नहीं बन पाते और मुख्यमंत्री नहीं बन पाते, तो उनका यह जीवन अकारथ चला जाता! और अगला जन्म होता नहीं! इनके राजस्थानी संस्करण मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा हैं, जो उन्हीं मोदी जी को श्रद्धांजलि दे चुके हैं, जिन्होंने यह नायाब रत्न इस प्रदेश को सौंपा है! उनका कथन है कि कांग्रेस धर्मांतरण तथा लव-जिहाद के साथ है। इनकी बुद्धि इतनी दूर चली गई, यही बहुत है। इनकी समस्या तो महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से भी विकट है। फड़नवीस जी ने कम से कम पु. ल. देशपांडे का नाम तो अवश्य सुना होगा, मगर भजन जी शुरू से हिंदुत्व का भजन करने में इतने रत रहे हैं कि परसाई जी और शरद जी का नाम इनके दृष्टिपथ में कभी गुजरा नहीं होगा!

एक चीज इन्हें थमा दी गई है कि नेहरू जी को देश के हर मर्ज का कारण बताओ और फिर सोनिया गांधी से होते हुए राहुल और प्रियंका पर आ जाओ। यह मोर्चा बड़ी मुस्तैदी से किरण रिजूजी ने संभाल रखा है। वह उन नमूनों में हैं, जिन्हें इतना आता है कि राहुल गांधी राष्ट्रविरोधी ताकतों से मिले हुए हैं!

इतिहास संघियों-भाजपाइयों का इतना प्रिय विषय है कि ये मुगलों को इतिहास से ही निष्कासन दे चुके हैं। अकबर से राणा प्रताप को विजय दिलवा चुके हैं, हालांकि जिस बाबर को ये दशकों से गाली देते आए हैं, जिस बाबरी मस्जिद को लेकर इतना बड़ा तूमार खड़ा किया था, वह भी मुगल ही था! अभी मध्य प्रदेश के स्कूली शिक्षा मंत्री यह ज्ञान दिया है कि भारत की खोज वास्कोडिगामा ने नहीं, बल्कि चंदन नामक एक व्यापारी ने की थी!

आपको इनमें से किसी भी बात पर गुस्सा आया? नहीं आया! मुझे आया? नहीं आया! इरफान हबीब तो इन बातों को हंसी में भी नहीं उड़ाएंगे! तो ये है मेरा देश कि जिसके प्रधानमंत्री और संघ प्रमुख इतने अधिक 'बुद्धिमान' हैं। इन्हें ज्ञान के लिए किसी की जरूरत नहीं। ये तो पैदा होते ही ज्ञानी हो जाते हैं। ये नेता भी हैं, विद्वान भी हैं, वैज्ञानिक भी हैं। रक्षा विशेषज्ञ भीदेश आजकल ऊटपटांगवाद में फंसा हुआ है। नरेंद्र मोदी को जब भी इतिहास याद करेगा, इस वाद के प्रवर्तक के रूप में याद करेगा। इस तरह उनका नाम हमेशा इतिहास में दर्ज रहेगा। दुनिया की कोई ताकत उनका नाम इस रूप में मिटा नहीं पाएगी! उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद भाजपा और संघ में यह वाद लोकप्रियता के नये से नये शिखर हर दिन छू रहा है। मोदी जी की ऊटपटांग अभिव्यक्तियों का डंका सारी दुनिया में बज रहा है और हम भारतीय उनके कारण हंसी का पात्र बने हुए हैं। आजकल वे राग स्वदेशी गा रहे हैं। उधर अमेरिका से संबंध बेहतर करने के लिए भी लालायित हैं। रिश्ते मान लो, ठीक हो गए तो राग स्वदेशी भी गायब हो जाएगा। वह किसी भी नारे को प्रकट करने और उसे गायब करने के मास्टर माइंड हैं। तो अभी स्वदेशी पर काफी ज्ञान बघार रहे हैं और जब वे ज्ञान बघारना शुरू करते हैं तो फिर उसकी कोई हद नहीं होती! उन्होंने यहां तक कहा कि मेरी स्वदेशी की परिभाषा इतनी सिंपल है कि पैसा किसका लगता है, इससे मुझे कोई लेना- देना नहीं। पैसा काला है या गोरा, इससे भी मुझे कोई लेना-देना नहीं।' देश का प्रधानमंत्री इतना बेशर्म हो जाए और किसी को इस पर गुस्सा तक न आए ऐसा भारत में ही हो सकता है। इसका कारण शायद यह है कि इनके ऊटपटांगवाद से लोग अब इतना ऊब चुके हैं कि लोग क्रोध करना और हंसना तक भूल चुके हैं। इतनी बेहूदगियों का वितरण ऊपर से नीचे तक प्रतिदिन होता रहता है कि लोगों ने इन पर ध्यान देना ही बंद कर दिया है! लोग मान चुके हैं कि ये हैं तो बेहूदगी है यहां। बेहूदगी और इनका चोली- दामन का साथ है।

हाल ही में जीवन के 75 वर्ष पूरे कर चुके संघ प्रमुख मोहन भागवत भी मोदी जी से पीछे नहीं हैं बल्कि मूर्ख बनाने में दो कदम आगे हैं। उन्होंने फरमाया है कि भारत नंबर वन देश बनने जा रहा है। इससे अमेरिका, रूस और चीन चिंतित हैं। यह पढ़कर मेरा तो सिर फोड़ने का मन हुआ। अगर फोड़ लेता तो अस्पताल में होता और आपसे मन की यह बात कह नहीं पाता!

इन दोनों बड़े ज्ञानियों के अनुसरण में हर मंत्री ऊटपटांगवाद को मजबूत करने में व्यस्त है। जितना ऊटपटांग बोलोगे, जितनी बेहूदगियां करोगे, मोदी जी के उतने ही निकट पहुंचते जाओगे। उनके प्रति अपनी लायल्टी सिद्ध करने की सबसे उत्तम विधि यह है। जिनकी लायल्टी पुरानी होने के कारण सिद्ध और प्रसिद्ध है, उन्हें भी यह काम करना पड़ता है वरना साहेब का मूड बिगड़ जाता है। सुबह का शिड्यूल बिगड़ जाता है। पेट में मरोड़ें उठने लगती हैं।

मोदी जी के सबसे विश्वस्त या तो अमित शाह हैं या गौतम अडानी! शाह साहब को भी अपने साहेब की स्तुति में ऊटपटांगवाद चलाना पड़ता है। उन्होंने कुछ समय पहले कहा था- ' आज दुनिया में कोई भी समस्या हो, जब तक नरेंद्र मोदी जी का बयान नहीं आ जाता, दुनिया समस्या पर विचार तय नहीं करती' ! हद है न! इस कोटि की चमचागीरी और बेहूदगी मोदी युग की विशेषता है। इस बीच स्टैंड अप कॉमेडियन कुणाल कामरा का मुंह बंद कर दिया गया है वरना वह ऐसी उत्तम कोटि की चमचागीरी पर हंसता और हंसाता! हंसता तो वह अब भी होगा मगर हंसा नहीं पाता!

एक हैं, जिन्हें कुछ लोग योगी जी और कुछ लोग बुलडोजर बाबा कहते हैं। उनकी बौद्धिकता का उत्कर्ष देखना हो तो उनके इस बयान में देखिए। उन्हें कंगना रनौत में मीरा बाई जैसी भक्ति, पद्मिनी जैसा तेज, रानी लक्ष्मीबाई जैसा शौर्य और वीरांगना भाव दिखता है। इस बात की संभावना शून्य से भी कम है कि योगी जी उन पर व्यंग्य कर रहे हों! भाजपाइयों की ट्रेजेडी यह है कि उन्हें व्यंग्य करना तक नहीं आता! जब भी कोई नायाब सी बात कहना चाहते हैं इनके फूहड़पन का उगालदान खुल जाता है। इन्हें अपने सामने चुनौती बन कर खड़े राहुल गांधी पर भी ढंग का व्यंग्य करना नहीं आता! इनकी पार्टी के महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री देवेन्द्र फडनवीस कहते हैं कि राहुल गांधी को अपना दिमाग चैक करवाना चाहिए। उनका दिमाग चोरी हो गया है या उनके दिमाग की चिप चोरी चली गई है। महाराज कुछ नहीं तो आपने मराठी के शीर्षहास्यकार पु ल देशपांडे को पढ़कर ही कुछ हास्यबोध सीखा होता! वैसे सीखना चाहते तो आप नागपुर के हैं, आपको इतनी हिंदी तो आती होगी कि परसाई जी या शरद जोशी से भी सीख सकते थे मगर इन तीनों से थोड़ा- थोड़ा भी सीखा होता तो नुकसान हो जाता! वे फिर चड्डी धारण नहीं कर पाते और चड्डी नहीं पहन पाते तो मुख्यमंत्री नहीं बन पाते और मुख्यमंत्री नहीं बन पाते तो उनका यह जीवन अकारथ चला जाता! और अगला जन्म होता नहीं! इनके राजस्थानी संस्करण मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा हैं, जो उन्हीं मोदी जी को श्रद्धांजलि दे चुके हैं, जिन्होंने यह नायाब रत्न इस प्रदेश को सौंपा है! उनका कथन है कि कांग्रेस धर्मांतरण तथा लव-जिहाद के साथ है। इनकी बुद्धि इतनी दूर चली गई, यही बहुत है। इनकी समस्या तो महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से भी विकट है। फड़नवीस जी ने कम से कम पु ल देशपांडे का नाम तो अवश्य सुना होगा मगर भजन जी शुरू से हिंदुत्व का भजन करने में इतने रत रहे हैं कि परसाई जी और शरद जी का नाम इनके दृष्टिपथ में कभी गुजरा नहीं होगा!

एक चीज इन्हें थमा दी गई है कि नेहरू जी को देश के हर मर्ज का कारण बताओ और फिर सोनिया गांधी से होते हुए राहुल और प्रियंका पर आ जाओ। यह मोर्चा बड़ी मुस्तैदी से किरण रिजूजी ने संभाल रखा है। वह उन नमूनों में हैं, जिन्हें इतना आता है कि राहुल गांधी राष्ट्रविरोधी ताकतों से मिले हुए हैं!

इतिहास संघियों- भाजपाइयों का इतना प्रिय विषय है कि ये मुगलों को इतिहास से ही निष्कासन दे चुके हैं। अकबर से राणा प्रताप को विजय दिलवा चुके हैं, हालांकि जिस बाबर को ये दशकों से गाली देते आए हैं, जिस बाबरी मस्जिद को लेकर इतना बड़ा तूमार खड़ा किया था, वह भी मुगल ही था! अभी मध्य प्रदेश के स्कूली शिक्षा मंत्री यह ज्ञान दिया है कि भारत की खोज वास्कोडिगामा ने नहीं बल्कि चंदन नामक एक व्यापारी ने की थी!

आपको इनमें से किसी भी बात पर गुस्सा आया? नहीं आया! मुझे आया? नहीं आया! इरफान हबीब तो इन बातों को हंसी में भी नहीं उड़ाएंगे! तो ये है मेरा देश कि जिसके प्रधानमंत्री और संघ प्रमुख इतने अधिक 'बुद्धिमान' हैं। इन्हें ज्ञान के लिए किसी की जरूरत नहीं। ये तो पैदा होते ही ज्ञानी हो जाते हैं। ये नेता भी हैं, विद्वान भी हैं, वैज्ञानिक भी हैं। रक्षा विशेषज्ञ भी और भी न जाने क्या-क्या हैं! इन्होंने ही यह महान आइडिया दिया था कि बादल होंगे, तो रडार हमारे को पकड़ नहीं पाएंगे। और नाली के पानी से चाय बनाने का ब्रांड न्यू आइडिया भी इन्हीं की देन है। इनके ईश्वर ने इनके मुंह से यह भी निकलवाया था कि मैं नॉन-बायोलॉजिकल हूं। इनकी विश्व प्रसिद्धि में इनके इस कथन का अतुलनीय योगदान है! नॉन बायोलॉजिकल इनसे ऐसा चिपक गया है कि जिंदगी के साथ भी और जिंदगी के बाद भी इनका साथ देगा! और भी न जाने क्या-क्या हैं!

(विष्णु नागर साहित्यकार और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

राजधानी में गूंजेगी संस्कृति की स्वर लहरियां

इंद्रप्रस्थ सेवा समिति द्वारा भव्य डांडिया महोत्सव, झिझिया नृत्य और देवी गीतों की होगी अनुपम प्रस्तुति

नई दिल्ली। भारतीय संस्कृति की झलक अब राजधानी की सड़कों और मैदानों में देखने को मिलेगी। 27 सितम्बर 2025, शनिवार शाम 6 बजे से डी.डी.ए. रामलीला ग्राउंड, कैलाशपुरी सागरपुर रोड, नई दिल्ली-45 पर इंद्रप्रस्थ सेवा समिति द्वारा भव्य डांडिया महोत्सव का आयोजन होने जा रहा है।

इस अवसर पर मिथिला की प्रसिद्ध लोक नृत्य शैली झिझिया नृत्य की प्रस्तुति होगी, जो शारदीय नवरात्र के अवसर पर देवी की आराधना में किया जाता है। इसके साथ ही पूर्वांचल के पारंपरिक देवी गीत भी गूंजेंगे, जिन्हें अपनी मधुर आवाज़ से जीवंत करेंगी प्रसिद्ध गायिका विजय लक्ष्मी जी और उनकी टीम।

धर्मपाल शर्मा का मार्गदर्शन

मेहनत इतनी ख़ामोशी से करो कि तुम्हारी सफलता शोर मचा दे,

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

ज़िन्दगी का असल हुस्न सिर्फ़ ख्वाब देखने में नहीं, बल्की उन ख्वाबों को हक़ीक़त बनाने के लिए जद्दोजहद करने में है। इंसान अगर ख़ामोशी से अपनी मेहनत करता रहे, तो एक वक़्त ऐसा आता है जब उसकी कामयाबी पूरे जहान में शोर मचा देती है। मेहनत वो दौलत है जो कभी ज़ाया नहीं जाती। आज अगर आपके पसीने की क़ीमत कोई नहीं समझ रहा, तो फ़िक्र की ज़रूरत नहीं। कल वही पसीना आपकी शान बनेगा और आपकी मेहनत हर ख़ामोशी को आवाज़ देगी। हर ख़ुशी के पीछे एक कहानी होती है, और उस कहानी में संघर्ष, सब्र और लगन छुपी होती है। जो लोग जिंदगी में शॉर्टकट तलाश करते हैं, वो शायद वक़्ती तौर पर कुछ पा लें, मगर असली कामयाबी हमेशा उन्हीं के हिस्से में आती है जो मेहनत को अपना साथी बना लेते हैं। ज़िन्दगी में हादसे, रुकावटें और नाकामियाँ लाज़मी हैं। मगर याद रखिए कि हार सिर्फ़ वही मानता है जिसने कोशिश छोड़ दी। जो अपने मक़सद से वफ़ादार रहता है, वो एक दिन हर नामुमकिन को मुमकिन बना देता है। इसलिए हमेशा मेहनत को अपनी इबादत बना लीजिए। कामयाबी देर-सबेर सही, मगर ज़रूर मिलती है। और जब मिलती है तो वो सिर्फ़ आपको नहीं, बल्कि आपके आस-पास के लोगों को भी रोशन कर देती है।

प्रदूषण-जलवायु परिवर्तन प्रभाव...!

प्रदूषण और जलवायु 'परिवर्तन' के प्रभाव,
औसत आयु व शारीरिक विकास बदलाव।
भारत में स्वास्थ्य सुविधाओं का हैं विस्तार,
जन्म एवं मृत्यु दर में गिरावट हुई लगातार।

कई शिशुओं को उचित 'चिकित्सा' अभाव,
पांच वर्ष की आयु पूरी न करते था प्रभाव।
अब तो उनकी यह संख्या रह गई है आधी,
यह कितना सुखद हैं दूर हो रहीं वो व्याधि।

वृद्धों की औसत आयु बढ़कर 72 वर्ष हुई,
एक सकारात्मक संकेत के साथ बात नई।
मिले गुणवत्तायुक्त जीवन एवं हो रोजगार,
अधिक हो पोषण भारत के सपने साकार।

संजय एम तराणेकर

क्यों चीन मैन्युफैक्चरिंग और सर्विस में बहुत आगे है, और क्यों अधिकांश देश उन पर निर्भर हैं

— अंकुर शरण, अंतरराष्ट्रीय सप्लाई चेन प्रोफेशनल, इम्पोर्ट–एक्सपोर्ट विशेषज्ञ

आज जब हम वैश्विक व्यापार की स्थिति को देखते हैं तो स्पष्ट दिखता है कि चीन मैन्युफैक्चरिंग और सर्विस सेक्टर में बहुत आगे निकल चुका है। अधिकांश देश अपनी ज़रूरत की चीज़ें चीन से आयात कर रहे हैं। यह स्थिति कोई संयोग नहीं, बल्कि लंबे समय से चीन द्वारा अपनाई गई योजनाबद्ध रणनीति, उत्पादन क्षमता, किफायती श्रम, तकनीकी निवेश, और सप्लाई चेन में मजबूती का परिणाम है।

भारत में अक्सर चर्चा होती है कि हमें चीन के उत्पादों का बहिष्कार करना चाहिए। लेकिन बहिष्कार से पहले हमें यह समझना होगा कि हमें किन कारणों से उनकी ओर देखना पड़ता है। हमें यह भी देखना होगा कि हम किन क्षेत्रों में अभी पीछे हैं और किन क्षेत्रों में नवाचार और उत्पादन क्षमता बढ़ाने की आवश्यकता है।

चीन क्यों आगे है?

बड़े पैमाने पर उत्पादन और लागत में लाभः

चीन ने दशकों पहले ही उत्पादन को बड़े पैमाने पर केंद्रित कर दिया। इसका अर्थ है कि बड़े ऑर्डर पर उत्पादन से लागत कम होती है। मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, खिलौने, रोज़मर्रा के सामान – हर क्षेत्र में चीन ने स्केल का लाभ उठाया।

सप्लाई चेन इकोसिस्टमः

कच्चे माल से लेकर तैयार माल तक, एक साथ काम करने वाले सप्लायर नेटवर्क ने चीन को तेज़ और प्रभावी बना दिया। किसी भी उत्पाद के लिए आवश्यक पार्ट्स, असेंबली, पैकेजिंग और लॉजिस्टिक्स सब एक जगह उपलब्ध होते हैं। यही कारण है कि समय और लागत दोनों में फायदा मिलता है।

तकनीक में निवेशः

ऑटोमेशन, रोबोटिक्स, स्मार्ट फैक्ट्रियों और डिजिटलीकृत उत्पादन से गुणवत्ता और उत्पादन दर दोनों बढ़े। इससे छोटे और मध्यम व्यवसाय भी वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर पा रहे हैं।

नीति और सरकार का समर्थनः

चीन की सरकार ने निर्यात को बढ़ावा देने, कर में छूट देने, और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए योजनाएँ बनाई। पोर्ट, रेल, हाईवे, वेयरहाउस, और फाइनेंस तक आसानी से पहुंच मिलती है।

भारत की स्थिति और हमें क्या करना चाहिए

भारत के पास युवा शक्ति, तकनीकी क्षमता, और नवाचार की संभावनाएँ हैं, लेकिन उत्पादन और सप्लाई चेन के क्षेत्र में अभी भी सुधार की आवश्यकता है। हमें ये बिंदु समझने होंगेः

नई तकनीक और रिसर्च में निवेश बढ़ाना होगा।

स्थानीय उद्यमों को प्रशिक्षण, फंडिंग और मार्केट तक पहुंच देना होगी।

लॉजिस्टिक्स नेटवर्क को मजबूत करना होगा ताकि समय और लागत दोनों कम हो।

सरकारी योजनाओं और नीतियों का प्रभावी उपयोग करना होगा।

आज हमारी दिनचर्या की कई चीज़ें – मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक्स, खिलौने, फर्नीचर, कपड़े – चीन से आयात हो रही हैं। यह केवल व्यापार का मुद्दा नहीं, बल्कि हमारे आर्थिक ढांचे की वास्तविकता है। जब तक हम अपनी उत्पादन क्षमता, डिज़ाइन, और तकनीक में नवाचार नहीं करेंगे, तब तक सिर्फ बहिष्कार से समाधान नहीं मिलेगा।

टैरिफ युद्ध के बीच भारत–चीन संबंध क्यों आवश्यक हैं

हालाँकि कई देशों के बीच टैरिफ युद्ध चल रहा है, फिर भी भारत–चीन संबंध को मज़बूत करना आवश्यक है। कुछ कारणः

वैश्विक सप्लाई चेन में स्थिरताः

भारत को चीन से कच्चा माल, इलेक्ट्रॉनिक्स पार्ट्स, और मशीनरी की ज़रूरत होती है। व्यापार बाधित होने से उत्पादन प्रभावित होगा।

साझा विकास के अवसरः

कई क्षेत्रों में भारत और चीन मिलकर अनुसंधान, तकनीकी विकास और बुनियादी ढांचे में सहयोग कर सकते हैं।

क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक प्रभावः

एशिया का आर्थिक भविष्य भारत और चीन की साझेदारी पर निर्भर करता है। तनाव बढ़ने से तीसरे देशों को नुकसान होता है।

प्रतिस्पर्धा नहीं, सहयोगः

प्रतिस्पर्धा ज़रूरी है, लेकिन पारस्परिक निर्भरता भी उतनी ही आवश्यक है। व्यापार से समृद्धि आती है, और सहयोग से वैश्विक प्रभाव।

हमारे लिए सबसे बड़ा संदेश यह है कि केवल बहिष्कार से समस्या का समाधान नहीं होगा। हमें मांग और आपूर्ति का खेल समझना होगा, उत्पादन बढ़ाना होगा, नवाचार करना होगा, और तकनीक में निवेश करना होगा। साथ ही, हमें यह भी समझना चाहिए कि वैश्विक व्यापार में सहयोग, स्थिरता और पारस्परिक विकास आवश्यक हैं। भारत को अपने संसाधनों का सही उपयोग करते हुए आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ना होगा, लेकिन साथ ही चीन जैसे देशों के साथ संतुलित और रणनीतिक संबंध बनाए रखना होगा। यही भविष्य की राह है।

अंकुर शरण, एक अनुभवी अंतरराष्ट्रीय सप्लाई चेन और इम्पोर्ट–एक्सपोर्ट विशेषज्ञ हैं। वे वैश्विक व्यापार, लॉजिस्टिक्स और वितरण नेटवर्क को प्रभावी बनाने में रणनीतिक समाधान प्रदान करते हैं। वे Dr. Logistics पहल के माध्यम से छात्रों को लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन से जोड़ने, प्रशिक्षण देने और करियर मार्गदर्शन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। साथ ही, वे Logistics Forum से जुड़े होकर उद्योग और शिक्षा जगत के बीच सहयोग बढ़ा रहे हैं। तकनीक, नवाचार और साझेदारी के माध्यम से भारत को आत्मनिर्भर और वैश्विक व्यापार में प्रतिस्पर्धी बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

drlogistics.ankur@gmail.com

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी के अभिनंदन ग्रंथ का प्रकाशन बहुत शीघ्र

अभिनंदन ग्रंथ के लिए उनसे संबंधित रचनाएं सादर आमंत्रित

वृन्दावन। ब्रज साहित्य सेवा मण्डल के द्वारा मण्डल के अध्यक्ष डॉ. गोपाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर ₹अभिनंदन ग्रंथ₹ का प्रकाशन बहुत शीघ्र किया जा रहा है। ब्रज साहित्य सेवा मण्डल के महासचिव डॉ. राधाकांत शर्मा ने बताया है कि इस ₹अभिनंदन ग्रंथ₹ में प्रख्यात साहित्यकार, पत्रकार, अध्यात्मविद् व समाजसेवी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी से सम्बंधित महानुभाव अपना

लेख, संस्मरण व कविता आदि हमारे पास 15 अक्टूबर 2025 तक हमें व्हाट्सएप नम्बर -9412178154 पर अपने चित्र सहित भेजने की कृपा करें।

गाज़ियाबाद पुलिस ने 21 लापता लोगों को परिवार से मिलाया

हर बीट अवसर को दी गई जिम्मेदारी : कमिश्नर जे रविंद्र गौड़

अम्बुज उपाध्याय

गाजियाबाद पुलिस कमिश्नरेट द्वारा लापता बच्चों व बुजुर्गों को परिवार से मिलाने का अभियान चलाया गया। पुलिस कमिश्नर जे रविंद्र गोड़ ने बताया कि गाज़ियाबाद क्षेत्र में पिछले 45 दिनों में पुलिस ने अभियान के दौरान 21 गुमशुदा लोगों और बच्चों को सुरक्षित खोज निकाला और उनके परिवार से उन्हें मिलाया इनमें नौ महिलाएं छः नाबालिक बालक/बालिकाएं सहित सात लोगों को परिवार से मिलने का काम किया है।

गाज़ियाबाद पुलिस कमिश्नरेट में चला अभियान

गाज़ियाबाद पुलिस कमिश्नर जे रविंद्र गौड़ ने बताया की गुमशुदगी या गुस्से में घर छोड़कर चले जाने की शिकायतों एवं सूचनाओं पर गाज़ियाबाद पुलिस ने त्वरित करते हुए उनकी सकुशल वापिसी के लिए स्थानीय लोगों पूछताछ के साथ-साथ CCTV फुटेज खंगालना , मुखबिर तंत्र को सक्रिय किया, गुमशुदा लोगों के फोटो दिखाना, ऑटो रिक्शा, बस अड्डा और रेलवे स्टेशनों पर पूछताछ की गई ।

गाज़ियाबाद कमिश्नरेट में लागू बीट प्रणाली का मिल रहा हैं फ़ायदा

गाज़ियाबाद एडिशनल पुलिस कमिश्नर आलोक प्रियदर्शी ने बताया कि जिले के सभी थानों में बीट प्रणाली लागू है जिसकी पुलिस कमिश्नर लगातार मॉनीटरिंग कर रहे हैं , हर बीट सिपाही हेड कांस्टेबल को बीट से संबंधित जिम्मेदारी दी गई है साथ ही मुखबिर की मदद और अस्पतालों एवं थानों , बस स्टैंड के रिकॉर्ड भी सार्थक सिद्ध हुए हैं , पुलिस ने पिछले 45 दिन में संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हुए 21 लोगों को उनके परिवार से मिलाया है लापता होने वालों में नाबालिक बालक/बालिकाएं, महिलाएं ,बुजुर्ग सहित अन्य शामिल है ।

21 लापता लोगों का जोन वार विवरण निम्न प्रकार है-

नगर जोन-05
ट्रांस हिण्डन जोन-07
ग्रामीण जोन- 09

बेला बॉडी लोशन

बेला (Jasminum sambac / Arabian Jasmine) के पुष्पों से निर्मित बॉडी लोशन सौंदर्य व सुगंध चिकित्सा (Aromatherapy) में विशेष स्थान रखता है। यह त्वचा को नमी, कोमलता और प्राकृतिक सुगंध प्रदान करता है। नीचे इसकी पूर्ण निर्माण विधि (100ml के लिए) व उपयोगिता दी गई है ----------

1- मुख्य घटक -------

घटक/ मात्रा/ गुण व कार्य

(1) बेला पुष्प अर्क/ (जलसत्व या सोलवेंट एक्सट्रैक्ट) 30 ml/ सुगंध, त्वचा शांत करने वाला।

(2) एलोवेरा जेल (pure)/ 20 ml/ नमी, त्वचा को ठंडक।

(3) नारियल तेल (कच्चा/वर्जिन)/ 15 ml/ कोमलता व पोषण।

(4) शिया बटर (Shea Butter)/ 10 gm/ त्वचा को गहराई से नमी देता है।

(5) बादाम तेल/ 10 ml/ विटामिन-E, त्वचा पोषण।

(6) इमल्सिफाइंग वैक्स (ई. डब्ल्यू. जी. या बी. टी. एम. एस.)/ 5 gm/ तेल और जल को मिलाने हेतु।

(7) ग्लिसरीन (प्राकृतिक)/ 5 ml/ त्वचा को मॉइस्चराइज करता है।

(8) विटामिन-E ऑयल/ 3 ml/ ऐंटीऑक्सिडेंट।

(9) प्रिज़र्वेटिव (जैसे Geogard ECT या Optiphen)/ 1 ml/ संक्रमण से सुरक्षा।

(10) डिस्टिल्ड वाटर/ 20 ml/ जल अंश।

2- निर्माण विधि -------

1- ऑइल फेज (तेल आधारित मिश्रण) ----

(1) शिया बटर, नारियल तेल, बादाम तेल और इमल्सिफाइंग वैक्स को, एक साथ डबल बॉयलर में हल्का गर्म करें। जब तक वैक्स पूरी तरह पिघल न जाए।

(2) वॉटर फेज (जल आधारित मिश्रण) ----डिस्टिल्ड वाटर, बेला अर्क, ग्लिसरीन और एलोवेरा जेल को दूसरी कटोरी में मिलाएं और हल्का गर्म करें (करीब 70C तक)।

(3) इमल्सीफिकेशन ------ दोनों फेज को समान तापमान (70C) पर मिलाकर धीरे-धीरे वॉटर फेज को, ऑइल फेज में डालते जाएं और लगातार हैंड ब्लेंडर से मिक्स करते रहें।

(4) कूलिंग फेज ---- मिश्रण के ठंडा होने पर, इसमें विटामिन-E ऑयल व प्रिज़र्वेटिव डालें और अच्छी तरह मिक्स करें।

(5) बॉटलिंग -----अब तैयार लोशन को अच्छी तरह स्वच्छ की हुई बोतल में भर लें। ठंडी जगह पर स्टोर करें।

(6) शेल्फ लाइफ ---- 3–6 माह (प्रिजर्वेटिव के साथ)।

3- उपयोग विधि -----

(1) नहाने के बाद हल्के गीले शरीर पर लगाएं।

(2) दिन में 1–2 बार उपयोग करें।

(3) चेहरे के लिए भी, उपयोग कर सकते हैं। यदि त्वचा सामान्य या रूखी हो।

4- उपयोगी -------

(1) त्वचा को गहराई से मॉइस्चराइज करता है।

(2) बेला की सुगंध मानसिक तनाव कम करती है (Aromatherapeutic effect)।

(3) त्वचा पर प्राकृतिक चमक लाता है।

(4) एलर्जी-प्रवण त्वचा के लिए सौम्य।

अभिषेक सिंह राठौड़ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिन की दी शुभकामनाएं

परिवहन विशेष न्यूज

भाजपा रांची महानगर नेता अभिषेक सिंह राठौड़ ने कहा कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के आज 75 वा जन्मदिन है 17 सितंबर 1950 में जन्मे पीएम मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बने हैं अब तक के उनके कार्य काल में कई लाभकारी योजनाएं शुरू की गई है जिनके जरिए लोगों को मुक्त अनाज से लेकर 300 यूनिट फ्री बिजली तक मिल रही है और उनके तमाम स्कीम के जरिए हुए वे घर-घर पहुंचे हैं उनके कार्यकाल की शुरुआत से अब तक लागू की गई इन योजनाओं में अपने घर का सपना पूरा करती प्रधानमंत्री आवास योजना से लेकर लोगों को मुक्त इलाज के लिए आयुष्मान भारत योजना और 300 यूनिट मुफ्त बिजली के लिए शुरू की गई पीएम सूर्यघर योजना तक शामिल है ऐसे ही मोदी सरकार की कुछ बड़ी योजनाएं के बारे में बताते हुए श्री राठौर ने कहा कि मोदी सरकार ने गरीबों के अपने घर का सपना पूरा करने के लिए 25 जून 2015 को प्रधानमंत्री के रूप में अपने पहले कार्यकाल के दौरान पीएम आवास योजना की शुरुआत की थी आंकड़ों के मुताबिक मार्च 2025 तक कुल 4.21 करोड़ घर बनाए जा चुके हैं वहीं विजय वर्ष 2015-16 से चल रही इस स्कीम का विस्तार 2029 तक किया गया है केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 3.06 लाख करोड रुपए के परिव्यय से अतिरिक्त 2 करोड़ ग्रामीण घरों के निर्माण के प्रस्ताव को मंजूरी दी हैं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के हर व्यक्ति को बैंकिंग शिवाय भैया करने का उपदेश से 28 अगस्त 2014 को पीएम जन धन योजना की शुरुआत की थी इसके तहत जीरो बैलेंस अकाउंट ओपन कराया जा सकता है इसके साथ ही खाताधारक को ओवरड्राफ्ट सर्विस के जारी ₹10,000 रुपए की निकासी के साथ ही रुपए डेबिट कार्ड ₹2 लाख का दुर्घटना बीमा कवर समेत तमाम सुविधाएं भी मिलती है अटल पेंशन योजना APY भारत सरकार द्वारा शुरू की गई यह एक सामाजिक सुरक्षा योजना है जिसे 9 में 2015 को असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले के लिए पेंशन पक्की करना है इसके तहत 18 से 40 बरस की आयु के नागरिक अकाउंट खोल सकते हैं और नियमित रूप से योगदान देकर 60 वर्ष की आयु के बाद हर महीने 1000 से ₹5000 तक पेंशन पा सकते हैं अप्रैल 2025 तक या पेंशन स्कीम के तहत खोले गए खातों की संख्या 7.65 करोड़ से अधिक हो चुकी है

पीएम मोदी के पहले कार्यकाल के दौरान एक में 2016 को गरीबों को चूल्हे के धुएं से राहत देने और स्वच्छ ईंधन उपलब्ध कराने का दिशा में कदम उठाते हुए पीएम उज्जवला योजना की शुरुआत की गई थी इसके तहत बीपीएल परिवारों को फ्री गैस कनेक्शन और सब्सिडी पर एलपीजी सिलेंडर मिलते हैं बीते 1 मैं 2025 को ही इस स्कीम ने 9 साल पूरे किए हैं इस योजना के जरिए 1 मार्च 2025 तक पूरे भारत में 10.33 करोड़ कनेक्शन दिए जा चुके हैं

साल 2015 में ही मोदी सरकार द्वारा प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना की शुरुआत की गई थी जिसमें सिर्फ 436 रुपए सालाना की प्रीमियम पर इसके तहत ₹2 रुपए का इंश्योरेंस कवर मिलता है इस लाभ का 18 से 55 साल के व्यक्ति से लेकर देश की सबसे सस्ती लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी में शामिल है

आसमान भारत योजना लोगों को मुफ्त इलाज मुहैया कराने के लिए पीएम मोदी सरकार ने आयुष्मान भारत योजना की शुरुआत 23 23 सितंबर 2018 को की गई थी जिससे ₹500000 तक मुफ्त इलाज कराया जा सकता है केंद्रीय मंत्रिमंडल से बीते साल 11 सितंबर 2024 को आयुष्मान भारत योजना(एबी पीएम-जेएवाई) के विस्तार को मंजूरी दी थी और अब 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों को इसमें शामिल किया गया है फिर उनकी आए चाहे जो भी हो इस विस्तार से लगभग 4.5 करोड़ परिवारों जिम 6 करोड़ वरिष्ठ नागरिक शामिल है स्कीम के तहत अब तककरीब 34.7 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड जारी किया जा चुका है

पीएम किसान सम्मान निधि योजना खासतौर पर किसानों का फायदा पहुंचाने के लिए पीएम मोदी कार्यकाल में शुरू की गई यह सबसे पॉपुलर सरकारी स्कीम में से एक है इसकी शुरुआत 24 फरवरी 2019 को की गई थी और इनके अंतर्गत छोटे और सीमांत किसानों को ₹6000 सालाना की अधिक मदद तीन किस्तों में दी जा रही है इस योजना के तहत अब तक 20 किस किसानों के अकाउंट में जारी की जा चुकी है 2 हेक्टर से कम जमीन वाले को 85% से ज्यादा भारतीय किसानों के लिए मोदी सरकार ने यह लाइफ लाइन साबित हुई।

हादसे में मौत हो गई मौत को लेकर ग्रामीणों में आक्रोश

परिवहन विशेष न्यूज

बिनावर बदायूं। भारतीय किसान यूनियन थाना बिनावर के गांव सेमर मैई पुलिस की दविश में शाकिर अली 50 वर्षी 15 सितंबर रात्रि को हादसे में मौत हो गई मौत को लेकर ग्रामीणों में आक्रोश भारतीय किसान यूनियन के मंडल प्रवक्ता राजेश कुमार सक्सेना गांव सेमरमैई दलदल के साथ आज मैयत पर पहुंचे उन्होंने कहा मासूम तीन बच्चे जो अनाथ हो गए हैं मां-बाप दोनों ही खत्म हो गए मां का इंतकाल कई वर्ष पूर्ण हो चुका जिसका भरण पोषण और उनका जीवन यापन करने के लिए शाकिर अली ही बचे हुए थे परंतु 15 सितंबर की रात को पुलिस दविश देने गई जिनके तांडव से शाकिर अली की मौत हो गई

इस अवसर पर वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष ठाकुर अजय पाल सिंह ने कहा इन बच्चों को न्याय मिलना चाहिए सदर तहसील अध्यक्ष ठाकुर अर्जुन सिंह ने कहा इन बच्चों को सरकार 50 लाख का मुआवजा प्रदान कराये प्रतिनिधि मंडल में ब्लॉक सलारपुर अध्यक्ष पप्पू सैफी ठाकुर कृष्ण पाल सिंह बृजपाल प्रजापति साबिर अली भंवर पाल सिंह सदर तहसील उपाध्यक्ष केसर अली सुरेश दीवान भूरे अली नन्हे राजपूत फैयाज अली समेत दर्जनों पदाधिकारी मौजूद रहे जिला प्रशासन ने बच्चों के साथ वादा खिलाफी की तो होगा बड़ा आंदोलन।

राजस्व निरीक्षक तथा पुलिस की मौजूदगी में हुआ जानलेवा हमला पुलिस ने अब तक नहीं की दबंगों के खिलाफ कोई कार्रवाई। पुलिस की कार्यप्रणाली पर उठ रहे सवाल

परिवहन विशेष न्यूज

जरीफनगर (बदायूं) न्यायालय के पारित आदेश के वाद खेत की जमीन पर ठिए लगवाने पहुंचे राजस्व निरीक्षक पुलिस बल की मौजूदगी में खेत स्वामी के पति पर हुआ जानलेवा हमला जिसकी तहरीर थाना पुलिस को दी गई तथा इसकी वीडियो भी वायरल हो रही है, पीड़ित का आरोप सत्ता पक्ष के नेताओं के दबाव के चलते थाना पुलिस नहीं कर रही कोई कार्रवाई नगर पंचायत दहंगवा निवासी मधुबाला पत्नी गिरीश कुमार ने थाना पुलिस को तहरीर देकर अवगत कराया है कि उनके खेत ग्राम अंतर में है जो की मौके पर गाटा संख्य 263 का रकबा बहुत कम होने के कारण इस संबंध में माननीय न्यायालय सहसवान के यहां पर मुकदमा दायर किया था बाद में न्यायालय उप जिला अधिकारी के पारित आदेश के अनुपालन में राजस्व निरीक्षक सतीश चंद्र शर्मा ने पुलिस बल मौजूदगी में 19 नवंबर सन 2023 को पक्के ठिए लगाए गए राजस्व निरीक्षक एवं पुलिस बल के साथ चले जाने के बाद अंतर निवासी रामफल, पुत्र डोरी, मीना पत्नी रामफल दौजी पुत्र देवी और प्रसादी पुत्र शोभाराम ने माननीय न्यायालय के आदेश के अवेहलना कर गंदी गंदी गलियां व जान से मारने की धमकी देते हुए पक्के ठिए उखाड़ दिए गए और सीमांकन चिन्ह मिटा दिए गए इस संबंध में इन चारों के खिलाफ माननीय न्यायालय पर न्यायाधीश सहसवान में विचाराधीन है ।तथा तहरीर में बताया गया है कि दिनांक 30 मई 2025 को माननीय न्यायालय द्वारा पुनः ठिए लगवाने के आदेश पारित हुआ राजस्व निरीक्षक किशन लाल ने न्यायालय के आदेश अनुपालन में दिनांक 13 9

25 को ठिए लगवाने मौके पर पहुंचे उनके साथ में जमीन स्वामी भी था राजस्व निरीक्षक किशन लाल मौके पर चारपाई पर बैठकर और जमीन स्वामी को गंदी-गंदी गालियां और जान से मारने की धमकी देते हुए रामफल ने अपने बेटे विकास व अपनी पत्नी मीना से लोहे के गोदारे से प्रहार करने को उकसा दिया मौके पर मौजूद लोगों ने बड़ी मुश्किल से मीना के प्रकार प्रहार से उन्हें बचाया गया इस दौरान वहां मौजूद किसी व्यक्ति ने वीडियो भी बना ली उसके बावजूद भी थाना पुलिस ने दबंगों के खिलाफ कोई कार्रवाई करना उचित नहीं समझा जिसकी वीडियो भी जमकर वायरल होती नजर आ रही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वां जन्मदिन के अवसर पर विशेष स्वास्थ्य पर चर्चा : डॉ हृदयेश कुमार

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के 75वें जन्मदिन पर श्री राम मंदिर परिसर सेक्टर 3 फरीदाबाद में पूजा अर्चना करते हुए यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के लिये अच्छे स्वास्थ्य और लंबी उम्र की कामना करते हुए विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवाओं पर जागरूक अभियान शुरू किया है जिसमें हर सप्ताह समाज हित में लोगों को स्वास्थ्य के प्रति खान पान के लिए जरूरी जानकारी दे रहे हैं डॉ हृदयेश कुमार ने बताया कि हम अपने ट्रस्ट द्वारा समाज हित में सभी लोगों को जानकारी देते हुए पूरे भारत वर्ष में लोगों को जागरूक करेंगे अगले महीने में स्पेशल स्वास्थ्य पर एक किताब जिसका नाम (स्वास्थ ही जीवन की पूंजी है) है जिसमें विस्तार से बताया गया है हमारा मुख्य उद्देश्य भारत स्वास्थ्य और शिक्षा में सबसे अच्छा हो इस लिए आप सभी की सेवा में समर्पित हो कर सेवा कर रहे हैं और

किडनी हमारे शरीर का एक जरूरी अंग है इसलिए इसका ख्याल रखना जरूरी है। नाश्ते में कुछ ऐसे फूड्स हैं जो किडनी को नुकसान पहुंचाते हैं। यह चिंता की बात इसलिए है क्योंकि बेहद कम लोग ही यह जानते हैं कि इन्हें खाना सेहत के लिए काफी हानिकारक होता है।

किडनी हमारे शरीर में बेहद अहम अंगों में से एक है।

इसलिए इनकी खास देखभाल करना जरूरी है।

हालांकि, कुछ ऐसे फूड्स है, जो इसे नुकसान पहुंचाते हैं।

लाइफस्टाइल डेस्क, नई दिल्ली। किडनी हमारे शरीर के अहम अंगों में से एक है और इसलिए इसकी सेहत का ख्याल रखना सबसे ज्यादा जरूरी है। हम जो भी खाते हैं, उसका सीधा असर हमारी सेहत पर पड़ता है। इसलिए हेल्थ एक्सपर्ट्स भी हमेशा हेल्दी मील लेने की सलाह देते हैं। खासकर ब्रेकफास्ट हमेशा हेल्दी होना चाहिए, ताकि हमारे दिन की शुरुआत सही तरीके से हो और इससे सेहत भी दुरुस्त रहे।

हालांकि, कुछ ऐसे फूड्स हैं, जिन्हें कई लोग बड़े चाव से नाश्ते में खाते हैं और यह उन्हें यब पता भी नहीं होता कि ये ब्रेकफास्ट उनकी सेहत को नुकसान पहुंचा रहा है। खासकर किडनियों को। आज इस आर्टिकल में मैरिंगो एशिया हॉस्पिटल्स गुरुग्राम में नेफ्रोलॉजी और रीनल ट्रांसप्लांटेशन के क्लिनिकल डायरेक्टर और एचओडी डॉ. शशिधर श्री निवास से जानेंगे ऐसे ही कुछ ब्रेकफास्ट ऑप्शन के बारे में बताएंगे, जो चोरी-छिपे आपकी किडनी को बीमार बना रहे हैं।

बाजार में मिलने वाले फलों के रस, जिन्हें अक्सर हेल्दी बताया जाता है, उनमें हाई मात्रा में

एक्स्ट्रा चीनी हो सकती है और साबुत फलों में पाए जाने वाले फाइबर की कमी हो सकती है। इसमें मौजूद शुगर वजन बढ़ाने, इंसुलिन रेजिस्टेंट और ब्लड शुगर के लेवल को बढ़ाने में योगदान करती हैं, जो सभी किडनी की हेल्थ पर बुरा प्रभाव डालते हैं। साथ ही फाइबर की कमी ब्लड शुगर में तेजी से बढ़ोतरी का कारण भी बनती है।

योगर्ट एक हेल्दी नाश्ता हो सकता है, लेकिन इसकी फ्लेवर्ड वेरायटीज अक्सर सेहत को नुकसान ही पहुंचाती है। इसमें आमतौर पर एक्स्ट्रा शुगर, आर्टिफिशियल फ्लेवर और फॉस्फेट होते हैं, जो किडनी पर दबाव डाल सकते हैं। ऐसे में प्रोसेस्ड डेयरी प्रोडक्ट्स में बड़ी मात्रा में एक्स्ट्रा फॉस्फेट पाया जाता है, जो किडनी हेल्थ के लिए हानिकारक होते हैं। इससे न सिर्फ किडनी पर दबाव पड़ता है, बल्कि सूजन, ब्लड प्रेशर भी बढ़ सकता है और पहले से मौजूद डायबिटीज या हार्ट डिजीज जैसी समस्याएं को बदतर बना सकता है।

शुगरी सीरियल्स कई लोगों के नाश्ते का हिस्सा होते हैं। हालांकि, इसमें मौजूद हाई शुगर कंटेंट और आर्टिफिशियल कंटेंट किडनी की सेहत पर बुरा असर डाल सकते हैं। बहुत ज्यादा चीनी इनटेक करने से मोटापे और इंसुलिन रेजिस्टेंट को बढ़ावा मिलता है, जो दोनों ही किडनी डिजीज के मुख्य रिस्क फैक्टक हैं। इसके अलावा, इन सीरियल्स में अक्सर जरूरी पोषक तत्वों की कमी होती है, जिससे खाली कैलोरी मिलती है, जो पूरी सेहत के लिए ठीक नहीं होती।

प्रोसेस्ड मीट

बेकन, सॉसेज और सलामी जैसे प्रोसेस्ड मीट नाश्ते के लिए एक लोकप्रिय ऑप्शन माने जाते हैं। हालांकि, कम लोग ही यह जानते हैं कि नाश्ते में इन्हें खाना आपकी किडनी के लिए हानिकारक हो सकता है। नेशनल किडनी फाउंडेशन में पब्लिश एक अध्ययन से पता चलता है कि प्रोसेस्ड मीट को ज्यादा मात्रा में खाने से उनमें मौजूद सोडियम और फास्फोरस की हाई मात्रा क्रोनिक किडनी डिजीज (सीकेडी) का खतरा बढ़ाते है। इसके अलावा, प्रोसेस्ड मीट में नाइट्रेट और नाइट्राइट जैसे प्रीजर्वेटिव्स होते हैं, जो किडनी पर दबाव डालते हैं।

फास्ट फूड ब्रेकफास्ट सैंडविच आमतौर पर काफी सुविधाजनक माने जाते हैं और इसलिए यह कई लोगों का पसंदीदा नाश्ता होता है। हालांकि, इसमें एक्स्ट्रा सोडियम, प्रीजर्वेटिव और अनहेल्दी फैट होता है। ये सभी तत्व समय के साथ ब्लड प्रेशर बढ़ा सकते हैं, कोलेस्ट्रॉल लेवल को बढ़ा सकते हैं और किडनी की फंक्शनिंग पर दबाव डाल सकते हैं।

बीते कुछ समय से लोगों के बीच इंस्टेंट नूडल्स का क्रेज काफी ज्यादा बढ़ गया है। यह एक झटपट होने वाले नाश्ते के रूप में काफी ज्यादा पॉपुलर है, लेकिन इसमें मौजूद सोडियम की हाई मात्रा किडनी की सेहत के लिए एक बड़ा खतरा पैदा करती है। फ्लेवर पैकेट में अक्सर नमक और एमएसजी होता है, जो डिहाइड्रेशन का कारण बन सकता है और ब्लड प्रेशर बढ़ा सकता है। यह दोनों की कंडीशन किडनी फंक्शनिंग के लिए हानिकारक हैं।

मैदे से बने और सिरप में डूबे पैनकेक और वॉफल में सिंपल कार्बोहाइड्रेट और चीनी की मात्रा ज्यादा होती है, जिससे वजन बढ़ सकता है और ब्लड शुगर बढ़ सकता है। सिरप और टॉपिंग में अक्सर हाई फ्रुक्टोज कॉर्न सिरप होता है, जो किडनी पर और ज्यादा दबाव डाल सकता है।

लेकिन आप को अपने आस पास के किसी भी अच्छे डॉक्टर से परामर्श जरूर लेना है बिना किसी डॉक्टर की सलाह के कोई भी दवाई नहीं लेनी चाहिए आप स्वास्थ्य हैं तो सब अच्छा है।

बुजुर्गों की सेवा का फ़ल : जब कोई बुजुर्ग निशब्द तुम्हारे झुके सिर पर अपनी कंपकंपाती उंगलियां फिरादे, समझो वरदान ख़ुशी आशीर्वाद एक साथ मिला

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारत आदि-अनादि काल से ही संस्कारों की खान रहा है। यहां की मिट्टी में ही गॉड गिफ्टेड संस्कारों की ऐसी अदृश्य शक्ति समाई हुई है कि मानवजन्म से ही संस्कारों की प्रतिभा मानवीय जीवों में समाहित हो जाती है इसमें कोई दो राय नहीं है, परंतु जीव की उम्र बढ़ने के साथ-साथ पाश्चात्य संस्कृति की ललक अनेक अपवाद स्वरूपी मनीषियों में समाहित हो जाती है, जो बड़े बुजुर्गों का सम्मान तो नहीं परंतु अनादर करने पर उतारू हो जाते हैं? जिससे समाज में यह दूषित भावना पनपने का संदेह बना रहता है। इसलिए हम आज के युग में देख रहे हैं कि शासन- प्रशासन सामाजिक संस्थाएं, बुद्धिजीवी वर्ग, बड़े बुजुर्गों का सम्मान सुनिश्चित करने हमारी हजारों वर्ष पुरानी परंपरा, धरोहर और वैचारिक शक्तिबल को संरक्षित, सुरक्षित करने के लिए अनेक वेबिनार, कार्यक्रम, अभियान चलाए जा रहे हैं ।

साथियों बात अगर हम वर्तमान परिपेक्ष्य की करें तो हमारे बड़े बुजुर्गों का ध्यान रखनें की जवाबदारी व जिम्मेदारी युवा वर्ग की अधिक है जिन्हें भारतमाता की गोद से मिले संस्कारों को प्राथमिकता से सजग होकर रेखांकित करना अनिवार्य है। बड़े बुजुर्गों की सेवा का उन्हें मान-सम्मान देकर अत्यधिक पुण्य कमाना है। क्योंकि जब कोई बुजुर्ग निशब्द तुम्हारा तुम्हारे झुके सिर पर अपनी कंपकंपाती उंगलियां फिरादे तो समझो वरदान ख़ुशी और आशीर्वाद एकसाथ तुम्हें यूं ही मिल गया क्योंकि बड़े बुजुर्गों में ईश्वर अल्लाह का एक रूप समाहित होता है।

साथियों बात अगर हम वरदान ख़ुशी और आशीर्वाद की करें तो वैश्विक स्तरपर भारत सबसे पुरानां आध्यात्मिकता में गहरीआस्था रखने वाला देश है यहां आध्यात्मिकता का विस्तार तेजी से हुआ है जो एक अच्छी बात है परंतु मेरा मानना है कि उसी तेजी के साथ मनीषियों की आस्था माता-पिता, बड़े बुजुर्गों के मान सम्मान सेवाभाव के प्रति अपेक्षाकृत कम होकर संकुचित होने के संकेत हाल के पश्चात संस्कृति की घुसपैठ के चलते मिल रहे हैं।कई परिवार टूट रहे हैं, वृद्धाआश्रमों में बुजुर्गों की तादाद बढ़ रही है आखिर ऐसा क्यों ? मैंने अनेक ऐसे मनीषियों को भी देखा है जो अपने माता-पिता बड़े बुजुर्गों से तो अलग रहते हैं, उनकी सेवा खुशी का ध्यान नहीं परंतु आध्यात्मिकता क्षेत्र में उनके नामपर बहुत बड़े सेवा भावी होंनें और आस्था का डंका बजता है यह देख मुझे बहुत हैरानी होती है।

साथियों बात अगर हम ऐसे बड़े बुजुर्गों की करें जिनको अपनों ने ठुकराया है तो मैंने स्वयंम कुछ बुजुर्गों से बात की तो उनका बड़प्पन देखिए कि अपने दुख दर्द बांटने की अपेक्षा उन्होंने अपनों की तारीफ ही की, वाह क्या बात है, आप ईश्वर अल्लाह के तुल्य हैं कहकर अनायास ही मेरे हाथ उनके चरणों में झुक गए तो उनकी आंखों में आंसू आ गए।

साथियों ऐसे अनेक पीड़ित हर मेट्रोसिटी, शहर, गांव में हैं ऐसे किस्से हमें अपने शहरों में भी ज़रूर देखने को मिलते होंगे जिसे हम सब को मिलकर इस स्थिति को बदलना की ओर कदम बढ़ाना ही होगा।

साथियों बात अगर हम बड़े बुजुर्गों के वरदान खुशी और आशीर्वाद की करें तो मेरा मानना है कि इनकी आशीर्वाद वरदान इस सृष्टि में सबसे बड़ा है इसके तुल्य किसी आध्यात्मिक आस्था में आशीर्वाद वरदान नहीं होंगे बस हम मनीषियों को यह बात अपने हृदय व मस्तिष्क में फिट करनी होगी।

साथियों बात अगर हम नई पीढ़ी, युवकों की करें तो, बूढ़े व्यक्ति के पास स्मृतियां, जवान के पास कल्पनाएं हैं, यदि घर-घर दोनों का मेल बने तो कमाल हो जायेगा। धरती पर स्वर्ग उतर आयेगा, जबकि नई पीढ़ी को चाहिए माता-पिता के उत्तम गुणों के वारिस बनें, अपने बड़ों को मान दें, क्योंकि वृद्धों का जो वर्तमान है, वही युवाओं का भविष्य है। इसलिए यदि नई पीढ़ी अपने बड़े-बुजुर्गों का आशीर्वाद वरदान लेंने, उनका देवताओं की तरह पूजन करने, मिलकर रहने, सहयोग करने की सोच अपना ले, तो घरों के अन्दर प्रेम, सद्भाव जाग जाएगा और धरती में स्वर्ग उतर आयेगा।

साथियों जरूरत है युवा-वर्ग माँ-बाप की अवहेलना न करे। बड़ों के प्रति सम्मान की भावना रहे। क्योंकि बूढ़ी आंखों में जब आंसू आते हैं, हृदय पर जब व्यंग बाण लगते हैं, शरीर काम नहीं करता और नींद आती नहीं तो ऐसे में व्यक्ति का जीना कठिन हो जाता है। वैसे भी बड़े-बुजुर्ग हमारी अमूल्य सम्पत्ति हैं। उनके पास अनुभवों का खजाना है, अतः उनके अनुभवों का लाभ उठाएं। कभी भूलकर भी उनसे अपशब्द न कहें। साथ ही अपने बच्चों को बड़ों के पास बैठने का अवसर दिया करें, क्योंकि उनके आशीर्वादों से बच्चे फलते-फूलते हैं। अन्य लोग स्वयं भी बुजुर्गों के पास दो मिनट बैठकर उनकी बात सुनें, उनका हाल-चाल पूछें।

जिस व्यक्ति के सिर पर माँ-बाप का साया है, वह धन्य है। घर में बड़े बुजुर्गों का होना बहुत सौभाग्य माना जाता है और माँ-बाप की सेवा करने वाली सन्तान श्रेष्ठ। बच्चे को माता- पिता से आशीर्वाद माँगना नहीं पड़ता, अपने आप हृदय से मिल जाता है और माँ-बाप के हृदय से निकले हुए इस आशीष की कोई समानता नहीं है।बड़ी विडंबना का समय है पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण आज के युवा माँ-बाप को नमन-वन्दन करने में लजाते हैं, जब कि कोई बच्चा व युवा जब अपने माता-पिता, दादा-दादी अथवा सद्गुरु के चरणों में शीष झुकाता है, तो उनके दिल में आनन्द की हिलोर उठने लगती है और तेजरूपी प्रकाश की किरणें विनम्र होते ही चरणों में झुके सुपुत्र, सदशिष्य के अन्दर प्रवेश कर जाती हैं। जिसके प्रतिफलस्वरूप उस युवा को आयु, विद्या, यश और बल की प्राप्ति होती है। ये चारों अनमोल उपहार किसी अन्य कीमत एवं किसी अन्य स्थान से प्राप्त नहीं हो सकते। इनका केन्द्र तो माता-पिता, वृद्धजन एवं गुरुजन ही हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि बुजुर्गों की सेवा का फल बहुत मीठा हैं, जब कोई बुजुर्ग निशब्द तुम्हारे झुके सिर पर अपनी कंपकंपाती उंगलियां फ़िरा दें समझो वरदान ख़ुशी और आशीर्वाद एक साथ मिला, बड़े बुजुर्गों माता पिता की सेवा तुल्य कोई पुण्य नहीं जीवन का सुख इनके श्री चरणों में है।

2027 तक भारत में लॉन्च होंगी 15 नई हाइब्रिड SUV, लिस्ट में Maruti, Hyundai से लेकर Mahindra तक की गाड़ियां

भारत में हाइब्रिड गाड़ियां तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं क्योंकि ये फ्यूल एफिशिएंसी और दमदार परफॉर्मेंस का संतुलन बनाती हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों की तरह इनमें रेंज की चिंता नहीं होती। भारतीय बाजार में 2027 तक 15 नई हाइब्रिड एसयूवी लॉन्च होंगी। Maruti Suzuki Mahindra Hyundai Kia और Honda जैसी कंपनियां इस दौड़ में शामिल हैं जो विभिन्न हाइब्रिड मॉडल्स पेश करने की तैयारी में हैं।

नई दिल्ली। भारत में हाइब्रिड गाड़ियां तेजी से पॉपुलर हो रही है, क्योंकि यह फ्यूल एफिशिएंसी और दमदार परफॉर्मेंस के बीच बेहतर संतुलन बनाती है। इलेक्ट्रिक वाहनों के विपरीत, हाइब्रिड गाड़ियों में रेंज की चिंता नहीं होती है और न ही उन्हें व्यापक चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत होती है। इसे देखते हुए भारतीय बाजार में 15 नई हाइब्रिड SUV साल 2027 तक लॉन्च होंगी। आइए विस्तार में जानते हैं कि भारत में कौन सी हाईब्रिड गाड़ियां लेकर आने वाली है।

2027 तक आने वाली 15 हाइब्रिड SUV की लिस्ट

आगामी हाइब्रिड SUV (Upcoming Hybrid SUV) संभावित लॉन्च (Expected Launch)

Maruti Escudo 3 सितंबर, 2025
Maruti Fronx Hybrid 2026
Mahindra XUV3XO Hybrid 2026
Mahindra Range Extender SUVs 2026–2027
New-Gen Hyundai Creta 2027
Hyundai Ni1i (7-seater) 2027
New-Gen Kia Seltos 2027
Kia Q4i (3-row SUV) 2027
Honda CR-V 2025 के अंत तक
Honda Elevate Hybrid दिवाली 2026
Honda 7-Seater SUV 2027
New-Gen Renault Duster 2026
Renault Boreal 2026–2027
Nissan C-Segment SUV 2026
Nissan 7-Seater SUV 2026–2027

Maruti Suzuki की आने वाली हाइब्रिड गाड़ियां

भारत की सबसे बड़ी यात्री वाहन निर्माता कंपनी Maruti Suzuki की Grand Vitara पर बेस्ड एक नई मिड-साइज SUV पेश करने की तैयारी कर रही है। कंपनी इसे 3 सितंबर, 2025 को लॉन्च करने वाली है। इसे 1.5L पेट्रोल-हाइब्रिड पावरट्रेन के साथ लेकर आया जाएगा। इसके अलावा, 2026 में मारुति अपनी इन-हाउस विकसित स्ट्रांग हाइब्रिड सिस्टम को फ्रोंक्स हाइब्रिड में पेश करेगी, जिसमें कंपनी की सीरीज हाइब्रिड प्रणाली के साथ 1.2L Z12E पेट्रोल इंजन होगा।

Mahindra की आने वाली हाइब्रिड गाड़ियां

महिंद्रा एंड महिंद्रा 2026 में अपनी XUV 3XO कॉम्पैक्ट SUV के एक स्ट्रांग हाइब्रिड वेरिएंट के साथ हाइब्रिड सेगमेंट एंट्री में कदम रखने की योजना बना रही है। इस मॉडल में एक 1.2L टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल इंजन के साथ एक हाइब्रिड सिस्टम भी होगा। Mahindra BE 6 और XUV.e9 को भी हाइब्रिड सिस्टम के साथ लाने की तैयारी चल रही है। इसमें साल 2026 या 2027 तक रेंज एक्सटेंडर हाइब्रिड पावरट्रेन हो सकते हैं।

Hyundai और Kia की आने वाली हाइब्रिड गाड़ियां

Hyundai मोटर इंडिया अपनी दो हाइब्रिड SUV को लाने की तैयारी कर रही है। इसमें एक नई जनरेशन की क्रेटा हाइब्रिड के साथ ही एक 7-सीटर SUV लाने की तैयारी कर रही है। इन दोनों मॉडलों के 2026 तक आने की उम्मीद है।

Hyundai के साथ ही Kia भी हाइब्रिड सेगमेंट में एंट्री की तैयारी कर रही है। कंपनी नई जनरेशन की सेल्टोस को हाइब्रिड सिस्टम के साथ ला सकती है, जिसके साल 2027 तक लॉन्च होने की संभावना है। सके बाद एक बिल्कुल नई 3-रो वाली SUV भी आएगी, जिसमें हाइब्रिड तकनीक होगी।

होंडा का हाइब्रिड लाइन-अप

होंडा कार्स इंडिया द्वारा अपनी लोकप्रिय वैश्विक हाइब्रिड SUV, जेडआर-वी (ZR-V), को 2025 के अंत तक पेश करने की उम्मीद है। एलिवेट SUV का एक हाइब्रिड वर्जन दिवाली 2026 के आसपास आ सकता है। कंपनी एक नई 7-सीटर SUV पर भी काम कर रही है, जो होंडा के नए मॉड्यूलर प्लेटफॉर्म पर आधारित होगी।

विनफ़ास्ट लाएगी नैनो से भी छोटी इलेक्ट्रिक कार, "एमजी धूमकेतु" को देगी कड़ी टक्कर

परिवहन विशेष न्यूज

वियतनामी वाहन निर्माता Vinfast जल्द ही भारतीय बाजार में अपनी इलेक्ट्रिक एसयूवी VF 6 और VF 7 को लॉन्च करेगी। कंपनी Vinfast Minio Green EV के लिए पेटेंट भी दायर किया है जो टाटा नैनो से भी छोटी होगी। इस 2-डोर इलेक्ट्रिक कार में 14.7 kWh का बैटरी पैक और 20 kW की इलेक्ट्रिक मोटर होगी जो 170 किमी की रेंज देगी। इसका मुकाबला MG Comet से होगा।

नई दिल्ली। Vinfast भारतीय बाजार में जल्द ही अपनी दो इलेक्ट्रिक SUV VF 6 और VF 7 को लॉन्च करने वाली है। कंपनी ने इसकी बुकिंग शुरू कर दी है। कंपनी ने हाल ही में Vinfast Minio Green EV के लिए पेटेंट दायर किया है। यह एक छोटी इलेक्ट्रिक कार होने वाली है। इस इलेक्ट्रिक कार की साइज टाटा नैनो से भी छोटा होने वाला है। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला MG Comet से देखने के लिए मिलेगा। आइए विस्तार में जानते हैं कि Vinfast की यह छोटी इलेक्ट्रिक कार किन खास फीचर्स के साथ आने वाली है?

स्टाइलिंग और फीचर्स

वियतनामी बाजार में, Vinfast Minio Green को एक व्यावसायिक इलेक्ट्रिक वाहन के रूप में ऑफर किया जाता है। इसकी लंबाई 3,090 मिमी है। इसे 2-डोर ऑल-इलेक्ट्रिक सुपरमिनी सेगमेंट में पेश किया जाता है। इसे टॉल-बॉय प्रोफाइल दिया गया है, जो लोगों का काफी आसानी से ध्यान खींचती है। इसमें क्लोज्ड-ऑफ ग्रिल, अर्ध-वृत्ताकार-स्टाइल की हेडलाइट्स और प्रमुख बम्पर डिजाइन दिया गया है। इसमें छोटा बोनट, सर्कुलर व्हील आर्च, 13-इंच के पहिए और पारंपरिक दरवाजे के हैंडल दिए गए हैं। इसके पीछे की तरफ EV में एक शार्क फिन एंटीना, एक फ्लैट विंडस्क्रीन और वर्टिकली स्टैक्ड टेल लैंप भी मिलता है। इसे कुल 6 कलर ऑप्शन में लेकर आया जाएगा।

Vinfast Minio Green का इंटीरियर

इसमें डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले दिया गया है, जो इंफोटेनमेंट सिस्टम के रूप में भी काम करता है। इसमें डैश, दरवाज़े के हैंडल और अपहोल्स्ट्री पर नीले एक्सेंट के साथ एक ग्रे इंटीरियर थीम दिया गया है। बाकी फीचर्स के रूप में रोटरी डायल, कुछ फिजिकल बटन और एक फ्लैट बॉटम 2-स्पोक स्टीयरिंग व्हील दिए गए हैं। इसके साथ ही 4-तरफा एडजस्टेबल ड्राइवर सीट, फैब्रिक सीट अपहोल्स्ट्री और डे-एंड-नाइट इंटीरियर रियरव्यू मिरर भी मिलता है। इसमें पैसेंजर्स की सेफ्टी के लिए ड्राइवर एयरबैग, ABS और ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम जैसे फीचर्स मिलते हैं।

परफॉरमेंस और रेंज

Vinfast Minio Green में 14.7 kWh बैटरी पैक दिया जा सकता है। इसमें इलेक्ट्रिक मोटर 20 kW होगी, जो 27 PS की पावर और 65 Nm का पीक टॉर्क जनरेट करेगा। Minio Green की टॉप स्पीड 80 किमी/घंटा है। NEDC मानकों के अनुसार, रेंज 170 किमी है। EV 12 kW तक की चार्जिंग को सपोर्ट करती है।

नई येज्दी रोडस्टर पुरानी के मुकाबले कितनी बदली?

येज्दी ने हाल ही में 2025 Roadster को नए फीचर्स और डिजाइन बदलावों के साथ लॉन्च किया है। इसमें कटा हुआ रियर फेंडर और स्विंगआर्म-माउंटेड नंबर प्लेट है। नई स्प्लिट-सीट राइडर की पसंद के अनुसार हटाई जा सकती है। टायर को 130/80-17 से बढ़ाकर 150/70-17 किया गया है। बाइक में 34cc लिक्विड-कूल्ड इंजन है जो 29.1hp की पावर देता है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 2.10 लाख रुपये से शुरू होती है।

नई दिल्ली। येज्दी ने हाल ही में 2025 Roadster को लॉन्च किया है। इसे कई नए फीचर्स के साथ लेकर आया गया है, इसके साथ ही इसके डिजाइन में भी कई बदलाव किए गए हैं। इसके डिजाइन में बदलाव की वजह से इसकी स्टाइल को बदलते हैं और इसके चलाने के तरीके को भी बदल सकते हैं। हम यहां पर आपको विस्तार में बता रहे हैं कि नई Yezdi Roadster पुरानी के मुकाबले कितनी बदली है?

नई Yezdi Roadster में एक कटा हुआ रियर फेंडर और एक स्विंगआर्म-माउंटेड नंबर प्लेट होल्डर दिया गया है, जो इसे एक बोल्ड और ज्यादा बॉबर इंसपायर लुक देने का काम करता है। इसमें नई मॉड्यूलर स्प्लिट-सीट दी गई है, जो राइडर के पसंद के आधार पर पीछे की सीट को पूरी तरह से हटाने की अनुमति देती है। इसके सामने की तरफ बदलाव काफी कम है, लेकिन में नया हैंडलबार और एडजस्टेबल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया गया है। इसमें हैंडलबार, क्रैश गार्ड, वाइजर और टूरिंग गियर सहित 20 से ज्यादा एक्सेसरीज के कई कॉम्बिनेशन के साथ छह फैक्ट्री कस्टम किट भी पेश किया जा रहा है।

2025 Yezdi Roadster का चेसिस

बदलावों में मजबूत फ्रेम और एक चौड़ा रियर टायर शामिल है। इसमें सबसे बड़ा बदलाव पीछे की तरफ देखने के लिए मिलता है। इसमें टायर अब 130/80-17 से बढ़कर 150/70-17 हो गया है, जिससे बाइक को एक मजबूत लुक और एक बड़ा संपर्क क्षेत्र मिलता है जो ट्रैक्शन और कॉर्नरिंग स्थिरता में सुधार करेगा। इसके सामने का टायर 100/90-18 यूनिट ही रहता है।

नई Yezdi Roadster में पहले की तरह ही डबल-क्रैडल फ्रेम का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन इसे अपडेटेड मैन्युफैक्चरिंग के जरिए मजबूत किया गया है। इसमें नया सबफ्रेम दिया गया है। इसका सस्पेंशन और ब्रेक में काफी हद पहले जैसा ही है, हालांकि इसमें अपग्रेड स्प्रिंग और डैम्पिंग रेट दिया गया है।

बाकी बदलावों की बात करें तो ऊंचाई में 5 मिमी की बढ़ोतरी करके 795 मिमी हो गई है, जबकि कर्ब वजन 183.4 किलोग्राम हो गया है। Yezdi फ्यूल के बिना कर्ब वजन बताती है, इसलिए 12.5-लीटर टैंक 90 प्रतिशत तक भरा होने पर, वास्तविक आंकड़ा 190-192 किलोग्राम के करीब होना चाहिए।

2025 Yezdi Roadster का इंजन

नई Roadster में संशोधित गियरिंग के साथ Alpha2 इंजन मिलता है। इसमें 34cc लिक्विड-कूल्ड सिंगल-सिलेंडर Alpha2 का इस्तेमाल किया गया है, जो 29.1hp की पावर और 29.6Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह इंजन प्रत्येक मॉडल के लिए अलग तरह से ट्यून किया गया है, इसलिए हम उम्मीद कर सकते हैं कि नई Roadster का अपने सिबलिंग्स से एक अलग कैरेक्टर होगा। इसमें रियर स्प्रोकेट लगाकर फाइनल ड्राइव रेशियो को भी अपग्रेड किया गया है, जिससे कम स्पीड पर राइडबिलिटी में सुधार देखने के लिए मिल सकता है।

2025 Yezdi Roadster की कीमत

नई Roadster की कीमत पुराने की तुलना में 4,000 रुपये महंगी है। नई Yezdi Roadster की एक्स-शोरूम कीमत 2.10 लाख रुपये से शुरू होकर 2.26 लाख रुपये तक पहुंचती है। यह कीमतें वेरिएंट और कलर ऑप्शन के ऊपर निर्भर करती है। इसे दो वेरिएंट में पेश किया गया है, जो Standard और Premium है। Standard वेरिएंट को चार कलर ऑप्शन, जबकि Premium को एक सिंगल, ब्लैक-आउट पेंट स्कीम लेकर आया गया है। Premium में एक फ्लैट हैंडलबार, ब्लैक-आउट रिम और एक चिकनी असेंबली में इंटीग्रेटेड टेल-लाइट/टर्न-इंडिकेटर यूनिट दी गई है।

2026 केटीएम 690 एंड्यूरो आर और 690 एसएमसी आर पेश; नए इंजन, इलेक्ट्रॉनिक्स और डिजाइन से लैस

KTM ने 690 Enduro R और 690 SMC R मोटरसाइकिलें पेश की हैं जिनमें नया इंजन इलेक्ट्रॉनिक्स एर्गोनॉमिक्स और स्टाइलिंग अपडेट हैं। 79hp पावर और 73Nm टॉर्क के साथ इनमें अपडेटेड TFT डिस्प्ले KTMconnect स्मार्टफोन पेयरिंग और कॉर्नरिंग ABS जैसे फीचर्स हैं। सितंबर 2025 में ग्लोबल लॉन्च की उम्मीद है भारत में लॉन्च की तारीख अभी अज्ञात है। आइए इनके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। KTM ने अपनी दो मोटरसाइकिल 690 Enduro R और 690 SMC R को पेश किया है। यह दोनों ही बाइक को पूरी तरह से बदला हुआ इंजन, नए इलेक्ट्रॉनिक्स, अपडेटेड एर्गोनॉमिक्स और नए स्टाइलिंग के साथ लेकर आया गया है। इसके बाद भी यह अपनी अलग ऑफ-रोड और सुपरमोटो पहचान को बरकरार रखती है। आइए जानते हैं कि यह दोनों बाइक किन खास फीचर्स के साथ आने वाली है?

इंजन में हुआ बदलाव

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R को इंजन बदलाव के साथ लेकर आया गया है। इसके साथ ही क्रैंककेस, क्लच और स्टेटर कवर, ऑयल-डिलीवरी सिस्टम और फ्यूल पंप के डिजाइन में भी हल्के बदलाव किए गए हैं। इसमें अपडेटेड वाल्व टाइमिंग दी गई है। इससे इसने लेटेस्ट मानदंडों का पालन करते हुए 79hp की पावर और 73Nm का टॉर्क जनरेट करता है, जो पिछले मॉडल से 5hp ज्यादा है।

इसके साथ ही कंपन को कम करने के लिए रबर इंजन माउंट्स पेश किए गए हैं। इसमें से सरल इंटेक लेआउट के लिए सेकेंडरी एयर सिस्टम को हटा दिया गया है और ज्यादा कॉम्पैक्ट मफलर के साथ एग्जॉस्ट को फिर से तैयार किया गया है। इसमें नई 65-डिग्री ट्विस्ट ग्रिप के कारण थ्रॉटल रिएक्शन को तेज किया गया है।

अपडेटेड टेक्नोलॉजी

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R के लिए बड़ा अपडेट पुराने LCD डैश को एक 4.2-इंच के कलर TFT डिस्प्ले से बदल दिया गया है। इसमें KTMconnect स्मार्टफोन पेयरिंग, USB-C चार्जिंग, संगीत और कॉल कंट्रोल, और टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन जैसी सुविधाएं दी जाती है। इसमें नए बैकलिट स्विचगियर और एक डेडिकेटेड ABS-ऑफ बटन के साथ जोड़ा गया है।

राइडर एड्स में अब लीन-सेंसिटिव कॉर्नरिंग ABS और कॉर्नरिंग MTC मानक रूप से दिया गया है, जिसमें Enduro R में एक रैली मोड जोड़ा गया है, जो एडजस्टेबल ट्रैक्शन और मोटर-स्लिप रेगुलेशन देता है। SMC R को लॉन्च कंट्रोल, 5-स्टेज एंटी-व्हीली, स्लिप एडजस्टर और सुपरमोटो-विशिष्ट ABS सेटिंग्स के साथ एक ट्रैक मोड के साथ लेकर आया गया है।

डिजाइन और चेसिस में बदलाव

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R में अब नई LED हेडलाइट, टेल-लाइट और इंडिकेटर दिया गया है। इसके चेसिस में बदलाव किया गया है और स्टील ट्रेलिस फ्रेम को पहले की तरह बरकरार रखा गया है। इसमें सस्पेंशन ट्यूनिंग अपग्रेड किया गया है।

Enduro R को अपग्रेड बॉडीवर्क, LED लाइटिंग, नए इन-मोल्ड ग्राफिक्स के साथ लेकर आया गया है। इसमें ट्रांसफर्ड सेंटर-स्टैंड माउंट दिया गया है। दोनों WP सस्पेंशन और एक स्टील ट्रेलिस फ्रेम का इस्तेमाल पहले की तरह जारी रखा गया है।

कम होगी लॉन्च?

नई KTM 690 Enduro R और 690 SMC R को सितंबर 2025 में ग्लोबल लेवल पर लॉन्च किया जाएगा। अभी तक इन दोनों के भारत में लॉन्च की तारीख और कीमत की जानकारी सामने नहीं आई है।

फिल्म पुष्पा के विलेन Fahadh Faasil ने खरीदी Ferrari, कीमत इतनी की जानकर उड़ जाएगा होश

मलयालम फिल्म स्टार फहाद फाजिल ने हाल ही में Ferrari Purosangue खरीदी है जो केरल की पहली Purosangue है। सफेद रंग की इस कार को उन्होंने अपनी पसंद के अनुसार कस्टमाइज करवाया है। इस एसयूवी में 6.5-लीटर का पेट्रोल इंजन है। फहाद फाजिल के कार कलेक्शन में Lamborghini Urus Mercedes-Benz G63 AMG Land Rover Defender 90 V8 और Porsche 911 Carrera S जैसी कई लग्जरी गाड़ियाँ शामिल हैं।

नई दिल्ली। मलयालम फिल्म स्टार फहाद फाजिल ने अपनी कार कलेक्शन में एक और नई लग्जरी कार शामिल की है। उन्होंने अपनी पहली फेरारी खरीदी है, और वह कोई आम मॉडल नहीं, बल्कि Ferrari Purosangue है। यह कार केरल राज्य की पहली Purosangue भी है। यह कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है। आइए इसके बारे में विस्तार में जानते हैं कि यह किन खास फीचर्स के साथ आती है और फहाद फाजिल के कार कलेक्शन में और कौन-सी गाड़ियां शामिल है?

फहाद फाजिल ने खरीदी Ferrari Purosangue

फहाद फाजिल ने अपनी इस पहली फेरारी के लिए बियांको सेर्विनो (Bianco Cervino) एक चमकदार सफेद कलर चुना है, जो धूप में बहुत आकर्षक लगता है। उन्होंने इसमें कई अतिरिक्त ऑप्शन भी शामिल किए हैं, जैसे कि फ्रंट बंपर गार्निश और अन्य कार्बन पार्ट्स। कार में ड्यूल-टोन अलॉय व्हील्स भी हैं।

कार के बाहरी हिस्से से लेकर इंटीरियर तक, अभिनेता ने इसे पूरी तरह से अपनी पसंद के अनुसार कस्टमाइज करवाया है। कार के ब्रेक कैलिपर्स चमकीले नीले रंग के हैं, जिस पर सफेद फेरारी लिखा हुआ है। इंटीरियर में उन्होंने अजुरो सैंटोरिनी ब्लू (Azzurro Santorini Blue) लेदर अपहोल्स्ट्री को चुना है, जिसमें सफेद कॉन्ट्रास्ट स्टिचिंग और हेडरेस्ट पर सफेद फेरारी का लोगो लगा है।

Ferrari Purosangue के फीचर्स

Purosangue फेरारी की पहली और फिलहाल एकमात्र एसयूवी है। इसे 2022 में लॉन्च किया गया था और इसे फेरारी के परफॉर्मेंस और एसयूवी का शानदार कॉम्बीनेशन माना जाता है। इसमें एक बड़ा 6.5-लीटर नेचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन दिया गया है। यह 725 PS की पावर और 716 Nm का टॉर्क जनरेट करका है।

Ferrari Purosangue की एक्स-शोरूम कीमत 10 करोड़ रुपये हैं। फहाद फाजिल ने कई कस्टम ऑप्शन को चुना है, जिसकी वजह से उन्हें फेरारी की कार के लिए कहीं ज्यादा कीमत चुकानी पड़ी होगी।

फहाद फाजिल का कार कलेक्शन

फहाद फाजिल के पास कारों का एक शानदार कलेक्शन है। हाल ही में, उन्होंने 53 लाख रुपये की की Volkswagen Golf GTI और 3.5 करोड़ रुपये की Lexus LM 350h Ultra लग्जरी MPV भी खरीदी है। उनके कलेक्शन में पहले से ही Lamborghini Urus, Mercedes-Benz G63 AMG, Land Rover Defender 90 V8, और Porsche 911 Carrera S जैसी कारें शामिल हैं।

महिला निदेशक और विश्व सिनेमा का पुनर्लेखन

✍ विजय गर्ग

महिला निर्देशकों की बढ़ती उपस्थिति का विश्व सिनेमा पर गहरा और परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ा है, जो स्थापित मानदंडों को चुनौती देता है, कहानी कहने में विविधता लाता है, और नए दृष्टिकोणों की पेशकश करता है जो पहले कम प्रतिनिधित्व किए गए थे। यह आंदोलन केवल एक आँकड़ा बढ़ाने के बारे में नहीं है; यह उन कहानियों में एक मौलिक बदलाव के बारे में है जो उन्हें बताती हैं, जो उन्हें बताती हैं, और उन्हें वैश्विक दर्शकों द्वारा कैसे माना जाता है। विविध नैरेटिव और परिप्रेक्ष्य दशकों से, सिनेमाई परिदृश्य को बड़े पैमाने पर पुरुष टकटकी द्वारा आकार दिया गया था - नारीवादी फिल्म सिद्धांत का एक शब्द जिस तरह से महिलाओं को अक्सर पुरुष दर्शकों की खुशी के लिए वस्तुओं के रूप में चित्रित किया जाता है। महिला निर्देशकों ने सक्रिय रूप से इसे खत्म करने के लिए काम किया है, ₹महिला टकटकी₹ की शुरुआत की है जो महिला विषय, अंतर और एजेंसी पर केंद्रित है। इसके कारण फिल्में बनी हैंः

गहराई और जटिलता के साथ केंद्र महिला नायकः जेन कैंपियन (द पियानो, द पावर ऑफ द डॉग), सोफिया कोपोला (लॉस्ट इन ट्रांसलेशन, द वर्जिन सुसाइड), और सेलाइन साइसम्मा (पोर्ट्रेट ऑफ ए लेडी ऑन फायर) जैसे निर्देशक शिल्प कथाएँ जहां महिलाओं को पुरुषों के साथ उनके संबंधों द्वारा परिभाषित नहीं किया गया है, लेकिन पूर्ण, बहुआयामी चरित्र अपनी इच्छाओं, पहचान और संघर्षों की खोज कर रहे हैं।

सहानुभूति, पहचान और सामाजिक मुद्दों के विषयों का अन्वेषण करेंः भारत में गौरी शिंदे (इंग्लिश विंग्लिश) और ज़ोया अख्तर (गली बॉय) के अंतरंग नाटकों से लेकर संयुक्त राज्य अमेरिका में अवा डुवर्ने (13 वीं) के सामाजिक रूप से जागरूक वृत्तचित्रों तक, महिला निदेशक अक्सर अपने काम के प्रति एक अनूठी संवेदनशीलता लाते हैं, लिंग, नस्ल, वर्ग और सामाजिक न्याय के विषयों को संबोधित करते हैं।

चुनौती शैली सम्मेलनोंः महिला निर्देशकों ने सभी शैलियों में काम करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है, एक्शन और हॉरर से लेकर कॉमेडी और ड्रामा तक, जबकि अक्सर पारंपरिक ट्रॉप्स को कम करते हैं। सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के लिए अकादमी पुरस्कार जीतने वाली पहली महिला कैथरीन बिगेलो एक प्रमुख उदाहरण है, द हर्ट लॉकर जैसी एक्शन और युद्ध फिल्मों में अपने प्रशंसित काम के साथ। स्वतंत्र और विश्व सिनेमा का उदय जबकि महिलाएं मूक युग के बाद से फिल्म निर्माण में शामिल रही हैं - ऐलिस गाय-ब्लाचे जैसे अग्रदूतों के साथ - उनके अवसर ऐतिहासिक रूप से पुरुष-प्रधान स्टूडियो प्रणाली में सीमित थे। 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में स्वतंत्र फिल्म आंदोलनों के उदय ने महिलाओं को उन कहानियों का प्रयोग करने और बताने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया जो प्रमुख स्टूडियो द्वारा ग्रीनलिट नहीं हो सकती थीं। इस बदलाव की भूमिका फिल्म निर्माताओं के करियर में थीः

एग्नेस वर्दाः फ्रेंच न्यू वेव की एक प्रमुख आकृति, 5 से 7 मिश्रित वृत्तचित्र और कथा से क्लेओ जैसी उनकी फिल्में, एक मानवतावादी और अक्सर आत्मकथात्मक परिप्रेक्ष्य की पेशकश करती हैं जो क्रांतिकारी थीं।

चैंटल अकरमैनः अपने न्यूनतम और अत्यधिक औपचारिक दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है, अकरमैन की फिल्में, विशेष रूप से जीन डायलमैन, 23, क्वाई डु कॉमर्स, 1080 ब्रुक्सलेस, रोजमर्रा की जिंदगी और पालतू जानवरों के कट्टरपंथी पुनर्निर्माण के लिए नारीवादी सिनेमा के स्थलों को माना जाता है। आज, यह प्रवृत्ति दुनिया भर की महिला निर्देशकों की एक नई पीढ़ी के साथ जारी है जो अंतरराष्ट्रीय प्रशंसा प्राप्त कर रही हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण कोरिया से बोंग जून-हो या मेक्सिको से गिलर्मो डेल टोरो जैसे निर्देशक एक व्यापक घटना का हिस्सा हैं जहां विविध संस्कृतियों की कहानियों को वैश्विक दर्शक मिल रहे हैं, और महिलाएं उस लहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ईरान की एना लिली अमीरपोर (ए गर्ल वॉक होम अलोन एट नाइट), ट्यूनीशिया के कौथर बेन हनिया (द मैन हू सोल्ड हिज स्किन) जैसे फिल्म निर्माता और भारत की किरण राव (लापटा लेडीज) यह साबित कर रही हैं कि सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट कहानियां सार्वभौमिक रूप से गूंज सकती हैं। चुनौतियां और निरंतर विकास प्रगति के बावजूद, महत्वपूर्ण चुनौतियां बनी हुई हैं। अध्ययनों से लगातार पता चलता है कि महिलाओं को अभी भी शीर्ष निर्देशन नौकरियों में कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है, विशेष रूप से उच्च बजट वाली फिल्मों पर। महिलाओं द्वारा निर्देशित फिल्मों को अक्सर उनके पुरुष-निर्देशित समकक्षों की तुलना में बजटीय और बॉक्स ऑफिस असमानताओं का सामना करना पड़ता है।

हालांकि, बातचीत शिफ्ट हो रही है। वकालत के प्रयासों और स्ट्रीमिंग प्लेटफार्मों के उदय के साथ मिलकर महिला निर्देशकों की बढ़ी दृश्यता नए अवसर पैदा कर रही है। फिल्म फेस्टिवल और उद्योग पुरस्कार तेजी से महिलाओं के काम को पहचान रहे हैं और जश्न मना रहे हैं, और ग्रेटा जर्विग की बार्बी जैसी फिल्मों की सफलता ने प्रदर्शित किया है कि महिला-निर्देशित कहानियां समीक्षकों द्वारा प्रशंसित और व्यावसायिक रूप से विजयी दोनों हो सकती हैं। अंत में, महिला निर्देशक सिनेमा के इतिहास में सिर्फ एक फुटनोट नहीं हैं; वे सक्रिय रूप से इसके भविष्य को फिर से लिख रहे हैं। वैकल्पिक गज़ की पेशकश करके, आख्यानों में विविधता लाने, और स्क्रीन पर जो संभव है उसकी सीमाओं को आगे बढ़ाते हुए, वे विश्व सिनेमा को अपनी सभी जटिलता में मानव अनुभव के अधिक समावेशी, प्रामाणिक और चिंतनशील बना रहे हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

-++++++++++++

विशिष्टता की पहचान - पैसा भी दिलाये और रोजगार भी बढ़ाये

चंद्र मोहन

भारत देश में 28 राज्य हैं और हर राज्य क़ी अपनी विशेषता है और अलग से एक अपनी विशिष्ट पहचान भी है. हापुड़ के पापड़, नागपुर के संतरे, इलाहाबाद के अमरुद, आदि नामों से उस राज्य क़ी अपनी एक खास पहचान है.

उत्तर प्रदेश में वर्तमान में 77 भौगोलिक संकेतन (जीआई) टैग प्राप्त उत्पाद हैं और यह देश में सबसे अधिक जीआई टैग वाला राज्य है। सरकार का लक्ष्य 2025-26 तक इस संख्या को बढ़ाकर 152 तक पहुंचाने का है, जिससे यह 150 से अधिक जीआई टैग वाला देश का पहला राज्य बन जाएगा।

काशी क्षेत्रः

उत्तर प्रदेश में काशी क्षेत्र के 32 जीआई टैग प्राप्त उत्पाद हैं, जो इसे एक प्रमुख जीआई हब बनाते हैं।

लक्ष्यः

उत्तर प्रदेश सरकार 2025-26 तक जीआई टैग वाले उत्पादों की संख्या को 152 तक पहुंचाने का लक्ष्य रखती है जिससे वह देश का पहला राज्य होगा जिसके पास 150 से अधिक जीआई टैग होंगे।

जीआई टैग क्या हैः

जीआई टैग किसी क्षेत्र के पारंपरिक उत्पाद की एक विशिष्ट पहचान होती है, जो उसके अद्वितीय गुणों और गुणवत्ता को प्रमाणित करती है। इसका उद्देश्य स्थानीय कारीगरों और किसानों के उत्पादों को पहचान दिलाना, बिक्री बढ़ाना और नकली उत्पादों से उनकी रक्षा करना है।

.भौगोलिक संकेत (जीआई टैग) के मामले में उत्तर प्रदेश सबसे आगे है, जिसके बाद तमिलनाडु का स्थान आता है। जुलाई 2024 तक भारत में कुल 605 GI टैग जारी किए गए थे, जिनमें उत्तर प्रदेश के उत्पाद सबसे अधिक थे।

कौन सा राज्य सबसे आगे है?

उत्तर प्रदेश

जीआई-टैग प्राप्त उत्पादों की संख्या में भारत में अग्रणी है।

इसके बाद तमिलनाडु दूसरे स्थान पर है।

कितने भौगोलिक संकेत मिले हैं?

जुलाई 2024 तक भारत में कुल 605 GI टैग जारी किए गए थे।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्यः

भारत में पहला GI टैग 2004-05 में दार्जिलिंग चाय को दिया गया था।

जीआई टैग चेन्नई स्थित इंडियन ज्योग्राफिकल रजिस्ट्री द्वारा जारी किया जाता है।

यह टैग किसी वस्तु की विशिष्ट पहचान बताता है, जो उसकी भौगोलिक उत्पत्ति के कारण होती है और यह टैग 10 वर्षों के लिए मान्य होता है, जिसके बाद इसका नवीनीकरण कराना होता है।

भौगोलिक संकेत (जीआई) एक ऐसा चिह्न है जो किसी उत्पाद पर लगाया जाता है, जिसका एक विशिष्ट भौगोलिक मूल होता है और जिसमें उस मूल के कारण कोई विशेष गुणवत्ता या प्रतिष्ठा होती है। यह चिह्न यह दर्शाता है कि उत्पाद एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र से आता है और उस क्षेत्र की खास विशेषताओं से युक्त है। जीआई टैग उपभोक्ताओं को उत्पाद की प्रामाणिकता और गुणवत्ता की गारंटी देता है, और साथ ही उत्पादकों के हितों की रक्षा करता है, क्योंकि यह अनधिकृत कंपनियों को उस नाम का दुरुपयोग करने से रोकता है। भारत में, जीआई टैग वस्तुओं के लिए भौगोलिक संकेत (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 के तहत जारी किए जाते हैं।

भौगोलिक संकेत (जीआई) की मुख्य विशेषताएंः

उत्पत्ति का स्थानः

जीआई टैग उत्पाद के भौगोलिक मूल को दर्शाता है, जैसे कि कोई खास शहर, क्षेत्र या देश।

गुणवत्ता और प्रतिष्ठाः

यह उत्पाद की विशिष्ट गुणवत्ता या प्रतिष्ठा को भी बताता है, जो उसके भौगोलिक मूल से जुड़ी होती है।

सामूहिक संपत्तिः

यह एक विशिष्ट स्थान की विरासत और प्रतिष्ठा से जुड़ी एक सामूहिक संपत्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

संरक्षणः

यह अनधिकृत उपयोगकर्ताओं को उस उत्पाद के नाम का उपयोग करने से बचाता है, जिससे उत्पादकों के अधिकारों की रक्षा होती है।

उदाहरणः

भारत में दार्जिलिंग चाय, कांचीपुरम रेशम साड़ी, और मधुबनी पेंटिंग कुछ ऐसे उत्पाद हैं जिन्हें जीआई टैग प्राप्त है।

यह किसके लिए होता है?

कृषि उत्पाद

हस्तशिल्प

निर्मित वस्तुएँ (जैसे स्पिरिट पेय)

प्राकृतिक वस्तुएँ

भारत में जीआई के लिए प्रक्रिया

भौगोलिक संकेत के पंजीकरण के लिए एक आवेदक आवेदन कर सकता है।

आवेदन की जाँच की जाती है।

यदि सभी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं, तो जीआई को पंजीकृत और प्रकाशित किया जाता है।

जीआई टैग 10 साल की अवधि के लिए पंजीकृत होता है और इसे नवीनीकृत किया जा सकता है।

भारत में भौगोलिक संकेतों (जीआई टैग) का महत्व बहुआयामी है; यह स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा देता है, किसानों और कारीगरों को बेहतर पहचान और मूल्य दिलाता है, और भारत के पारंपरिक ज्ञान व सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करता है। जीआई टैग भारतीय उत्पादों की निर्यात क्षमता बढ़ाते हैं, ग्रामीण रोजगार को बढ़ावा देते हैं और उपभोक्ताओं को उत्पादों की गुणवत्ता और उत्पत्ति की पहचान सुनिश्चित करते हैं।

आर्थिक लाभ

स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावाः

जीआई टैग स्थानीय उत्पादकों को बाज़ार में विशिष्ट पहचान दिलाता है, जिससे उनकी उत्पादों की मांग बढ़ती है और आर्थिक स्थिति सुधरती है।

उत्पादों को बेहतर मूल्यः

जीआई टैग गुणवत्ता और विशिष्टता की गारंटी देता है, जिससे उत्पादकों को उनके उत्पादों के लिए उचित और बेहतर मूल्य प्राप्त होता है।

निर्यात में वृद्धिः

जीआई टैग अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारतीय उत्पादों की प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं, जिससे निर्यात को बढ़ावा मिलता है।

सांस्कृतिक एवं सामाजिक लाभ

पारंपरिक ज्ञान का संरक्षणः

जीआई टैग किसी उत्पाद के पीछे के सांस्कृतिक ज्ञान और पारंपरिक उत्पादन विधियों को संरक्षित करने में मदद करता है, जो अक्सर लुप्त होने के कगार पर होते हैं।

सांस्कृतिक विरासत की पहचानः

यह उन उत्पादों को पहचान दिलाता है जिनकी उत्पत्ति किसी विशेष क्षेत्र से होती है, जिससे क्षेत्र की सांस्कृतिक विशिष्टताओं का प्रचार होता है।

रोजगार सृजनः

जीआई टैग ग्रामीण क्षेत्रों में कारीगरों, बुनकरों और किसानों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करता है, जिससे ग्रामीण विकास को बढ़ावा मिलता है।

कानूनी और गुणवत्ता संबंधी लाभ

गुणवत्ता की गारंटीः

जीआई टैग यह सुनिश्चित करता है कि उत्पाद एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में पारंपरिक मानकों के अनुसार उत्पादित किया गया है, जिससे उत्पाद की गुणवत्ता बनी रहती है।

अनधिकृत उपयोग पर प्रतिबंधः

जीआई टैग केवल अधिकृत उत्पादकों को ही उस उत्पाद के नाम का उपयोग करने की अनुमति देता है, जिससे दोहराव और अनुचित प्रतिस्पर्धा पर रोक लगती है।

बौद्धिक संपदा अधिकारों (IPR) का संरक्षणः

यह भारतीय बौद्धिक संपदा अधिकारों को मजबूत करता है और उत्पादों के लिए कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है।

भारत में जीआई टैग का महत्व विशिष्ट उत्पादों का संरक्षण जीआई टैग यह सुनिश्चित करता है कि किसी विशिष्ट क्षेत्र के केवल वास्तविक उत्पादक ही उस उत्पाद को उसके नाम से बेच सकते हैं.

जीआई टैग इसलिए दिया जाता है ताकि किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र से जुड़े उत्पादों को कानूनी सुरक्षा मिल सके, उनकी गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके, और नकल को रोका जा सके. इससे उत्पादकों को अपनी चीज़ों के लिए उचित मूल्य मिलता है, बाज़ार में अच्छी पहचान बनती है, और देश व क्षेत्र का आर्थिक विकास होता है.

जीआई टैग देने के मुख्य कारणः

कानूनी संरक्षणः

जीआई टैग किसी उत्पाद को कानूनी सुरक्षा देता है, जिससे कोई भी व्यक्ति या संस्था उस नाम या चिन्ह का अनधिकृत रूप से उपयोग नहीं कर सकता.

गुणवत्ता का पैमानाः

यह टैग उत्पादों की एक निश्चित गुणवत्ता और प्रतिष्ठा को दर्शाता है, क्योंकि यह किसी विशेष भौगोलिक उत्पत्ति और पारंपरिक तकनीक से जुड़ा होता है.

नकल रोकनाः

यह सुनिश्चित करता है कि नकली उत्पाद उन क्षेत्रों के असली उत्पादों के नाम का गलत इस्तेमाल न कर सकें, जिससे ग्राहकों को प्रामाणिक उत्पाद मिलते हैं.

आर्थिक लाभः

उत्पादकों को उनके प्रामाणिक उत्पादों के लिए उचित और बेहतर दाम मिलता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है.

बाजार का विस्तारः

जीआई टैग से उत्पाद देश-विदेश में अधिक लोकप्रिय होते हैं और उनके लिए एक बड़ा बाज़ार बनता है.

क्षेत्रीय विकासः

यह उस क्षेत्र की पहचान बढ़ाता है, जिससे उस क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा होते हैं और राजस्व में वृद्धि होती है.

सांस्कृतिक पहचानः

जीआई टैग किसी क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करता है, जो उस विशेष उत्पाद से जुड़ा होता है.

जीआई टैग प्राप्त करने के लिए, आपको संबंधित उत्पाद की विशिष्टता और भौगोलिक संबंधों का प्रमाण देते हुए Controller General of Patents, Designs and Trade Marks (CGPDTM) के पास आवेदन करना होगा। आवेदन की जांच की जाती है, फिर प्रकाशन के लिए जारी किया जाता है, और आपत्तियों के बाद, उत्पाद को जीआई टैग मिल जाता है।

जीआई टैग प्राप्त करने की प्रक्रियाः

आवेदन - किसी उत्पाद के निर्माता, संगठन या सरकार की संस्था Controller General of Patents, Designs and Trade Marks (CGPDTM) के पास आवेदन करती है।

जांचः CGPDTM उत्पाद की गुणवत्ता, विशिष्टता और भौगोलिक संबंध से जुड़े दावों की जांच करता है।

प्रकाशनः जांच के बाद उत्पाद का विवरण एक विज्ञापन के रूप में प्रकाशित किया जाता है जिससे कोई आपत्ति दर्ज कर सके।

अनुमोदनः यदि कोई आपत्ति नहीं आती है, तो उत्पाद को जीआई टैग प्रदान किया जाता है।

जीआई टैग के लाभः

ब्रांड सुरक्षाः

यह नकली उत्पादों को बाजार में आने से रोकता है।

उत्पाद मूल्य में वृद्धिः

जीआई टैग उत्पाद की प्रतिष्ठा और आर्थिक मूल्य को बढ़ाता है।

सांस्कृतिक संरक्षणः

यह सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण उत्पादों और उनके स्थानीय उत्पादन को संरक्षित करने में मदद करता है।

जीआई टैग भारत में भौगोलिक संकेत (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 के तहत जारी किए जाते हैं और यह उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग के अंतर्गत आता है।

जीआई टैग के लिए भारत में भौगोलिक संकेत रजिस्ट्री (Geographical Indication Registry) में आवेदन करना होता है, जिसका मुख्यालय चेन्नई में है और यह पेटेंट, डिजाइन और ट्रेडमार्क महानियंत्रक (CGPDTM) के तहत काम करती है. आवेदन एक व्यक्तिगत निर्माता, संगठन या संघ द्वारा किया जा सकता है, और आवेदन में उत्पाद की अनूठी विशेषताओं, ऐतिहासिक विरासत और भौगोलिक संबंध का विस्तृत विवरण शामिल होना चाहिए. आवेदन जमा होने के बाद, रजिस्ट्री उत्पाद की जांच और छानबीन करती है. यदि दावा सही पाया जाता है, तो जीआई टैग जारी किया जाता है.

आवेदन कहाँ करें:

भौगोलिक संकेत रजिस्ट्री (Geographical Indication Registry):

यह मुख्य स्थान है जहाँ आवेदन जमा करना होता है.

पेटेंट, डिजाइन और ट्रेडमार्क महानियंत्रक (CGPDTM):

यह वह संस्था है जिसके तहत भौगोलिक संकेत रजिस्ट्री काम करती है और आवेदन प्रक्रिया को संभालती है.

आवेदन की प्रक्रियाः

आवेदन जमा करनाः आप या आपका संगठन पेटेंट, डिजाइन और ट्रेडमार्क महानियंत्रक के पास एक औपचारिक आवेदन पत्र जमा कर सकते हैं.

आवश्यक दस्तावेजः आवेदन के साथ उत्पाद की विशिष्ट विशेषताओं, ऐतिहासिक जड़ों, क्षेत्र के मानचित्र और उत्पादन प्रक्रिया के बारे में विस्तृत दस्तावेज प्रस्तुत करने होंगे.

जाँच और छानबीनः रजिस्ट्रार आवेदन की प्रारंभिक परीक्षा करेगा और उत्पाद की विशिष्टता और प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह से जांच करेगा.

आपत्तियों का समाधानः यदि कोई आपत्ति आती है, तो आपको उसे दूर करने के लिए एक निश्चित समय के भीतर जवाब देना होगा.

अंतिम निर्णयः यदि सभी साक्ष्य और तर्क संतुष्ट करते हैं, तो उत्पाद को जीआई टैग जारी किया जाएगा.

जीआई टैग के लाभः

मूल्य वृद्धिः

इससे उत्पाद का मूल्य और संबंधित समुदाय का महत्व बढ़ जाता है.

नकली उत्पादों से सुरक्षाः

यह फर्जी उत्पादों को रोकने में मदद करता है और उत्पाद की प्रामाणिकता सुनिश्चित करता है.

आर्थिक लाभः

संबंधित समुदाय और निर्माताओं को आर्थिक लाभ होता है.

रोजगार और राजस्वः

यह रोजगार सृजन और राजस्व वृद्धि को बढ़ावा देता है.

कीबोर्ड से परे

विजय गर्ग

“कीबोर्ड से परे₹ एक वाक्यांश है जो डिजिटल दुनिया के बाहर होने वाली किसी भी चीज़ और कंप्यूटर की सीमाओं को संदर्भित करता है। यह आभासी बातचीत से वास्तविक जीवन के अनुभवों में जाने के बारे में है। ₹कीबोर्ड से परे₹ का क्या अर्थ हो सकता है, इसकी कुछ व्याख्याएं यहां दी गई हैंः 1.। ऑनलाइन से ऑफलाइन जानाः यह सबसे आम व्याख्या है। यह एक रिश्ता, एक परियोजना, या एक शौक लेने के बारे में है जो ऑनलाइन शुरू हुआ और इसे भौतिक दुनिया में लाया गया। उदाहरण के लिएः

ऑनलाइन दोस्तों के साथ मिलनाः डिजिटल दोस्ती को एक व्यक्ति में बदलना।

एक सम्मेलन या मीटअप में भाग लेनाः एक समुदाय के लिए एक वास्तविक जीवन की घटना पर जाना जो आप ऑनलाइन का हिस्सा हैं।

एक भौतिक व्यवसाय शुरू करनाः एक सफल ई-कॉमर्स उद्यम के बाद एक ईंट-और-मोर्टार स्टोर लॉन्च करना। 2.। हैंड्स-ऑन स्किल्स एंड एक्टिविटीज पर ध्यान केंद्रित करनाः यह व्याख्या उन गतिविधियों के महत्व पर जोर देती है जिनमें स्क्रीन शामिल नहीं है।

एक शिल्प सीखनाः लकड़ी के काम, मिट्टी के बर्तनों, बुनाई, या पेंटिंग जैसी चीजें।

बागवानी या खेतीः प्रकृति से जुड़ना और अपना भोजन स्वयं बढ़ाना।

एक संगीत वाद्ययंत्र बजानाः एक शारीरिक कौशल विकसित करना और ध्वनि बनाना। 3। व्यक्तिगत और सामाजिक विकास को बढ़ानाः यह दृश्य आमने-सामने संचार और वास्तविक मानव कनेक्शन के महत्व पर केंद्रित है।

स्वयंसेवाः एक ठोस तरीके से अपने समुदाय को वापस देना।

यात्राः नई संस्कृतियों और वातावरणों का अनुभव करना।

सार्वजनिक बोलनाः एक डर पर काबू पाना और व्यक्ति में संवाद करना। 4। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पहलूः ₹कीबोर्ड से परे₹ का उपयोग अक्सर एक स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है जिसमें निरंतर स्क्रीन समय शामिल नहीं होता है।

व्यायाम करनाः एक रन के लिए जाना, जिम मारना, या एक खेल खेलना।

माइंडफुलनेस एंड मेडिटेशनः डिजिटल दुनिया से डिस्कनेक्ट करना और वर्तमान क्षण पर ध्यान केंद्रित करना।

पर्याप्त नींद लेनाः उपकरणों को बंद करना और अपने शरीर और दिमाग को आराम करने की अनुमति देना। संक्षेप में, ₹कीबोर्ड से परे₹ कार्रवाई के लिए एक कॉल है। यह हमें अपनी स्क्रीन से दूर जाने और वास्तविक दुनिया के साथ जुड़ने, गहरे कनेक्शन को बढ़ावा देने, नए कौशल विकसित करने और अधिक संतुलित जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह एक अनुस्मारक है कि जबकि प्रौद्योगिकी एक शक्तिशाली उपकरण है, कुछ सबसे सार्थक अनुभव वास्तविक दुनिया में होते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली

झूठ की रफ्तार और सच की धीमी चाल-राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक गहन विश्लेषण

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर मानव सभ्यता के इतिहास में झूठ और सच की जंग सबसे पुरानी है। झूठ हमेशा आकर्षक होता है, तेज़ी से फैलता है और आसानी से लोगों को अपनी ओर खींच लेता है,जबकि सच को अपनी जगह बनाने में समय लगता है। यही कारण है कि यह कहावत जन्मी कि “जब सच अपने जूते के फीते बाँध रहा होता है, तब तक झूठ पूरी दुनिया का चक्कर लगा चुका होता है।”यह कथन केवल साहित्यिक व्यंग्य नहीं बल्कि सामाजिक,राजनीतिक, आर्थिक और तकनीकी वास्तविकताओं का आईना है। राजनीति, समाज और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की वास्तविकताओं को गहराई से दर्शाती है।झूठ की त्वरित गति और सच की धीमी स्वीकृति का प्रभाव आज वैश्विक राजनीति से लेकर सोशल मीडिया,पत्रकारिता शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय संबंधों तक फैला हुआ है। कहा जाता है कि “सत्य की जीत होती है,” लेकिन राजनीति की जमीनी सच्चाई यह है कि झूठ की गति हमेशा सच से कई गुना तेज़ होती है। इसको अगर हम भारत की राष्ट्रीय राजनीति और अंतरराष्ट्रीय राजनीति के परिपेक्ष में देखें तो दोनों ही इस कहावत का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। सोशल मीडिया, चुनावी प्रचार, युद्धकालीन प्रोपेगेंडा और वैश्विक कूटनीति, हर जगह झूठ पहले जनता के मन को जकड़ लेता है, जबकि सच को अपनी जगह बनाने में समय लगता है। 21वीं सदी में इंटरनेट और सोशल मीडिया ने झूठ की रफ्तार को और भी तेज़ कर दिया है। अब एक झूठी खबर कुछ ही मिनटों में पूरी दुनियाँ का चक्कर लगा सकती है।फ़ेक न्यूज़ः-चुनावों के दौरान झूठी खबरें जनमत को प्रभावित करती हैं।निवेश जगत में अफवाहें शेयर बाज़ार को हिला सकती हैं। झूठी खबरें शेयर की कीमतें बढ़ा या गिरा देती हैं, जबकि सच सामने आने में समय लगता है।राजनीति झूठ और सच की सबसे बड़ी प्रयोगशाला है। नेता अक्सर वादे और दावे करते हैं जिनमें सच कम और झूठ ज़्यादा होता है। झूठ की गति इतनी तेज़ होती है कि चुनाव तक उसका असर बना रहता है, लेकिन सच सामने आने पर जनता का मोहभंग होता है। यही कारण है कि कई लोकतांत्रिक देशों में पॉपुलिस्ट नेता झूठ का सहारा लेकर सत्ता तक पहुँच जाते हैं।मीडिया की भूमिकाः-पत्रकारिता का मूल उद्देश्य सच को सामने लाना है, लेकिन मीडिया भी झूठ का सबसे बड़ा साधन बन सकता है। उत्तर-सत्य युग शब्द इसी कारण अस्तित्व में आया। आज कई मीडिया हाउस टीआरपी के लिए झूठ को हवा देते हैं। हालाँकि, जाँच-पड़ताल पत्रकारिता अभी भी सच की रक्षा करती है। इस विषय की चर्चा मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र इस आर्टिकल के माध्यम से तीन भागों में करूँगा पहला भागः झूठ की गति बनाम सच की मजबूती।दूसरा भाग :- भारत की राष्ट्रीय राजनीति में झूठ और सच का समीकरण।तीसरा भागः- अंतरराष्ट्रीय राजनीति में झूठ और सच का समीकरण।मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि इसकी सटीकता का कोई प्रमाण नहीं है मीडिया में उपलब्ध जानकारी का रिसर्च कर इस आर्टिकल को तैयार किया गया है।चूँकि बड़े बुज़ुर्गों द्वारा कही गई है कहावत है“जब सच अपने जूते के फीते बाँध रहा होता है, तब तक झूठ पूरी दुनिया का चक्कर लगा चुका होता है।”इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,झूठ की रफ्तार और सच की धीमी चालः राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक गहन व सटीक विश्लेषण करेंगे।

साथियों बात अगर हम सबसे पहले भाग 1: झूठ की गति बनाम सच की मजबूती को समझने की करें तो (1) क्यों फैलता है झूठ तेज़ी से ?-झूठ हमेशा सनसनीखेज और भावनात्मक होता है। यह जनता की भावनाओं, डर और पूर्वाग्रहों को भड़काता है। सच तर्क और सबूत पर आधारित होता है, इसलिए उसकी गति धीमी होती है।(२) सच की स्थायी ताकत-इतिहास गवाह है कि भले ही झूठ तेजी से फैल जाए, लेकिन स्थायी जीत हमेशा सच की होती है। गांधीजी का सत्याग्रह, मंडेला का रंगभेद-विरोधी संघर्ष, और क्लाइमेट चेंज की वैज्ञानिक चेतावनियाँ,ये सब दर्शाते हैं कि सच देर से सही, लेकिन जीतता जरूर है।(३)समाधान और भविष्य की राह-फैक्ट-चेकिंग संस्थाएँः अल्ट न्यूज़ (भारत),स्नोपेस (अमेरिका) और बीबीसी फैक्ट चेक जैसी संस्थाएँ झूठ को चुनौती दे रही हैं।(4)अनेक तकनीकी पहलू-(1) टेक्नोलॉजीः- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से डीपफेक और फेक न्यूज़ पकड़ी जा सकती हैं।(२)शिक्षा और जागरूकताः-जनता को मीडिया साक्षरता सिखाना ज़रूरी है ताकि वे झूठ और सच में अंतर कर सकें।

साथियों बात अगर हम भाग-२:भारत की राष्ट्रीय राजनीति में झूठ और सच का समीकरण को समझने की करें तो (1) चुनावी राजनीति और फेक नैरेटिव-भारत का लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जहाँ हर पाँच साल में चुनाव होते हैं। यहाँ चुनावी नैरेटिव बनाने में झूठ की भूमिका अहम है।उदाहरण के लिए, २०२४ के लोकसभा चुनाव में सोशल मीडिया पर कई वीडियो वायरल हुए जिनमें दावा किया गया कि कुछ दल “धर्म विशेष के पक्ष में आरक्षण देंगे” या “कश्मीर में अनुच्छेद ३७० वापस लाएँगे।” इनमें से अधिकांश दावे झूठे निकले, लेकिन चुनावी माहौल में इन खबरों ने जनमत को प्रभावित किया। सच तब सामने आया जब चुनाव आयोग और फैक्ट-चेक संगठनों ने इन खबरों की जाँच की, लेकिन तब तक असर हो चुका था।(२)किसान आंदोलन और झूठी सूचनाएँ- २०२०—२१ के किसान आंदोलन भारत की राजनीति में इस कहावत का सबसे ताज़ा उदाहरण है। आंदोलनकारियों को कई बार “खालिस्तानी समर्थक” या “विदेशी फंडिंग से प्रेरित” बताया गया। ये बातें सोशल मीडिया और टीवी चैनलों पर इतनी तेजी से फैलीं कि आम जनता में भ्रम पैदा हो गया। बाद में सुप्रीम कोर्ट और स्वतंत्र रिपोर्ट्स ने साफ किया कि आंदोलन मुख्य रूप से किसानों की वास्तविक चिंताओं पर आधारित था। लेकिन सच सामने आने में महीनों लग गए। (३) कोविड -19 और सरकारी दावे-भारत में कोविड-19 महामारी के दौरान भी झूठ और सच की जंग साफ नज़र आई। दूसरी लहर (२०२१) के समय सरकार की तरफ से कहा गया कि “ऑक्सीजन और दवाइयों की कोई कमी नहीं है।” परंतु जमीनी हकीकत यह थी कि अस्पतालों में लोग ऑक्सीजन की कमी से दम तोड़ रहे थे। झूठी तस्वीरें और आँकड़े मीडिया में फैलाए गए ताकि सरकार की छवि बची रहे। सच बाद में तब सामने आया जब अंतरराष्ट्रीय मीडिया और न्यायालयों ने स्थिति का खुलासा किया।(4)राष्ट्रीय सुरक्षा और अफवाहें-भारत की राजनीति में “पाकिस्तान” और “आतंकवाद” से जुड़े नैरेटिव अक्सर झूठ के सहारे बनाए जाते हैं। २०19 के पुलवामा हमले और बालाकोट एयरस्ट्राइक तथा अभी २२ अप्रैल २०२५ को पहलगाम, कश्मीर में एक आतंकवादी हमले में २८ नागरिक मारे गए थे,के बाद कई झूठी सूचनाएँ फैलाई गईं, बाद में अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ट्स और सैटेलाइट इमेजरी ने दिखाया कि सच क्या है तब कहीं जाकर लोगों को समझ में आया (५) ताज़ा घटनाएँ और सोशल मीडिया ट्रोलिंग-२०२५ में भी भारत की राजनीति में सोशल मीडिया “फेक न्यूज़” का सबसे बड़ा हथियार है। हाल ही में मणिपुर हिंसा से जुड़ी कई झूठी तस्वीरें और वीडियो वायरल हुए जो किसी अन्य देश के थे,लेकिन उन्हें भारत की घटनाओं से जोड़ दिया गया। सच सामने आने तक समाज में भारी तादाद मैं तनाव फैल चुका था।

साथियों बात अगर हम भाग-३ अंतरराष्ट्रीय राजनीति में झूठ और सच का समीकरण की करें तो (1) इराक युद्ध २००३-सबसे बड़ा उदाहरण-अंतरराष्ट्रीय राजनीति में झूठ की सबसे बड़ी मिसाल २००३ का इराक युद्ध है। अमेरिका और ब्रिटेन ने दावा किया कि सद्दाम हुसैन के पास वेपन्स ऑफ़ मास डिस्ट्रक्शन (डब्ल्यूएमडीएस) हैं। यह दावा पूरी दुनियाँ में तेज़ी से फैला और युद्ध छिड़ गया। लाखों लोग मारे गए, लेकिन सच यह था कि इराक के पास ऐसे हथियार थे ही नहीं। यह सच तब सामने आया जब युद्ध समाप्त हो चुका था और तब तक पूरी मध्य-पूर्व की राजनीति बदल गई (२) रूस- यूक्रेन युद्ध (२०२२—२०२५) -आज की तारीख में सबसे बड़ा उदाहरण रूस-यूक्रेन युद्ध है। रूस ने दावा किया कि वह “यूक्रेन को नाज़ी ताकतों से मुक्त करने” आया है। दूसरी ओर, पश्चिमी देशों ने कहा कि रूस विस्तारवादी नीति चला रहा है। सोशल मीडिया पर दोनों पक्षों से झूठी सूचनाएँ फैलाई गईं,कहीं झूठे वीडियो, कहीं पुराने फोटो को नया बताकर प्रचार किया गया। सच धीरे-धीरे स्वतंत्र पत्रकारों और उपग्रह चित्रों से सामने आ रहा है, लेकिन तब तक लाखों लोग प्रभावित हो चुके हैं।(३)अमेरिका की चुनावी राजनीति और फेक न्यूज़-२016 और २०२० के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में “फेक न्यूज़” निर्णायक कारक बना। रूसी ट्रोल फैक्ट्री और अमेरिकी कट्टरपंथी संगठनों ने झूठी खबरें फैलाईं-जैसे कि “पोप डोनाल्ड ट्रंप का समर्थन कर रहे हैं” या “जो बाइडेन भ्रष्टाचार में शामिल हैं।” ये खबरें सोशल मीडिया पर लाखों लोगों तक पहुँचीं। बाद में फैक्ट-चेक संगठनों ने इन्हें गलत साबित किया, लेकिन तब तक मतदाता प्रभावित हो चुके थे (4) कोविड- 19 और चीन-कोविड-19 की शुरुआत में चीन ने दुनियाँ से वायरस की गंभीरता छिपाई। वुहान से जुड़े शुरुआती केस दबा दिए गए और कहा गया कि स्थिति नियंत्रण में है। यह झूठ पूरी दुनियाँ को गुमराह कर गया। जब सच सामने आया कि वायरस तेजी से फैल रहा है, तब तक महामारी वैश्विक संकट बन चुकी थी (५) इज़रायल- फिलिस्तीन संघर्ष-इस क्षेत्र में झूठ और सच की जंग रोज़ देखी जाती है। इज़रायल और फिलिस्तीन दोनों पक्ष सोशल मीडिया पर अपने पक्ष में वीडियो और तस्वीरें पेश करते हैं। कई बार पुराने वीडियो को नया बताकर या गलत कैप्शन देकर वायरल किया जाता है। सच सामने आने तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गुस्सा और विरोध बढ़ चुका होता है। (६) भारत कीसटीक विदेश नीति और फेक नैरेटिव-भारत की विदेश नीति भी झूठ और सच की इस जंग से अछूती नहीं है। हाल ही में जी-२० शिखर सम्मेलन (२०२३, नई दिल्ली) के दौरान पाकिस्तान और चीन ने दावा किया कि भारत ने “कश्मीर मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय एजेंडा से हटाने के लिए दबाव डाला।” यह झूठी खबरें अंतरराष्ट्रीय मीडिया में फैलीं। बाद में सच यह सामने आया कि सम्मेलन का फोकस आर्थिक सहयोग और विकास पर था, लेकिन तब तक नैरेटिव बदल चुका था।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कियह कहावत केवल साहित्यिक व्यंग्य नहीं बल्कि राजनीति की कठोर सच्चाई है। भारत की राष्ट्रीय राजनीति में चुनावी वादों, किसान आंदोलनों और कोविड जैसे संकटों ने इसे साबित किया है। वहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इराक युद्ध, रूस-यूक्रेन संघर्ष, अमेरिकी चुनाव और कोविड-19 महामारी इसके वैश्विक उदाहरण हैं।झूठ भले ही पूरी दुनिया का चक्कर लगा ले, लेकिन सच देर से ही सही, हमेशा अपनी जगह बनाता है। आज की चुनौती यही है कि लोकतंत्र, मीडिया और तकनीक मिलकर सच की यात्रा को तेज़ और झूठ की गति को धीमा करें।

प्रसवोत्तर देखभाल: माँ का साथ सास से ज्यादा कारगर

अध्ययन बताते हैं कि प्रसव के बाद महिलाओं की देखभाल करने में सास की तुलना में उनकी अपनी माँ कहीं अधिक सक्रिय और संवेदनशील रहती हैं। लगभग 70 प्रतिशत प्रसूताओं को नानी से बेहतर सहयोग मिला, जबकि मात्र 16 प्रतिशत को सास से सहायता मिली। यह बदलाव संयुक्त परिवारों के टूटने और आधुनिक सोच का परिणाम है। नानी का भावनात्मक जुड़ाव और मातृत्व का अनुभव बेटी के लिए सहारा बनता है। हालांकि सास की भूमिका कमजोर पड़ना पारिवारिक संतुलन के लिए चुनौती है। ज़रूरी है कि माँ और सास दोनों मिलकर जिम्मेदारी निभाएँ।

- डॉ. प्रियंका सौरभ

भारतीय समाज में परिवार की भूमिका जीवन के हर पड़ाव पर महत्वपूर्ण होती है। जब घर में नया जीवन जन्म लेता है, तब यह जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। प्रसव एक ऐसा समय है जब महिला शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से बेहद कमजोर होती है। उसे सिर्फ चिकित्सकीय सहायता ही नहीं, बल्कि गहरे स्तर पर देखभाल, सहारा और संवेदनशीलता की ज़रूरत होती है। परंपरागत रूप से यह जिम्मेदारी संयुक्त परिवारों में सास की मानी जाती थी, लेकिन बदलते दौर और सामाजिक संरचना के कारण यह भूमिका अब धीरे-धीरे माँ यानी नानी की ओर स्थानांतरित हो रही है। हाल ही में किए गए एक अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ है कि प्रसव के बाद महिलाओं को अपनी सास की तुलना में अपनी माँ से कहीं अधिक देखभाल और सहयोग मिलता है। यह तथ्य कई स्तरों पर सोचने को मजबूर करता है। एक ओर यह माँ और बेटी के रिश्ते की गहराई और भावनात्मक मजबूती को दर्शाता है, वहीं दूसरी ओर यह सवाल भी उठाता है कि सास जैसी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली महिला इस प्रक्रिया में पीछे क्यों रह गई है। अध्ययन में पाया गया कि प्रसवोत्तर देखभाल में लगभग 70 प्रतिशत महिलाओं को उनकी अपनी माँ से सहयोग मिला, जबकि मात्र 16 प्रतिशत महिलाओं की देखभाल उनकी सास ने की। यह आँकड़ा अपने आप में बहुत कुछ कह जाता है।

बेटी और माँ का रिश्ता हमेशा से भरोसे और आत्मीयता पर आधारित रहा है। प्रसव के बाद महिला अपने जीवन के सबसे नाजुक दौर से गुजरती है। उसका शरीर थका हुआ और कमजोर होता है, मानसिक रूप से वह असुरक्षा और चिंता का सामना करती है। ऐसे समय में वह सबसे पहले अपनी माँ के पास सहजता से जाती है। माँ न केवल उसकी तकलीफ को तुरंत समझती है बल्कि धैर्य और प्यार से उसका मनोबल भी बढ़ाती है। हर माँ ने मातृत्व का अनुभव किया होता है, इसलिए उसे पता होता है कि उसकी बेटी किन शारीरिक और मानसिक अवस्थाओं से गुजर रही है। यही वजह है कि बेटी अपनी असली माँ की देखभाल को सबसे भरोसेमंद मानती है।

इसके विपरीत सास-बहू का रिश्ता भारतीय समाज में अक्सर औपचारिकताओं और अपेक्षाओं से घिरा होता है। बहू अपनी सास के सामने उतनी सहजता महसूस नहीं कर पाती। कई बार पीढ़ियों का अंतर भी इस दूरी को और बढ़ा देता है। सास का सोचने का तरीका पुराने अनुभवों पर आधारित होता है, जबकि आज की पीढ़ी की महिलाएँ आधुनिक चिकित्सा और नई जानकारी पर अधिक भरोसा करती हैं। जब बहू को लगे कि उसकी ज़रूरतों को पूरी तरह समझा नहीं जा रहा है, तो वह अपनी माँ की ओर झुक जाती है। यही वजह है कि प्रसव के समय सास की तुलना में नानी की भूमिका अधिक अहम दिखाई देती है।

इस बदलाव के पीछे एक और बड़ा कारण है संयुक्त परिवारों का टूटना और एकल परिवारों का बढ़ना। पहले प्रसव के समय बहू अपने ससुराल में ही रहती थी और पूरे परिवार की महिलाएँ उसकी देखभाल करती थीं। सास इस देखभाल की मुख्य जिम्मेदार मानी जाती थी। लेकिन अब परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। अधिकतर बेटियाँ प्रसव के समय मायके चली जाती हैं। वहाँ नानी स्वाभाविक रूप से जिम्मेदारी संभाल लेती है। यह प्रथा समाज में इतनी गहराई से जड़ पकड़ चुकी है कि अब यह लगभग सामान्य मान ली जाती है।

यह बदलाव कई दृष्टियों से सकारात्मक भी है। प्रसव के बाद महिला को भावनात्मक सुरक्षा मिलना बहुत ज़रूरी है। जब उसके पास उसकी अपनी माँ होती है, तो उसे मानसिक सुकून मिलता है। कई शोध बताते हैं कि प्रसवोत्तर अवसाद का खतरा उन महिलाओं में कम होता है जिन्हें अपनी माँ से पर्याप्त सहयोग मिलता है। नानी के अनुभव का लाभ शिशु को भी मिलता है। शिशु को समय पर स्तनपान कराना, उसकी सफाई और टीकाकरण जैसे छोटे-छोटे लेकिन महत्वपूर्ण कामों में नानी की भूमिका बहुत कारगर साबित होती है। इस दृष्टि से देखा जाए तो यह प्रवृत्ति माँ और शिशु दोनों के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।

लेकिन इस तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। जब सास की भूमिका कमजोर पड़ती है तो पारिवारिक संतुलन प्रभावित होता है। बहू और सास के रिश्ते में दूरी और बढ़ सकती है। यह दूरी सिर्फ देखभाल तक सीमित नहीं रहती बल्कि परिवार की सामंजस्यपूर्ण संस्कृति पर भी असर डाल सकती है। आखिरकार सास भी खुद कभी इस प्रक्रिया से गुज़री होती है और उसके अनुभव की अहमियत को पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता। अगर उसका अनुभव और स्नेह इस प्रक्रिया में शामिल न हो, तो यह न केवल उसके लिए निराशाजनक होता है बल्कि बहू और शिशु दोनों उस सहयोग से वंचित रह जाते हैं जो उन्हें अतिरिक्त सुरक्षा दे सकता है।

यहाँ यह समझना ज़रूरी है कि प्रसवोत्तर देखभाल किसी एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं है। यह पूरे परिवार की सामूहिक जिम्मेदारी है। अगर माँ और सास दोनों मिलकर इस दायित्व को निभाएँ, तो महिला को दोगुना सहयोग मिलेगा। यह स्थिति न केवल प्रसूता महिला के लिए बेहतर होगी बल्कि शिशु के लिए भी अधिक लाभकारी होगी। इसके अलावा, परिवार के भीतर रिश्तों की मिठास और विश्वास भी बढ़ेगा।

समाज को भी यह समझना होगा कि प्रसव जैसे समय में महिला को सिर्फ शारीरिक मदद ही नहीं बल्कि मानसिक सहारा और भावनात्मक सहयोग भी चाहिए। अगर महिला को लगे कि उसकी सास भी उसके दर्द और ज़रूरतों को समझती है, तो उसका आत्मविश्वास और बढ़ेगा। इसी तरह, अगर सास-बहू के बीच संवाद और विश्वास का रिश्ता मजबूत हो, तो देखभाल का संतुलन अपने आप स्थापित हो जाएगा।

आज जब स्वास्थ्य सेवाओं और सरकारी योजनाओं की पहुँच बढ़ रही है, तब परिवार की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। अस्पताल और डॉक्टर अपना काम कर सकते हैं, लेकिन प्रसवोत्तर देखभाल का असली दायित्व घर और परिवार पर ही रहता है। परिवार के भीतर यह जिम्मेदारी अगर संतुलित ढंग से बाँटी जाए तो इसका लाभ सीधा माँ और शिशु दोनों को मिलेगा।

इसलिए यह आवश्यक है कि इस विषय पर जागरूकता बढ़ाई जाए। परिवारों को समझाया जाए कि प्रसवोत्तर देखभाल किसी प्रतिस्पर्धा का विषय नहीं है—यह माँ बनाम सास की लड़ाई नहीं है। बल्कि यह माँ और सास दोनों का संयुक्त दायित्व है। दोनों का अनुभव और स्नेह मिलकर प्रसूता महिला को वह सुरक्षा प्रदान कर सकता है, जिसकी उसे सबसे अधिक आवश्यकता होती है।

"सास से ज्यादा माँ की देखभाल बेहतर" यह शीर्षक समाज में एक बदलते रुझान का दर्पण है। यह रुझान बताता है कि प्रसव जैसे संवेदनशील समय में महिला अपनी असली माँ को ज़्यादा भरोसेमंद और सहयोगी मानती है। लेकिन आदर्श स्थिति वही होगी जब सास और माँ दोनों मिलकर यह जिम्मेदारी निभाएँ। यह न केवल प्रसूता महिला के स्वास्थ्य और मानसिक शांति के लिए अच्छा होगा, बल्कि शिशु की परवरिश और पारिवारिक रिश्तों के सामंजस्य के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगा। आखिरकार, स्वस्थ माँ और स्वस्थ शिशु ही स्वस्थ समाज की नींव रखते हैं।

मोदी का मिशन सीमांचल

कुमार कृष्णन

विधानसभा चुनाव के मद्देनजर बिहार का सियासी माहौल गरमाया हुआ है। राजनीतिक पार्टियां मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए हर संभव कोशिश में जुटी हुई हैं। जहां एक ओर एनडीए फिर से सत्ता पर काबिज होने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाए हुए है, वहीं दूसरी ओर महागठबंधन चुनावी अखाड़े में जमकर पसीना बहा रहा है। सभी सियासी दलों का सबसे ज्यादा ध्यान सूबे के सीमांचल इलाके पर दिखाई दे रहा है। चुनावी साल में प्रधानमंत्री ने बिहार में 36 हजार करोड़ की परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आयोजित रैली में कहा कि 11 साल में हमारी सरकार ने 4 करोड़ नए घर बनाकर लोगों को दिए हैं। हम 3 करोड़ नए घर बनाने का काम कर रहे हैं। जब तक हर गरीब को पक्का घर नहीं मिल जाता है, मोदी रुकने और थमने वाला नहीं है। साथ ही पीएम मोदी ने कहा कि बिहार के विकास के लिए पूर्णिया और सीमांचल का विकास जरूरी है। राजद और कांग्रेस सरकारों के कुशासन का बहुत बड़ा नुकसान इसी क्षेत्र को उठाना पड़ा है लेकिन अब एनडीए सरकार स्थिति बदल रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि सीमांचल और पूर्वी भारत में घुसपैठियों के कारण डेमोग्राफी के कारण कितना बड़ा संकट खड़ा हो चुका है। बिहार, बंगाल असम कई राज्यों के लोग अपनी बहनों बेटियों की सुरक्षा को लेकर चिंतित है। इसलिए भी मैंने डेमोग्राफी मिशन की घोषणा की है लेकिन वोट बैंक का स्वार्थ देखिए, कांग्रेस, आरजेडी और उसके ईको सिस्टम के लोग घुसपैठियों की वकालत करने में जुटे हैं उन्हें बचाने में लगे हैं।

हमारी सरकार ने मखाना सेक्टर के विकास के लिए हमारी सरकार ने 475 करोड़ रुपए की योजनाओं को मंजूर किया है। बिहार के राजगीर में हॉकी का एशिया कप जैसा बड़ा आयोजन हुआ। मेड इन बिहार रेल इंजन अफ्रीका तक एक्सपोर्ट होकर जा रहा है। साथ ही प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्षी दलों पर हमला करते हुए कहा कि राजद की सहयोगी पार्टी कांग्रेस अब बिहार की तुलना बीड़ी से कर रही है। इन्होंने बिहार की साख को बहुत नुकसान पहुंचाया है। इन्होंने बिहार को बदनाम करने की ठान ली है। कांग्रेस और राजद पिछले दो दशकों से बिहार की सत्ता से बाहर हैं और निस्संदेह इसमें सबसे बड़ी भूमिका बिहार की मेरी माताओं और बहनों की है। मैं बिहार की माताओं और बहनों को विशेष नमन करता हूं। राजद काल में हत्या, बलात्कार और फिरौती जैसे अपराधों की सबसे बड़ी शिकार बिहार की मेरी माताएं और बहनें ही रही हैं। डबल इंजन सरकार में वही महिलाएं लखपति दीदी और ड्रोन दीदी बन रही हैं।

सीमांचल और पूर्वी भारत में घुसपैठियों के कारण डेमोग्राफी के कारण कितना बड़ा संकट खड़ा हो चुका है, बिहार, बंगाल, असम कई राज्यों के लोग अपनी बहनों बेटियों की सुरक्षा को लेकर चिंतित है। इसलिए भी मैंने डेमोग्राफी मिशन की घोषणा की है, लेकिन वोट बैंक का स्वार्थ देखिए कांग्रेस, आरजेडी और उसके ईको सिस्टम के लोग घुसपैठियों की वकालत करने में जुटे हैं, उन्हें बचाने में लगे हैं और बेशर्मी के साथ विदेश से आए घुसपैठियों के लिए यह नारे लगा रहे हैं। यात्राएं निकाल रहे हैं। यह बिहार और देश के संसाधन और सुरक्षा दोनों को दांव पर लगाना चाहते हैं लेकिन आज पूर्णिया की धरती से मैं इन लोगों को एक बात अच्छी तरह से समझाना चाहता हूं कि यह आरजेडी और कांग्रेस की जमात कान खोलकर मेरी बात सुन ले कि जो भी घुसपैठिया है, उसे बाहर जाना ही होगा। घुसपैठ पर ताला लगाना एनडीए की पक्की जिम्मेदारी है।

वहीं प्रधानमंत्री की जनसभा में मंच पर पहुंचे पूर्णिया सांसद पप्पू यादव ने चार मांग की है। उन्होंने पूर्णिया में हाईकोर्ट बेंच, एम्स, पूर्णिया को उप राजधानी का दर्जा, मखाना में जीएसटी कम करने की मांग की। वहीं केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कहा कि एक दौड़ हमने देखा जब जंगल राज में माताओं बहनों का निकलना मुश्किल था। आज ये दौड़ है जहां विकास की सरकार केंद्र और बिहार दोनों हमारी सरकार। चिराग ने पीएम मोदी और मुख्य मंत्री नीतीश कुमार का गुणगान किया।

बिहार के सीमांचल में चार जिले कटिहार, पूर्णिया, अररिया और किशनगंज आता है। माना जाता है कि इन जिलों की कुल 24 विधानसभा सीटें हर चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। सीमांचल में भाजपा की राह कभी आसान नहीं रहती है, फिर चाहे लोकसभा का चुनाव हो या विधानसभा का। सीमांचल में भाजपा अपनी उम्मीदों के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर पाती है।

2015 के विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार के नेतृत्व में महागठबंधन ने यहां शानदार प्रदर्शन किया था, जिसमें राजद को 9, जेडीयू को 5 और कांग्रेस को भी 5 सीटें मिली थीं। भाजपा सीमांचल में केवल 5 सीटों तक ही सिमट गई थी।

2020 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने पिछली बार से तीन सीटें ज्यादा जीती थीं। भाजपा ने कुल 8 सीटें जीती थीं। इसकी एक वजह [illegible] बताया गया जबकि कांग्रेस को 5, जेडीयू को 4, और आरजेडी को 1 सीट मिली थी। एआईएमआईएम ने 5 सीटें जीतकर सबको चौंका दिया हालांकि बाद में उसके चार विधायक राजद में शामिल हो गए।

एक साल पहले 2024 के लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को सीमांचल की 4 लोकसभा सीटों में से सिर्फ अररिया सीट पर ही जीत मिली थी। किशनगंज और कटिहार कांग्रेस के खाते में गईं, जबकि पूर्णिया की सीट निर्दलीय प्रत्याशी पप्पू यादव ने जीती थी।

सीमांचल क्षेत्र में मुस्लिम वोटों की दिशा ही चुनाव का रुख तय करती है। किशनगंज में 68 फीसदी, अररिया में 43 फीसदी, कटिहार में 45 फीसदी और पूर्णिया में 39 प्रतिशत मुस्लिम है। इस क्षेत्र में लंबे समय से कांग्रेस और राजद की मजबूत पकड़ रही है। लेकिन, 2020 के चुनाव में एआईएमआईएम की एंट्री ने समीकरण बदल दिए। ओवैसी की पार्टी ने मुस्लिम वोटों का ध्रुवीकरण किया, जिसका अप्रत्यक्ष लाभ भाजपा को मिला।

पटाखे के प्रदूषण के प्रतिबंध को लेकर देश में एक नीति बने

विजय गर्ग

भारत जैसा देश, जो दुनिया भर के प्रदूषित देशों में पांचवें नंबर पर हो, जहां दुनिया का सबसे ज्यादा प्रदूषित शहर हो और तेरह अन्य शहर दुनिया के शीर्ष बीस प्रदूषित शहरों में शुमार हों, वहां हवा को जहरीला बनाने वाले पटाखे निरंकुश रूप से जलाना एक आत्मघाती कदम ही है। लेकिन विडंबना यह कि इस मुद्दे पर गंभीर चर्चा केवल दिल्ली के प्रदूषण और पटाखों पर अंकुश लगाने को लेकर होती है। इस स्थिति में दिल्ली व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में पटाखों पर अंकुश लगाने के संदर्भ में देश की शीर्ष अदालत की टिप्पणी संवेदनशील और मार्गदर्शक है। कोर्ट ने सख्त लहजे में कहा कि यदि साफ वायु राष्ट्रीय राजधानी के विशिष्ट लोगों का हक है तो यह हक शेष देश के हर व्यक्ति को भी मिलना चाहिए। वैसे तो राष्ट्रीय राजधानी में वायु दूषित होने के तमाम कारक हैं, लेकिन पटाखों से होने वाले प्रदूषण की चर्चा गाहे-बगाहे होती है। खासकर कुछ प्रमुख त्योहारों के मौके व निजी समारोहों में जलाये जाने वाले पटाखों को लेकर लगातार सवाल उठाये जाते हैं। इसकी वजह यह है कि यह प्रदूषण का ऐसा कारण है जिससे बचा जा सकता है। लेकिन यह भी हकीकत है कि दिवाली आदि के मौके पर हवा की गुणवत्ता में भारी गिरावट देखी जाती है। सवाल यह है कि हम लोग क्यों नहीं सोचते कि हमारे पटाखे जलाने से श्वास रोगों से जूझते तमाम लोगों का जीना दुश्वार हो जाता है। यह एक हकीकत है कि देश के तमाम शहरों में हवा ही नहीं, पानी व मिट्टी तक में जहरीले तत्वों का समावेश हो चुका है। जो न केवल हमारी आबोहवा के लिये बल्कि हमारे शरीर के लिये भी घातक साबित हो रहा है। यही वजह है कि हाल के वर्षों में देश में श्वसन तंत्र से जुड़े रोगों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। साथ ही प्रदूषित हवा के प्रभाव में सांस संबंधी रोगों से लोगों के मरने का आंकड़ा भी बढ़ा है।

कहीं न कहीं हमारे वातावरण में बढ़ता प्रदूषण ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाने वाले कारकों में वृद्धि भी कर रहा है। लेकिन पटाखों से होने वाला प्रदूषण ऐसा है जो हमारे संयम के जरिये रोका जा सकता है। चिंता की बात यह है कि पटाखों के जलने से निकलने वाले कण हमारे श्वसनतंत्र को नुकसान पहुंचाने के साथ ही हमारे खून में घुल रहे हैं। जिसमें पीएम 2.5 और पीएम 10 जैसे महीन कण फेफड़ों में प्रवेश करके गंभीर रोगों को जन्म दे रहे हैं। इतना ही नहीं पटाखे जलाने के कारण जहरीली रासायनिक गैसों के रिसाव से हमारे पारिस्थितिकीय तंत्र को गंभीर क्षति पहुंच रही है। साथ ही ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन भी हमारे वायुमंडल में जलवायु परिवर्तन के संकटों को बढ़ाने में भूमिका निभा रहा है। लेकिन हम इसके बावजूद निजी सुख के लिये दूसरों के जीवन से खिलवाड़ से परहेज नहीं करते। सही मायनों में असली खुशी वही होती है जिससे हमारा समाज सुखी, स्वस्थ और खुश रह सके। अब चाहे हमारे त्योहार हों या निजी उत्सव, वे समाज के लिये अहितकारी नहीं होने चाहिए। देर-सवेर इस संकट की कीमत हर नागरिक को चुकानी पड़ती है। सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी के आलोक में हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अब चाहे दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर बर्नीहाट हो या पंजाब व राजस्थान के सबसे अधिक प्रदूषित शहर हों, उन्हें भी पटाखों के नियमन का लाभ मिलना चाहिए। यही वजह है कि अदालत को कहना पड़ा कि साफ हवा देश के हर नागरिक का अधिकार है। ऐसे में हमें दिल्ली या राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की चिंता के साथ ही शेष देश की भी चिंता गंभीरता से करनी चाहिए। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि दिल्ली में पटाखों पर नियंत्रण का जो भी फार्मूला बने, उसे सारे देश में भी लागू करना चाहिए। यह संकट सारे देश का है। एक नागरिक के तौर पर हमारा जिम्मेदार व संवेदनशील व्यवहार ही हमें इस संकट से उबार सकता है। विगत में सख्त कानून लागू करने के बावजूद नागरिकों के गैर-जिम्मेदार व्यवहार से प्रदूषण का संकट बढ़ा ही है।

कहकशां नहीं, कहर है बारिश का: प्रकृति का उग्र चेहरा

मानव की इच्छाओं का कोई अंत नहीं है और आज मानव अपनी इच्छाओं, लालच और सुविधाओं की अंधी दौड़ में प्रकृति के संतुलन को लगातार बिगाड़ता चला जा रहा है और इसका परिणाम मानव को किसी न किसी रूप में भुगतना पड़ रहा है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई, अनियंत्रित विकास कार्य, खनिजों व जल का अंधाधुंध दोहन, अधिक ऊर्जा का उपयोग, जीवाश्म ईंधनों का दहन, वन्यजीवों का विनाश, अनियंत्रित मानवीय गतिविधियां आदि कुछ कारण हैं, जो प्रकृति का विनाश कर रहे हैं ।प्रकृति से खिलवाड़ के दुष्परिणाम यह हो रहें हैं इससे धरती पर विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि, स्वास्थ्य समस्याएँ जैसे अस्थमा, एलर्जी, कैंसर आदि, जल संकट और खाद्य संकट, मानसिक तनाव और जीवन की गुणवत्ता में गिरावट के साथ ही साथ जैव विविधता का नुकसान हो रहा है। यदि यूं ही सब चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब मानव कहीं का नहीं रहेगा ।इस साल 5 अगस्त 2025 को उत्तरकाशी के धराली और सुक्खी टॉप में बादल फटने की घटना हुई ।बादल फटने के कारण यहां मूसलधार बारिश हुई, जिससे भारी बाढ़ आई और इस त्रासदी में कम से कम 5 लोगों की मृत्यु, 50 से अधिक लोग लापता, 40-50 घर और 50 होटल बह गए ।इसी प्रकार से थराली, चमोली में भी 23 अगस्त 2025 को रात के समय बादल फटने से मूसलधार बारिश हुई, जिससे मलबे के साथ बाढ़ आई, जिसमें एक व्यक्ति की मृत्यु, एक व्यक्ति लापता तथा कई घर, दुकानें और सड़कें मलबे से प्रभावित हुईं। इसके बाद देहरादून के सहस्त्रधारा और मालदेवता में 16 सितंबर 2025 को बादल फटा। जानकारी के अनुसार वहां रातभर की मूसलधार बारिश के कारण बादल फटा, जिससे बाढ़ आई और इससे कम से कम 4 लोगों की मृत्यु, 16 लोग लापता, कई दुकानें और वाहन बह गए ।यह भी खबरें आईं हैं कि टोंस नदी में बहने से 15 मजदूरों की मौत हो गई ।इसी दिन हरिद्वार, टिहरी और नैनीताल में भी मूसलधार बारिश के कारण नदियाँ उफान पर आ गईं, और कई स्थानों पर भूस्खलन और जलभराव हुआ, जिससे कई सड़कें अवरुद्ध हो गई, फसलों और घरों को नुकसान पहुंचा, तथा कई लोग फंस गए। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि हिमालयी क्षेत्र में बार-बार बादल फटने की घटनाएं हो रहीं हैं ।यह दर्शाता है कि आज मानसून की प्रकृति में पहले की तुलना में काफी बदलाव आ चुके हैं और यह कहीं न कहीं जलवायु परिवर्तन का प्रभाव है ।इस साल हिमाचल, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, पंजाब समेत देश के विभिन्न राज्यों में प्रकृति का प्रकोप देखने को मिला और यह अचानक से हुई घटनाएं नहीं हैं, अपितु कहीं न कहीं मानव को प्रकृति का एक संकेत है कि यदि हम अभी भी नहीं संभले तो आने वाले समय में हमें प्रकृति के और भी रौद्र रूप का सामना करना पड़ेगा। दरअसल, पहाड़ी क्षेत्रों में पहाड़ों से टकराकर हवा ऊपर उठती है। इससे नमी तेजी से संघनित होती है और छोटे क्षेत्र में अधिक पानी जमा हो जाता है। यही बादल फटने का बड़ा कारण है। अत्यधिक नमी और गर्म हवा का मिलना, हवा का संतुलन बिगड़ना, जलवायु परिवर्तन तथा वनों की कटाई और निर्माण बादल फटने के अन्य कारण हैं। हाल ही में देहरादून में अतिवृष्टि से तमसा, कारलीगाड़, टोंस व सहस्रधारा में जलस्तर बढ़ने से आसपास के घरों और दुकानों इत्यादि में एकाएक पानी तर गया। मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार ऋषिकेश की चंद्रभागा नदी भी उफान पर है। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस साल देहरादून में सितंबर में हुई बारिश ने बीते कई दशकों का रिकॉर्ड तोड़ दिया है, और इस बार पूरे उत्तराखंड में आसमान से आफत बरसाने में मानसून ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। पाठकों को बताता चलूं कि इस साल यानी कि 2025 में भारत में मानसून सीजन (जून से सितंबर) में सामान्य से अधिक बारिश हुई है, जो दीर्घकालिक औसत का लगभग 105% रही है। हालांकि, बारिश की मात्रा राज्य दर राज्य भिन्न रही है, लेकिन पहाड़ी राज्यों में भारी बारिश ने कहर बरपाया है। आंकड़े बताते हैं कि भारत में प्री-मॉनसून अवधि (1 मार्च से 31 मई) में 185.8 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य से 42% अधिक थी। जानकारी के अनुसार जून 2025 महीने में 180 मिमी वर्षा हुई, जो सामान्य 165.3 मिमी से 8.89% अधिक थी ।इसी प्रकार से अगस्त 2025 के दौरान दिल्ली में 400.1 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य 233.1 मिमी से 72% अधिक थी। पंजाब और हरियाणा का हाल किसी से छिपा नहीं हुआ है कि वहां पर किस कदर बारिश ने कहर बरपाया है। राजस्थान भी भारी बारिश का शिकार बना। आंकड़े बताते हैं कि 1 जून – 14 सितंबर 2025 तक पंजाब में 617.1 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य 409.7 मिमी से 51% अधिक है। इसी अवधि में हरियाणा में 145% अधिक वर्षा हुई, जो सामान्य 409.7 मिमी से अधिक है ।राजस्थान में इस अवधि में 436.7 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य 435.6 मिमी से अधिक है। सच तो यह है कि 2025 में भारत में बारिश की अत्यधिक घटनाएँ मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन, मानसून की अनियमितता, और अन्य मौसमीय कारकों के संयोजन के कारण हुईं। विशेषकर पंजाब, हरियाणा, और राजस्थान में यह स्थिति अधिक गंभीर रही, जिससे व्यापक बाढ़, फसल क्षति, और जनजीवन प्रभावित हुआ। मैदानी क्षेत्र तो मैदानी क्षेत्र, पहाड़ों को बारिश ने बुरी तरह से प्रभावित किया। दरअसल, हिमालयी क्षेत्र की भौगोलिक बनावट और नाजुक पारिस्थितिकीय तंत्र इस क्षेत्र को प्राकृतिक आपदाओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बनाते हैं। मौसम विभाग ने हाल फिलहाल उत्तराखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर राज्यों, कर्नाटक से लेकर तमिलनाडु तक भारी बारिश के दौर के जारी रहने की संभावनाएं जताई हैं। बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि बादल फटने की घटनाएं भू-स्खलन और बाढ़ का कारण बनती हैं और साथ ही, स्थानीय समुदायों, बुनियादी ढांचे और आजीविका को भी भारी नुकसान पहुंचाती हैं। आज प्रकृति में निरंतर बदलाव आ रहें हैं और इसके लिए कहीं न कहीं मनुष्य और उसकी गतिविधियां जिम्मेदार हैं। अतः जरूरत इस बात की है कि हम प्रकृति का सम्मान करें, उसकी रक्षा व संरक्षण करें। इसके लिए हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे और जंगलों की रक्षा करनी होगी ।पानी और ऊर्जा का सावधानी से उपयोग करना होगा। प्रदूषण कम करने के लिए पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली को अपनाना होगा। प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करना होगा और प्लास्टिक के विकल्प तलाशने होंगे ।जैव विविधता की रक्षा में सहयोग करना होगा। इतना ही नहीं, सबसे बड़ी बात यह है कि हमें जलवायु परिवर्तन पर जागरूकता फैलानी होगी। वास्तव में उत्तराखंड, हिमाचल इत्यादि राज्यों में जो दृश्य हाल के दिनों में दिख रहे हैं, वे एक चेतावनी हैं कि हमारी नीतियां और तैयारियां, दोनों ही इस खतरे के सामने अपर्याप्त हैं। इस वर्ष समय से पहले आए मानसून ने हिमालय से सटे राज्यों के अलावा पंजाब जैसे मैदानी क्षेत्रों और देश की राजधानी समेत आसपास के क्षेत्रों को भी नहीं बख्शा। लिहाजा इन आपदाओं से निपटने के लिए तात्कालिक और दीर्घकालिक उपायों की आवश्यकता है। इतना ही नहीं, हमें मौसम पूर्वानुमान और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों को भी अधिक मजबूत बनाने की दिशा में काम करने की आवश्यकता है। आपदा प्रबंधन और प्रभावित व्यक्तियों के पुनर्वास पर भी हमें ध्यान देना होगा ।इतना ही नहीं, स्थानीय जनता को मौसम विभाग की भविष्यवाणी और सूचनाओं के प्रति जागरूक बनाने के लिए बहुस्तरीय प्रयास किए जा सकते हैं। मौसम विभाग से प्राप्त जानकारी को सरल भाषा में समझाकर साझा किया जाए, ताकि आमजन सतर्क हो सके। साथ ही साथ गलत सूचनाओं को तुरंत खंडित करने के लिए प्रशासन और मीडिया के बीच समन्वय स्थापित होना चाहिए। पंचायत, नगर निगम, स्वयंसेवी संगठन, धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को जागरूकता अभियान में शामिल किया जाना चाहिए। हिमालयी क्षेत्र में निर्माण गतिविधियों पर भी स्थानीय प्रशासन और लोगों को अपनी नज़र रखनी होगी, क्यों कि अवैध निर्माण के कारण अनेक प्रकार की दिक्कतों और परेशानियों का सामना स्थानीय जनता को करना पड़ता है ।ताजा आपदा हमें यह याद दिलाती है कि प्रकृति के साथ खिलवाड़ की कीमत बहुत भारी हो सकती है। हमें यह चाहिए कि हम प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करें और प्रकृति के नियमों का सम्मान करें। हमें यह चाहिए कि हम विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों काआवश्यकता अनुसार उपयोग करें, न कि असीमित दोहन ।वन, जल, मिट्टी, हवा, पशु-पक्षी सबकी रक्षा करना हमारा नैतिक कर्तव्य और जिम्मेदारी है ।विकास करते समय हम पर्यावरणीय संतुलन का ध्यान रखें और अपनी जीवनशैली को प्रकृति अनुकूल बनाना सीखें, तभी वास्तव में हम प्रकृति के रौद्र रूप से बच सकते हैं।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

नेपाल में राजनीतिक भूचाल: वैश्विक शक्तियों की बढ़ी दिलचस्पी

डॉ ब्रजेश कुमार मिश्र

दक्षिण एशिया विगत दो दशकों से आग्नेय क्षेत्र बना हुआ है। यह भारतीय उपमहाद्वीप के लिए अत्यन्त घातक है। पहले पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश और अब नेपाल में जो स्थिति बनी है, वह इस खित्ते के लिए अत्यन्त घातक है। दबी जुबान से ही सही विपक्ष भारत में भी ऐसा ही होगा, भविष्यवाणी कर रहा है। बहरहाल भारत में ऐसा कुछ नही होने वाला, इसके पक्ष में सैकड़ो दलीले दी जा सकती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के गलियारों में विशेष रूप से दक्षिण एशिया की भू-राजनीति को प्रभावित करने वाली घटना जो नेपाल में हुई है, को लेकर जबरदस्त बहस शुरू हो गई है। नेपाल की स्थिति के लिए वस्तुतः जिम्मेदार कौन हैऔर ऐसी स्थिति मेंभारतीय रणनीति क्या होगी? ये यक्ष प्रश्न हैं और इनका निदान क्या हो सकता है, यह विश्लेषण का विषय है। 25 अगस्त को नेपाल के सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार से विदेशी सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की जवाबदेही तय करने को कहा। इसके बाद 28 अगस्त को सरकार ने सभी प्लेटफार्मों को 3 सितम्बर तक पंजीकरण कराने का आदेश दिया। 28 में से केवल 2 ने इसका पालन किया जबकि 26 ने इनकार कर दिया। सरकार ने 4 सितम्बर को गैर-अनुपालन पर सोशल मीडिया सेवाएँ रोक दीं। यह कदम आम जनता के लिए डिजिटल अधिकार पर प्रहार जैसा साबित हुआ क्योंकि सोशल मीडिया अब दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुका है। युवाओं, खासकर 14 से 28 वर्ष के ₹जेन ज़ी₹ वर्ग ने इस निर्णय के खिलाफ व्यापक आंदोलन छेड़ दिया। उन्होंने भ्रष्टाचार और प्रतिबंध दोनों के विरोध में नारों के साथ सड़कों पर उतरकर आवाज़ बुलंद की— "भ्रष्टाचार ख़त्म करो" और "सोशल मीडिया नहीं, भ्रष्टाचार पर प्रतिबंध लगाओ।" काठमांडू और अन्य शहरों में यह विरोध उग्र हो गया। प्रदर्शनकारियों ने कई ऐतिहासिक और आधुनिक इमारतों को आग लगा दी । स्थिति इतनी गंभीर हुई कि प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को इस्तीफा देना पड़ा। ग्लोबल डिजिटल इनसाइट्स की रिपोर्ट के अनुसार नेपाल की 55 प्रतिशत आबादी इंटरनेट का उपयोग करती है और इनमें से आधी सोशल मीडिया पर सक्रिय है। प्रतिबंध से लाखों उपयोगकर्ता प्रभावित हुए। 9 सितम्बर तक यह आंदोलन पूरे देश में फैल गया और पुलिस कार्रवाई में कम से कम 19 प्रदर्शनकारी मारे गए तथा दर्जनों घायल हो गए।

नेपाल लंबे समय से भ्रष्टाचार और घोटालों से जूझ रहा है। पूर्वप्रधानमंत्री माधव नेपाल पतंजलि योगपीठ भूमि अधिग्रहण विवाद में फंसे हैं जबकि केपी शर्मा ओली पर गिरिबंधु चाय बागान घोटाले के आरोप हैं। 2023 के फ़र्ज़ी भूटानी शरणार्थी प्रकरण ने स्थिति और बिगाड़ी, जिसमें दो पूर्व मंत्री और 12 वरिष्ठ नौकरशाह जेल भेजे गए। इसमें पूर्व प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा की पत्नी आरज़ू राणा का नाम भी सामने आया। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के भ्रष्टाचार सूचकांक 2024 में नेपाल 180 देशों में 107वें स्थान पर रहा ।कोविड-19 के बाद अर्थव्यवस्था में सुधार के संकेत मिले थे और एशियाई विकास बैंक ने 2025 में 4% से अधिक वृद्धि का अनुमान जताया था परंतु राजनीतिक अस्थिरता और हिंसा ने विकास पर प्रश्नचिह्न लगा दिया। 2021 की जनगणना के अनुसार 30 लाख नेपाली विदेशों में रहते हैं और हर वर्ष 2-3 लाख लोग रोज़गार हेतु पलायन करते हैं। मई-जून 2025 में प्रवासी नेपालियों ने 176 अरब नेपाली रुपये (लगभग 1.3 बिलियन डॉलर) भेजे, जो जीडीपी का 24% है। देश में उद्योग और निवेश की स्थिति कमजोर है। राजनीतिक हस्तक्षेप से शिक्षा प्रभावित है, जिससे छात्र विदेश पलायन कर रहे हैं। वहीं "नेपो किड्स" को ठेके और पद मिलने से जेन ज़ी वर्ग असंतुष्ट है। सरकार ने हिंसा को बाहरी हस्तक्षेप बताया, जबकि प्रदर्शनकारियों ने इसे जनाक्रोश का नतीजा कहा। काठमांडू के मेयर और राजशाही समर्थकों के जुड़ने से हालात और जटिल हो गए। नेपाल भू-राजनीति की दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण है। यह "जोन ऑफ स्ट्रैटेजिक कॉन्संट्रेशन₹ है अर्थात एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र जहां दो या दो से अधिक शक्तिशाली देशों की रणनीतिक और भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और हित केंद्रित होते हैं, जिसके कारण वे उस क्षेत्र पर अपना प्रभाव बढ़ाना चाहते हैं। नेपाल, जो चीन और भारत के बीच स्थित है, एक ऐसा ही क्षेत्र है, जिसे ₹बफर स्टेट₹ के रूप में भी देखा जाता है, और इन दोनों देशों के लिए बराबर रणनीतिक महत्त्व रखता है। भारत की दृष्टि से नेपाल को भारत के साथ होना चाहिए क्योंकि यदि वह तटस्थ रहता है तो वह भारत के हित से और भी खतरनाक है। कौटिल्य के मण्डल सिद्धांत के अनुसार मध्यम राज्य का झुकाव अपनी तरफ होना चाहिए। नेपाल की इसी भू-राजनीतिक स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए वैश्विक शक्तियां भी वहाँ अपना हित तलाश करने की कोशिश कर रही हैं। अमेरिका इस कड़ी में सबसे पहले आता है क्योंकि आज ग्लोबल पॉलिटिक्स में अमेरिका को चीन काउंटर कर रहा है और इस कारण नेपाल में अमेरिका की अभिरुचि बढ़ जाती है। हाल के वर्षों में नेपाल का झुकाव चीन की ओर बढ़ा है और भारत से दूरी बढ़ी है। अतः अमेरिका इंडोपेसिफिक स्ट्रेटजी में नेपाल को अपने साथ चाहता है। नेपाल एक साफ्ट स्टेट है। साफ्ट स्टेट वह राज्य होता है जो अपने कानून को ठीक से लागू करने की क्षमता न रखता हो, बुनियादी सुविधाओं के विकास को करने में अक्षम हो। अमेरिका नैशनल एंडोमेन्ट फॉर डेमोक्रेसी के जरिए नेपाल की सहायता करने का इच्छुक था। इसी क्रम में 2017 में उसने मिलेनियम चैलेंज कार्पोरेशन के जरिए 500 मिलियन डॉलर ग्रांट देने का प्रस्ताव नेपाल के समक्ष रखा परन्तु तत्कालीन प्रधानमंत्री के पी ओली ने मना कर दिया। इसके पीछे कारण वस्तुतः मिलेनियम चैलेंज कार्पोरेशन का अनुच्छेद 7.1 था। इसके तहत इस ग्रांट को लेने के बाद यदि अमेरिका कोई प्रोजेक्ट वहाँ चलाता और यदि यह प्रोजेक्ट किसी भी स्तर पर नेपाल के घरेलू कानून के विरुद्ध होता तो यह समझौता नेपाली कानून से ऊपर होगा, साथ ही अमेरिकी अधिकारी नेपाली कानून के दायरे से बाहर होंगे। इस ग्रांट से नेपाल की तरक्की होगी और सॉफ्ट स्टेट का धब्बा भी हट जाएगा। के पी ओली के इस कदम से अमेरिका और नेपाल के बीच दरार बढ़ गयी। अन्ततः जुलाई 2021 में ओली सरकार के पतन के बाद देउबा सरकार ने इसको स्वीकार कर लिया। इसके बाद अमेरिका ने ग्रांट दे दी किन्तु समस्या खत्म नही हुई अमेरिका ने नेपाल को चीन के 'बेल्ट एण्ड रोड इनीसीएटिव' से नेपाल को अलग होने के लिए कहा लेकिन नेपाल तो अब तक पूरी तरह से चीनी चंगुल में फंस चुका है। अमेरिका अपने इंडोपेसिफिक स्ट्रेटजी को लेकर दृढ़ संकल्पित है और वह चाहता है कि चीन का वहाँ से प्रभाव कम हो। अतः इस बात की प्रबल संभावना है कि इसी के मद्देनज़र अमेरिका ने इस संघर्ष को हवा दी हो। चीन भी ऐसा कर सकता है क्योंकि ओली सरकार उसके लिए फायदे का सौदा थी। ऐसा लगता है कि पाकिस्तान का भी हाथ हो क्योंकि हाल के दिनों में पाकिस्तान का प्रभाव कम हुआ है । आई एस आई चाहती है कि नेपाल उसके लिए फिर से पनाहगाह बने।

कहकशां से क्रोध तक: प्रकृति का रौद्र रूप और मानव की पीड़ा!

मानव की इच्छाओं का कोई अंत नहीं है और आज मानव अपनी इच्छाओं, लालच और सुविधाओं की अंधी दौड़ में प्रकृति के संतुलन को लगातार बिगाड़ता चला जा रहा है और इसका परिणाम मानव को किसी न किसी रूप में भुगतना पड़ रहा है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई, अनियंत्रित विकास कार्य, खनिजों व जल का अंधाधुंध दोहन, अधिक ऊर्जा का उपयोग, जीवाश्म ईंधनों का दहन, वन्यजीवों का विनाश, अनियंत्रित मानवीय गतिविधियां आदि कुछ कारण हैं, जो प्रकृति का विनाश कर रहे हैं।प्रकृति से खिलवाड़ के दुष्परिणाम यह हो रहें हैं इससे धरती पर विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि, स्वास्थ्य समस्याएँ जैसे अस्थमा, एलर्जी, कैंसर आदि, जल संकट और खाद्य संकट, मानसिक तनाव और जीवन की गुणवत्ता में गिरावट के साथ ही साथ जैव विविधता का नुकसान हो रहा है। यदि यूं ही सब चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब मानव कहीं का नहीं रहेगा।इस साल 5 अगस्त 2025 को उत्तरकाशी के धराली और सुक्खी टॉप में बादल फटने की घटना हुई।बादल फटने के कारण यहां मूसलधार बारिश हुई, जिससे भारी बाढ़ आई और इस त्रासदी में कम से कम 5 लोगों की मृत्यु, 50 से अधिक लोग लापता, 40-50 घर और 50 होटल बह गए।इसी प्रकार से

थराली, चमोली में भी 23 अगस्त 2025 को रात के समय बादल फटने से मूसलधार बारिश हुई, जिससे मलबे के साथ बाढ़ आई, जिसमें एक व्यक्ति की मृत्यु, एक व्यक्ति लापता तथा कई घर, दुकानें और सड़कें मलबे से प्रभावित हुईं। इसके बाद देहरादून के सहस्त्रधारा और मालदेवता में 16 सितंबर 2025 को बादल फटा। जानकारी के अनुसार वहां रातभर की मूसलधार बारिश के कारण बादल फटा, जिससे बाढ़ आई और इससे कम से कम 4 लोगों की मृत्यु, 16 लोग लापता, कई दुकानें और वाहन बह गए।यह भी खबरें आईं हैं कि टोंस नदी में बहने से 15 मजदूरों की मौत हो गई।इसी दिन हरिद्वार, टिहरी और नैनीताल में भी मूसलधार बारिश के कारण नदियाँ उफान पर आ गईं, और कई स्थानों पर भूस्खलन और जलभराव हुआ, जिससे कई सड़कें अवरुद्ध हो गई, फसलों और घरों को नुकसान पहुंचा, तथा कई लोग फंस गए। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि हिमालयी क्षेत्र में बार-बार बादल फटने की घटनाएं हो रहीं हैं।यह दर्शाता है कि आज मानसून की प्रकृति में पहले की तुलना में काफी बदलाव आ चुके हैं और यह कहीं न कहीं जलवायु परिवर्तन का प्रभाव है।इस साल हिमाचल, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, पंजाब समेत देश के विभिन्न राज्यों में प्रकृति का प्रकोप देखने को मिला और यह अचानक से हुई घटनाएं नहीं हैं, अपितु कहीं न कहीं मानव को प्रकृति का एक संकेत है कि यदि हम अभी भी नहीं संभले तो आने वाले समय में हमें प्रकृति के और भी रौद्र रूप का सामना करना पड़ेगा। दरअसल, पहाड़ी क्षेत्रों में पहाड़ों से टकराकर हवा ऊपर उठती है।इससे नमी तेजी से संघनित होती है और छोटे क्षेत्र में अधिक पानी जमा हो जाता है। यही बादल फटने का बड़ा कारण है। अत्यधिक नमी और गर्म हवा का मिलना, हवा का संतुलन बिगड़ना, जलवायु परिवर्तन तथा वनों की कटाई और निर्माण बादल फटने के अन्य कारण हैं। हाल ही में देहरादून में अतिवृष्टि से तमसा, कारलीगाड़, टोंस व सहस्त्रधारा में जलस्तर बढ़ने से आसपास के घरों और दुकानों इत्यादि में एकाएक पानी तर गया। मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार ऋषिकेश की चंद्रभागा नदी भी उफान पर है। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस साल देहरादून में सितंबर में हुई बारिश ने बीते कई दशकों का रिकॉर्ड तोड़ दिया है, और इस बार पूरे उत्तराखंड में आसमान से आफत बरसाने में मानसून ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। पाठकों को बताता चलूं कि इस साल यानी कि 2025 में भारत में मानसून सीजन (जून से सितंबर) में सामान्य से अधिक बारिश हुई है, जो दीर्घकालिक औसत का लगभग 105% रही है। हालांकि, बारिश की मात्रा राज्य दर राज्य भिन्न रही है, लेकिन पहाड़ी राज्यों में भारी बारिश ने कहर बरपाया है। आंकड़े बताते हैं कि भारत में प्री-मॉनसून अवधि (1 मार्च से 31 मई) में 185.8 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य से 42% अधिक थी। जानकारी के अनुसार जून 2025 महीने में 180 मिमी वर्षा हुई, जो सामान्य 165.3 मिमी से 8.89% अधिक थी।इसी प्रकार से अगस्त 2025 के दौरान दिल्ली में 400.1 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य 233.1 मिमी से 72% अधिक थी। पंजाब और हरियाणा का हाल किसी से छिपा नहीं हुआ है कि वहां पर किस कदर बारिश ने कहर बरपाया है। राजस्थान भी भारी बारिश का शिकार बना। आंकड़े बताते हैं कि 1 जून – 14 सितंबर 2025 तक पंजाब में 617.1 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य 409.7 मिमी से 51% अधिक है। इसी अवधि में हरियाणा में 145% अधिक वर्षा हुई, जो सामान्य 409.7 मिमी से अधिक है।राजस्थान में इस अवधि में 436.7 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य 435.6 मिमी से अधिक है। सच तो यह है कि 2025 में भारत में बारिश की अत्यधिक घटनाएँ मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन, मानसून की अनियमितता, और अन्य मौसमीय कारकों के संयोजन के कारण हुईं। विशेषकर पंजाब, हरियाणा, और राजस्थान में यह स्थिति अधिक गंभीर रही, जिससे व्यापक बाढ़, फसल क्षति, और जनजीवन प्रभावित हुआ। मैदानी क्षेत्र तो मैदानी क्षेत्र, पहाड़ों को बारिश ने बुरी तरह से प्रभावित किया।दरअसल, हिमालयी क्षेत्र की भौगोलिक बनावट और नाजुक पारिस्थितिकीय तंत्र इस क्षेत्र को प्राकृतिक आपदाओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बनाते हैं। मौसम विभाग ने हाल फिलहाल उत्तराखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर राज्यों, कर्नाटक से लेकर तमिलनाडु तक भारी बारिश के दौर के जारी रहने की संभावनाएं जताई हैं। बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि बादल फटने की घटनाएं भू-स्खलन और बाढ़ का कारण बनती हैं और साथ ही, स्थानीय समुदायों, बुनियादी ढांचे और आजीविका को भी भारी नुकसान पहुंचाती हैं। आज प्रकृति में निरंतर बदलाव आ रहें हैं और इसके लिए कहीं न कहीं मनुष्य और उसकी गतिविधियां जिम्मेदार हैं। अतः जरूरत इस बात की है कि हम प्रकृति का सम्मान करें, उसकी रक्षा व संरक्षण करें। इसके लिए हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे और जंगलों की रक्षा करनी होगी।पानी और ऊर्जा का सावधानी से उपयोग करना होगा। प्रदूषण कम करने के लिए पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली को अपनाना होगा। प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करना होगा और प्लास्टिक के विकल्प तलाशने होंगे।

जैव विविधता की रक्षा में सहयोग करना होगा। इतना ही नहीं, सबसे बड़ी बात यह है कि हमें जलवायु परिवर्तन पर जागरूकता फैलानी होगी। वास्तव में उत्तराखंड, हिमाचल इत्यादि राज्यों में जो दृश्य हाल के दिनों में दिख रहे हैं, वे एक चेतावनी हैं कि हमारी नीतियां और तैयारियां, दोनों ही इस खतरे के सामने अपर्याप्त हैं। इस वर्ष समय से पहले आए मानसून ने हिमालय से सटे राज्यों के अलावा पंजाब जैसे मैदानी क्षेत्रों और देश की राजधानी समेत आसपास के क्षेत्रों को भी नहीं बख्शा। लिहाजा इन आपदाओं से निपटने के लिए तात्कालिक और दीर्घकालिक उपायों की आवश्यकता है। इतना ही नहीं, हमें मौसम पूर्वानुमान और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों को भी अधिक मजबूत बनाने की दिशा में काम करने की आवश्यकता है। आपदा प्रबंधन और प्रभावित व्यक्तियों के पुनर्वास पर भी हमें ध्यान देना होगा।

इतना ही नहीं, स्थानीय जनता को मौसम विभाग की भविष्यवाणी और सूचनाओं के प्रति जागरूक बनाने के लिए बहुस्तरीय प्रयास किए जा सकते हैं।

मौसम विभाग से प्राप्त जानकारी को सरल भाषा में समझाकर साझा किया जाए, ताकि आमजन सतर्क हो सके। साथ ही साथ गलत सूचनाओं को तुरंत खंडित करने के लिए प्रशासन और मीडिया के बीच समन्वय स्थापित होना चाहिए। पंचायत, नगर निगम, स्वयंसेवी संगठन, धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को जागरूकता अभियान में शामिल किया जाना चाहिए।हिमालयी क्षेत्र में निर्माण गतिविधियों पर भी स्थानीय प्रशासन और लोगों को अपनी नज़र रखनी होगी, क्यों कि अवैध निर्माण के कारण अनेक प्रकार की दिक्कतों और परेशानियों का सामना स्थानीय जनता को करना पड़ता है।ताजा आपदा हमें यह याद दिलाती है कि प्रकृति के साथ खिलवाड़ की कीमत बहुत भारी हो सकती है। हमें यह चाहिए कि हम प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करें और प्रकृति के नियमों का सम्मान करें। हमें यह चाहिए कि हम विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों का आवश्यकता अनुसार उपयोग करें, न कि असीमित दोहन।वन, जल, मिट्टी, हवा, पशु-पक्षी सबकी रक्षा करना हमारा नैतिक कर्तव्य और जिम्मेदारी है।विकास करते समय हम पर्यावरणीय संतुलन का ध्यान रखें और अपनी जीवनशैली को प्रकृति अनुकूल बनाना सीखें, तभी वास्तव में हम प्रकृति के रौद्र रूप से बच सकते हैं।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार,

डीजे साउंड गाड़ी बंद होगा : राज्य सरकार ने जारी किए सख्त आदेश

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राज्य परिवहन प्राधिकरण (एसटीए) ने वाहनों के मूल डिज़ाइन में अवैध बदलाव, अत्यधिक शोर और प्रकाश व्यवस्था के इस्तेमाल के खिलाफ एक परिपत्र जारी किया है। इसके साथ ही, डीजे सिस्टम, एम्पलीफायर, मिक्सर और लेज़र लाइट कंट्रोलर जैसे अवैध उपकरणों के इस्तेमाल पर भी प्रतिबंध लगाया जाएगा।एसटीए इन वाहनों को रोकने के लिए सख्त कार्रवाई करेगा क्योंकि ये अन्य सड़क उपयोगकर्ताओं के लिए खतरा पैदा करते हैं। नियमों का उल्लंघन करने पर जुर्माना लगाया जाएगा और वाहन का पंजीकरण व फिटनेस रद्द किया जाएगा। एसटीए ने सार्वजनिक स्थानों पर ऐसे वाहनों के अवैध उपयोग को रोकने के लिए पुलिस विभाग से भी सहयोग मांगा है।

जनता से अनुरोध है कि मानसून के मौसम में ऐसे असुरक्षित डीजे वाहनों का उपयोग न करें। एसटीए ने सभी आरटीओ को कार्रवाई करने, डीजे वाहनों को जब्त करने और कानूनी कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए यह निर्णय लिया गया है।

पुरुषों की ताकत बढ़ाने वाली कुछ आयुर्वेदिक औषधियाँ

आयुर्वेदिक ग्रंथों के आधार पर प्राचीन जड़ी-बूटियों, रसायनों और सोना, चांदी, मोती भस्म जैसी धातुओं से शारीरिक दुर्बलता दूर करके शारीरिक ताकत बढ़ाने वाली औषधी तैयार करते थे । वो औषधियां बहुत गुणों से भरपूर होती थी। इसलिए आज हम इस आर्टिकल में आपको बता रहे हैं कि राजा-महाराजाओं द्वारा शारीरिक दुर्बलता को दूर कर कामोतेजना को बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले उन प्राचीन नुस्खों के बारे में जिनमें से कुछ आज भी आसानी से मिल जाते हैं। जिनकी मदद से आप भी अपनी कामेच्छा बढ़ाने में इस्तेमाल कर सकते हैं !!

1- शिलाजीत:- शिलाजीत एक तार जैसा पद्दार्थ है जो गर्मियों के समय में हिमालय की चट्टानों से निकलता है। इसे अमृत और " कमजोरी विनाशक" के नाम से भी जाना जाता है। शीरीरिक दुर्बलता को दूर करने और कामोतेजना को बढ़ाने के लिए आज भी कई लोग शिलाजीत का इस्तेमाल करते हैं. इससे कमजोरी, एनर्जी की कमी, खराब इम्युनिटी, असमय बुढ़ापा, इरेक्टाइल डिस्फंक्शन जैसी समस्याएं दूर होती हैं। शिलाजीत को चावल के दाने के बराबर एक चम्मच गाय के घी या शहद के साथ लेना चाहिए !!

२- अश्वगंधा:- अश्वगंधा एक चमत्कारी गुणों वाली औषधि है, आर्युवेद में अश्वगंधा का विशेष स्थान है, इसे भारत में कई स्थानों पर भारतीय गिनसेंग भी कहा जाता है। इसकी जड़ों का इस्तेमाल कई प्रकार की दवाओं को बनाने में किया जाता है। कमजोरी, थकान, लो स्पर्म काउंट, इम्युनिटी की समस्या को दूर करने के लिए प्राचीन समय से ही अश्वगंधा का इस्तेमाल किया जा रहा है. सोने से पहले गुनगुने दूध के साथ एक चम्मच अश्वगंधा पावडर का सेवन करना पुरुषों के लिए काफी फायदेमंद बताया जाता है !!

३- सफेद मूसली:- सफेद मूसली एक शक्तिवर्धक जड़ी बूटी है जो कि ज्यादातर यौन क्षमता को बढ़ाने के लिये प्रयोग की जाती है। मगर ऐसा नहीं है कि इसका केवल एक ही काम हो, यह अन्य औषधीय गुणों से भी भरी हुई होती है। विश्व बाजार में इसकी बहुत मांग बढ़ी है। इरेक्टाइल डिस्फंक्शन, इन्फर्टिलिटी, स्पर्म की कमी, कमजोरी और कमजोर इम्युनिटी की समस्या को दूर करने के लिए सफेद मूसली का सेवन प्राचीन समय से किया जाता रहा है। बेहतर परिणाम के लिए मिश्री और दूध के साथ एक चम्मच मूसली पावडर का सेवन सुबह और शाम को करना चाहिए !!

4- शतावरी:- परंपरागत रूप से शतावरी को महिलाओं की जड़ी बूटी माना गया है, हांलाकि यह पौधा पुरुषों के हार्मोन लेवल को बढ़ा कर उनकी कामुकता में भी इजाफा कर सकता है। पुरुषों में इन्फर्टिलिटी, इरेक्टाइल डिस्फंक्शन, थकान, कमजोरी, लो स्पर्म काउंट और यूरिन की समस्या को दूर करने के लिए शतावर के प्राचीन नुस्खे का इस्तेमाल आज भी किया जाता है। बेहतर परिणाम के लिए एक चम्मच मिश्री और गाय के घी के साथ आधा चम्मच शतावर पावडर का इस्तेमाल करना चाहिए और फिर दूध पीना चाहिए !!

5- केसर:- सदियों से केसर का प्रयोग स्वास्थ्य और सौंदर्य लाभ पाने के लिए किया जाता रहा है। केसर की तासीर गर्म होती हैं। केसर हमारे शरीर की दुर्बलता को दूर करके ताकत प्रदान करती है। केसर के नुस्खे का इस्तेमाल प्राचीन समय में राजा-महाराजा भी किया करते थे। इरेक्टाइल डिस्फंक्शन, इन्फर्टिलिटी, लो स्पर्म काउंट, कमजोरी और थकान जैसी समस्या से निजात पाने के लिए केसर का इस्तेमाल किया जाता है. इसके लिए गुनगुने दूध में चुटकी भर केसर डालकर रात को सोने से पहले उसका सेवन करना चाहिए !

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के 75वें जन्मदिन के अवसर पर 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान का राज्य स्तरीय कार्यक्रम

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के 75वें जन्मदिन के अवसर पर 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के राज्य स्तरीय कार्यक्रम में शामिल होते हुए थे। मुख्यमंत्री ने आम का पौधा लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। गौरतलब है कि आज प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर पूरे राज्य में एक ही दिन में 75 लाख पौधे रोपे गए। इस लक्ष्य को सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन यह लक्ष्य दोपहर 1:33 बजे तक पूरा कर लिया गया। मुख्यमंत्री ने इसके लिए सभी संबंधित विभागों, कर्मचारियों, छात्रों, युवाओं और आम जनता का आभार व्यक्त किया।

इस कार्यक्रम में, मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए उन्हें देश का विकास पुरुष और विश्व का सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय नेता बताया और भगवान जगन्नाथ से उनके दीर्घायु और मंगलमय जीवन की कामना की। प्रधानमंत्री के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि नरेंद्र मोदी देश के पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं जिनका जन्म स्वतंत्रता के बाद हुआ है। अपने 55 वर्ष के राजनीतिक जीवन में उन्होंने सदैव मातृभूमि की सेवा के बारे में सोचा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनका पूरा जीवन भारत माता की सेवा के लिए समर्पित है।

प्रधानमंत्री की दृष्टि, दिशा, नेतृत्व और कार्यशैली को अद्वितीय और अलग बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी का जीवन सदैव 'सेवा और समर्पण' के लिए जाना जाता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने पूरे देश का भ्रमण किया है और जमीनी स्तर पर लोगों की समस्याओं को समझा है। अपने व्यक्तिगत अनुभव से लोगों की समस्याओं को जानकर प्रधानमंत्री उनका समाधान ढूंढते हैं। चाहे वह उज्ज्वला योजना के माध्यम से माताओं की रसोई को धुआँ मुक्त बनाना हो, या जन-धन योजना के तहत गरीबों के बैंक खाते खोलना हो, या आयुष्मान भारत योजना के तहत करोड़ों लोगों को मुफ्त चिकित्सा सुविधा प्रदान करना हो, या मातृ वंदना योजना के तहत माताओं को सहायता प्रदान करना हो, या प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के माध्यम से किसानों को सहायता प्रदान करना हो, मुख्यमंत्री ने कहा कि उनका हर निर्णय आम लोगों की समस्याओं के समाधान के उद्देश्य को दर्शाता है।

यह कहते हुए कि उनका हर कार्य उनके प्रखर राष्ट्रवाद और देशभक्ति को दर्शाता है, मुख्यमंत्री ने कहा कि राष्ट्रहित मोदी जी के लिए एक नारा नहीं, बल्कि उनकी जीवन शैली है। एक पेड़ माँ के नाम अभियान पर प्रकाश डालते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आज प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर 75 लाख पेड़ लगाए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री का जीवन अपनी माँ के आशीर्वाद से राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित रहा है। इसलिए मोदी जी ने उनके सम्मान में धरती माता की रक्षा के लिए यह अभियान शुरू किया है। इसलिए, मुख्यमंत्री ने कहा कि आज का दिन धरती माता और धरती माता दोनों को समर्पित है।

सीआरपीएफ जवान को किसी ने गीतांजलि सुपर फास्ट ट्रेन से दिया धक्का, घायल

राउरकेला से चक्रधरपुर आने के क्रम में रेल मंडल स्टेशन पर हुई दुर्घटना

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , चक्रधरपुर रेलवे स्टेशन में मंगलवार सुबह तकरीबन 9 बजे के करीब एक आरपीएफ जवान चलती ट्रेन से गिरकर घायल हो गया। घायल आरपीएफ जवान का नाम मंजीत सिंह मुंडा है। घटना मुंबई-हावड़ा गीतांजलि सुपरफास्ट एक्सप्रेस के चक्रधरपुर स्टेशन में प्रवेश करने के दौरान घटी। गीतांजलि एक्सप्रेस में सवार आरपीएफ जवान मंजीत मुंडा ने बताया कि वह राउरकेला से चक्रधरपुर आ रहा था। जब ट्रेन चक्रधरपुर स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या दो में प्रवेश कर रही थी तभी वह स्टेशन में उतरने के लिए कोच की गेट पर खड़ा था। इसी दौरान किसी ने उसे पीछे से अचानक धक्का दे दिया। जिसके कारण उसके शरीर के कई हिस्सों में गंभीर चोटें आई।

प्लेटफॉर्म में मौजूद लोगों ने किसी तरह उसे बाहर निकाला और उसकी जान बचा ली। इसके बाद मेडिकल सुविधा के लिए रेलवे अस्पताल को इसकी सूचना दी गई। रेलवे अस्पताल से आई एंबुलेंस के माध्यम से आरपीएफ जवान को रेलवे अस्पताल ले जाया गया, जहां उसे प्राथमिक उपचार देकर टाटा टेल्को रेफर कर दिया गया। आरपीएफ जवान मंजीत सिंह मुंडा ने बताया कि वह रांची का रहने वाला है और धनबाद में पदस्थापित है। किसी काम के सिलसिले में वह चक्रधरपुर आ रहा था, लेकिन पीछे से धक्का दिए जाने से उसके साथ हादसा हो गया।

झारखंड में मनरेगा योजना से होगी 336 पंचायतों में लीची की खेती

आम पर सक्सेस स्टोरी लिखे जाने के बाद लीची पर सरकारी फोकस

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

खूंटी , झारखंड में लीची की खेती को बढ़ावा देने के लिए 336 पंचायतों का चयन कर लिया गया है। इन पंचायतों में लीची के पौधे लगाने की पूरी तैयारी हो चुकी है। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय इस योजना में तकनीकी सलाह दे रहा है। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय की सलाह पर पहले झारखंड में आम की खेती शुरू की गई थी, जिसके शानदार नतीजों ने राज्य को आम की खेती में आत्मनिर्भर बना दिया। अब इसी तर्ज पर लीची की खेती को बढ़ाने की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं।

मनरेगा योजना के तहत इन 336 पंचायतों में लीची के पौधे लगाए जाएंगे। पौधों की खरीद, श्रमिकों का भुगतान और सामग्री के लिए फंड मनरेगा से ही उपलब्ध होगा। बागवानी मिशन से पौधे खरीदे जाएंगे, क्योंकि इनकी गुणवत्ता पर भरोसा है और विभाग को छूट भी मिलती है।

इस योजना की खास बात यह है कि पौधों की देखभाल अगले पांच साल तक मनरेगा के तहत ही की जाएगी। झारखंड देश का पहला राज्य है, जहां मनरेगा के तहत लगाए गए पौधों की इतने लंबे समय तक देखरेख की जाएगी।

इस पहल से न केवल लीची की खेती को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि स्थानीय किसानों और श्रमिकों को रोजगार के नए अवसर भी मिलेंगे। यह योजना झारखंड को लीची उत्पादन में भी आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

अनुसूचित जनजाति आयोग ने कहा सूर्या हांसदा की हत्या हुई :दीपक प्रकाश

पत्थर माफिया के इशारें पर पुलिस की है हत्या :भाजपा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष व राज्यसभा सदस्य दीपक प्रकाश ने मंगलवार को प्रदेश भाजपा कार्यालय में प्रेसवार्ता कर सूर्या हांसदा एनकाउंटर मामले को फर्जी बताते हुए कहा कि यह पत्थर माफिया, दलालों व बिचौलियों के इशारे पर पुलिस द्वारा की गई हत्या है। राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की जांच रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि रिपोर्ट में साफ है कि सूर्या की हत्या कराई गई

उन्होंने 16 अगस्त को आयोग में लिखित शिकायत दर्ज की थी, जिस पर संज्ञान लेते हुए आयोग ने जांच शुरू की। आयोग के सदस्य निरुपम चकमा, आशा लकड़ा सहित छह अधिकारियों ने जांच की। 12 सितंबर को आयोग ने गृह मंत्रालय को पत्र लिखकर सीबीआई जांच की अनुशंसा की और उन्हें प्रतिलिपि भेजी।

रिपोर्ट में कहा गया कि सूर्या को नौ अगस्त को गिरफ्तार दिखाया गया, लेकिन 24 घंटे से अधिक कस्टडी में रखा गया बिना कोर्ट में पेश किए, जो सीआरपीसी का उल्लंघन है। मुठभेड़ स्थल पर जंगल न होने पर भी दो घंटे की मुठभेड़ दिखाना, मीडिया को दूर रखना, खून के धब्बे न होना जैसे तथ्य फर्जीवाड़े को उजागर करते हैं।

प्रकाश ने रिपोर्ट के फोटो दिखाते हुए कहा कि गोली के घावों पर काले धब्बे व जलने के निशान मुठभेड़ की कहानी को मनगढ़ंत साबित करते हैं। सीआइडी जांच से लीपापोती होगी, इसलिए सीबीआइ जांच अनिवार्य है। उन्होंने राज्य सरकार से सीबीआइ जांच की अनुशंसा, सूर्या के परिवार को सुरक्षा व आरोपी पुलिस अधिकारियों का तत्काल स्थानांतरण की मांग की।

हेमंत शीघ्र करेगें अपना कैबिनेट विस्तार , सोमेश सोरेन हो सकते हैं मंत्री

स्व० मंत्री रामदास के घाटशिला सीट से उनके बेटे को उतारने की तैयारी में जुटा जेएमएम

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची: झारखंड में हेमंत सोरेन सरकार जल्द ही अपने मंत्रिमंडल का विस्तार करने की तैयारी करने जा रहे हैं . सूत्रों के अनुसार यह विस्तार पितृपक्ष के बाद किया जाएगा. इस विस्तार में सबसे बड़ा और अहम नाम दिवंगत मंत्री रामदास सोरेन के बेटे सोमेश सोरेन का हो सकता है. उन्हें मंत्री बनाकर घाटशिला विधानसभा उपचुनाव में उतारने की रणनीति पर काम चल रहा है.

झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के लिए यह कोई नई रणनीति नहीं है. पार्टी पहले भी इस फॉर्मूले का सफल प्रयोग कर चुकी है. पूर्व मंत्री हाजी हुसैन अंसारी के निधन के बाद उनके बेटे हफीजुल हसन को मंत्री बनाया गया था और फिर उन्होंने मधुपुर उपचुनाव में जीत हासिल की थी. इसी तरह दिवंगत शिक्षा मंत्री जगन्नाथ महतो के निधन के बाद उनकी पत्नी बेबी देवी को मंत्री पद दिया गया. जिन्होंने डुमरी उपचुनाव में जीत दर्ज की. घाटशिला से विधायक रहे रामदास सोरेन के निधन के बाद यह सीट खाली हो गई है और अब पार्टी उनके बेटे सोमेश को मंत्री बनाकर उसी फॉर्मूले को दोहराने की तैयारी में।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023